हिन्दुओं के

व्रत और त्योहार

लेखक

कुंवर कन्हैयाजू

१९५६

हिन्दी प्रकाशन मंदिर

बृहस्पति उपाध्याय
हिन्दी प्रकाशन मन्दिर
इलाहाबाद

छठी बार १९५५
मूल्य
दो रुपये बारह आना

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

दो शब्द

प्रत्यक जाति म व्रत और त्योहार का महत्व है। व्रत और त्याहार सभ्यता और सस्कृति के प्रतीक तथा जाताय जीवन के चिह्न ह। व शुभ कर्मों के अनुष्ठान मनावृत्तियो के सस्कार तथा जावन निमाण म सहायता प्रदान करत ह। उनसे ~ ।। स्मृति बनी रहती हे और जीवन म स्फर्ति चेतना और शक्ति आती हे। प्रतिदिन एक ही प्रकार का जीवन यतीत करन से शरीर मन हृदय और मस्तिष्क म एक प्रकार की जो निष्क्रियता मा आ जाती है उसे दूर करन के लिए व्रत और त्योहार मनान से बढकर अय कोई उपाय नही हे।

एक समय था जब हमारा जातीय जीवन ससार म आदश था। हम नित्य क न काइ त्मव कोई न कोई त्योहार मनाया करत थ। उनसे हमारी सम ा ना क पता चलता था परन्तु आज हम उन्ह भूले हुए ह। आज हम यह मान बैठ ह कि व्रत और त्याहार लडको के खल ह और उनका राष्ट्रीय जीवन म काई महत्व नहा है। ऐसा साचना हमारे लिए घातक है। व्रत और त्योहारो की उपेक्षा करन से हमारा जीवन शुष्क नीरस और निष्क्रिय हो जायगा। हम आग बढने मे असमथ हो जायग। इसलिए हम अपन पर्वों त्योहारो और व्रतो का उमग और उत्साह के साथ मनान का आयोजन करना चाहिए।

व्रत और त्याहार के प्रस्तुत सस्करण मे उक्त दृष्टिकोण का सफल निर्वाह किया गया है। इसमे वर्षभर के प्राय उच सभी व्रतो त्योहारो र । । र न। स्थान दिया गया ह जो प्राचीन काल से हि जाति म प्रचलित एव माय रह ह। प्रत्यक त्योहार की उत्पत्ति उसक मा ा का वि मक महत्व और उससे सम्बद्ध कथा पर धार्मिक और राष्टीय ष्टिकाण से विचार किया गया है। इसके अतिरिक्त पहले सस्करण की लम्बी लम्बो कथाए कुछ सक्षिप्त कर दा गयी ह और मकर सक्राति से नव-सवत्सर तक के प्राय सभी प्रचलित व्रत इसम तिथि क्रम के अनुसार सम्मिलित कर दिए गए ह। भाषा म भी पर्याप्त सशोधन कर दिया गया है। इस प्रकार पहले की अपेक्षा यह सस्करण अधिक उपयोगी बनान की पूरी चेष्टा की गयी है। एसी दशा म मुझ पूण विश्वास है कि न ाज म इसका यथष्ट आदर और प्रचार होगा और उसम एक बार फिर अपन व्रतो और त्योहारो को मनाने की भावना जाग ठेगी।

—प्रकाशक

विषय-सूची

हिन्दुओं के

व्रत और त्योहार

१ मकर सक्रान्ति

भारतीय ज्योतिष मे बारह राशिया मानी गयी ह। उनमे से एक का नाम मकर राशि ह। मकर राशि म सूय के प्रवेश करने को 'मकर सक्राति' कहते ह। यो तो यह सक्राति प्रत्येक मास मे होती रहती ह, पर मकर और कक राशियो का सक्रमण विशेष महत्व का होता ह। ये दोनो सक्रमण छ छ मास के अतर से होते हैं। मकर सक्राति सूय के उत्तरायण होने और कक-सक्राति सूय के दक्षिणायन होने को कहते ह। उत्तरायण काल मे सूय उत्तर की ओर और दक्षिणायन काल मे सूय दक्षिण की ओर झुकता हुआ दीख पडता ह। उत्तरायण की दिशा मे दिन बडा और रात छोटी होती ह। इसके विपरीत दक्षिणायन की अवस्था मे रात बडी और दिन छोटा होता ह।

मकर सक्रान्ति हिदुओ का बडा दिन ह। कहते ह, यशोदाजी ने इस दिन कृष्ण के जन्म के लिए व्रत किया था। मकर सक्रान्ति व्रत का विधान अत्यत सरल ह। पौराणिक ग्रथो मे लिखा ह कि मकर सक्राति के पहले दिन एक समय भोजन करना चाहिए तथा मकर सक्राति के दिन प्रातःकाल तिलो से तैलाभ्यङ्ग स्नान करना चाहिए। इस दिन तिल का विशेष महत्व है। तिल के तेल से स्नान करना तिल का उबटन लगाना तिल से

हवन करना तिल का जल पीना, तिल का भोजन करना और तिल का दान देना——ये छ कम तिल से ही होने का विधान ह। इसके अतिरिक्त च दन से अष्टदल का कमल बनाकर उसमे पच भगवान का आवाहन करना चाहिए और उसका यथाविधि पूजन करके सब सामान ब्राह्मण को दे देना चाहिए। इस मास मे घी और कम्बल देने का विशेष महात्म्य ह।

मकर-सक्राति को उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो मे 'खिचडी' कहते ह। इस दिन लोग खिचडी ही खाते ह और खिचडी तथा तिलवा का दान करते ह। महाराष्ट्र मे विवाहित लडकियाँ पहली सक्रान्ति को तेल कपास नमक आदि सौभाग्यवती स्त्रियो को देती ह। सौभाग्यवती स्त्रिया अपनी सहेलियो को हलदी रोरी तिल और गुड देती हैं। बगाल मे भी स्नान और तिल-दान की प्रथा है। पजाब म यह त्योहार 'लोहडी' के रूप मे मनाया जाता ह। इस अवसर पर होली भी जलाई जाती है। गगा सागर मे इसी तिथि पर बडा भारी मेला लगता ह।

२ मौनी अमावस्या

माघ मास की अमावस्या को मौनी अमावस्या कहते ह। इस दिन मौन रहकर ही गगा स्नान का विधान ह। यदि मौनी अमावस्या के दिन सोमवार हो तो उसका पुण्य और भी अधिक होता ह। माघ मास मे त्रिवेणी स्नान का बहुत ही बडा महात्म्य ह। बहुत से भक्त नर-नारी माघ के पूरे महीने तक प्रयाग में सगम के किनारे कुटिया बनाकर रहते ह और 'कल्पवास' करते हैं। इस महीने मे तीसो दिन व्रत रखने का भी विधान ह। कुछ लोग एक ही समय फल अथवा अन्न खाकर रहते ह। चटाई पर सोना तेल न लगाना किसी प्रकार का श्रृङ्गार न करना तथा सयम पूवक रहना परम आवश्यक ह। माघ मास के स्नान का

सब से अधिक महत्वपूण पव मोनी अमावस्या ही ह। इस पव पर सगम मे नहाना विशेष फलदायक ह। माघी पूर्णिमा के दिन भी स्नान करने का यही महत्व ह।

३ वसन्त-पंचमी

माघ मास की शुक्ल पक्ष की पचमी को वसन्त ऋतु के आगमन का सूचक माना जाता ह। हमारे धार्मिक ग्रथो मे वसन्त ऋतुराज अर्थात सब ऋतुओ का राजा माना गया है। इस ऋतु मे वन बाटिकाओ मे एक अपूव लावण्य तथा पक्षियो के कलरव और भौरो की गुजार मे एक मनोमुग्धकारी स्वर ध्वनित होने लगता ह। खेतो मे सरसो के फूलो की पीतिमा और अ य शस्यो की हरियाली मन को अपनी ओर खीच लेती ह।

वस त पचमी को विष्णु पूजन का विधान ह। इस दिन पूव विद्धा तिथि ल्नी चाहिए और शरीर मे उबटन तेल आदि लगा कर स्नान करना चाहिए। तदनन्तर उत्तम वस्त्राभूषण धारण कर भगवान विष्णु की पूजा विधिवत् करनी चाहिए। इस दिन पित तपण और ब्राह्मण भोजन का भी विधान ह।

वस त ही के दिन पहले पहल गुलाल उडाइ जाती ह। लोग वसन्ती वस्त्र धारण कर गायन, वाद्य और वन विहार आदि करते ह। इसी दिन वस त के सहचर कामदेव तथा पतिव्रता रत्न रति की भी पूजा का विधान ह। इसी दिन वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की भी पूजा होती ह। ब्रह्मववत पुराण मे लिखा है कि श्रीकृष्ण ने सरस्वती पर प्रसन्न होकर उ हे यह वरदान दिया था। उसमे सरस्वती के पूजन का भी विधान ह। सरस्वती के पूजन के लिए एक दिन पूव नियम पूर्वक रहे फिर दूसरे दिन नित्य कर्मो से निवत्त होकर भक्तिपूवक कलश स्थापन करे। पहले गणेश सूय, विष्णु, शकर आदि की पूजा करके 'सरस्वती' का पूजन करे।

'सरस्वती' के पूजन के पश्चात ही गुलाल उडाने की प्रथा ह। उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलो मे इसी दिन से लोग फाग या होली गाते ह। इस दिन से फागुन की पूर्णिमा तक होली खब गायी जाती ह।

वसन्त धनिको का त्योहार ह, पर किसान भी इसको कम महत्व नही देते। इसी दिन वे नये अन्न मे घी और गुड मिला कर अग्नि तथा देव पितरो को अपण करने के बाद स्वय ग्रहण करते ह। इस प्रकार यह हमारा मामाजिक त्यौहार ह। यह हमारे आनन्दातिरेक का प्रतीक है। इस समय मानव हृदय में उल्लास और उछाह भरा रहता ह। इसलिए इस उत्सव का मनाना हमारे लिए स्वाभाविक ह।

४. शीतलाषष्ठी

माघ शुक्ल षष्ठी को शीतला षष्ठी का व्रत होता ह। पूर्वी जिलो मे इसे 'बसियौरा' कहते ह। इसका उददेश्य सन्तान की कामना ह। इस व्रत को करने के पूव स्नानादि से निवृत्त होकर शीतला देवी का पूजन षोडशोपचार द्रव्य से करना चाहिए और ठडी वस्तुओ का भोग लगाकर बासी प्रसाद ही खाना चाहिए। भोजन करने के पश्चात मत्रो से भगवती शीतला का उद्यापन करना चाहिए। इसकी कथा इस प्रकार ह—

कथा—एक ब्राह्मण ब्राह्मणी के सात पुत्र थे। उनका विवाह हो चुका था, परन्तु किसी को भी सन्तान नही थी। एक दिन एक वद्धा ने ब्राह्मणी को बहुओ से शीतला षष्ठी का व्रत करने का उपदेश दिया। ब्राह्मणी ने श्रद्धापूवक सब बहुओ से यह व्रत कराया। इससे वष भर के भीतर ही सब बहुओ ने पुत्र प्रसव किया। एक बार उसने व्रत विधान की उपेक्षा करके स्वय गरम जल से स्नान किया और ताजा भोजन किया तथा अपनी बहुओ

को भी ऐसा करने का आदेश दिया। उस दिन रात को ब्राह्मणी ने भयकर स्वप्न देखा। वह चौक पडी। उसने उठ कर अपने पति को जगाया, पर वह मर चुके थे। इससे वह चिल्लाने लगी। उठ कर जो पुत्रो और बहुओ को देखा तो उन्हे भी मरा पाया। अब तो वह धाड मार कर रोने लगी। उसका रोना सुन सब पडोसी जाग उठे और उसके पास आये। उन लोगो ने कहा कि भगवती के कोप से ही यह अनिष्ट हुआ ह। इतना सुनते ही वह पागल हो गयी और वन की ओर चली गयी। माग मे उसे एक वद्धा मिली। वह अग्नि की ज्वाला से तडप रही थी। पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसके कारण ही वह दु खी ह। वह वद्धा स्वय शीतला देवी थी। ज्वाला से पीडित भगवती शीतला देवी ने ब्राह्मणी से एक मिटटी के पात्र म दही लाने के लिए कहा। ब्राह्मणी झटपट दही लाइ। उसने भगवती के शरीर पर उसका लेप किया जिससे उनका शरीर शीतल हो गया। इसके पश्चात उन्होने ब्राह्मणी से मतको के माथे पर दही लगाने के लिए कहा। ब्राह्मणी ने घर जाकर तुरन्त सब मतको के माथे पर दही लगाया जिससे सब अगडाइ लेकर उठ खडे हुए।

५ अचला सप्तमी

माघ शुक्ल सप्तमी को अचला सप्तमी का व्रत होता है। इसको सौर सप्तमी भी कहते ह। वतमान समय मे इस व्रत का विशेष महत्व नही है। यह स्त्रियो का व्रत है । भविष्योत्तर पुराण मे इसका उल्लेख मिलता ह। उसमे इसकी कथा इस प्रकार है—

कथा—एक समय महाराज युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से पूछा—"भगवन ! कलियुग मे स्त्री किस व्रत के प्रभाव से अच्छे पुत्रवाली हो सकती है?" इसके उत्तर मे श्रीकृष्ण ने कहा कि

प्राचीनकाल मे इन्दुमती नाम की एक वेश्या महाराजा समर के पास रहती थी। उसने किसी समय वशिष्ठजी के पास जाकर कहा— भगवन ! मुझसे आज तक कोइ धार्मिक काम नही हुआ। इससे मुझे सदव इस बात की चिन्ता रहती ह कि मुझको निर्वाण की प्राप्ति किस प्रकार होगी ? 'वेश्या के ऐसे विनीत वचन सुन कर वशिष्ठजी ने कहा कि स्त्रियो को मुक्ति सौभाग्य और सौदय देने वाला अचला सप्तमी से बढकर अन्य कोइ व्रत नही ह, अत तुम माघ शुक्ल सप्तमी के दिन अचला सप्तमी का व्रत करो। इससे तुम्हारा अवश्य ही कल्याण होगा। स्त्रियो के लिए अचला सप्तमी का व्रत अत्यन्त महत्त्वपूण ह ।

इन्दुमती ने जब विधिपूवक इस व्रत को किया तब इसके प्रभाव से वह अपने शरीर को छोडकर स्वगलोक मे गइ और वहा सपूण अप्सराओ की नायिका हुइ।

वशिष्ठजी ने इन्दुमती को जो विधि बताइ थी, वह इस प्रकार ह—व्रत रखने वाली स्त्री छठ के दिन केवल एक बार भोजन करे और उसी दिन विधिवत सूय भगवान का पूजन भी करे। सप्तमी के दिन प्रात काल किसी गहरे जलाशय पर जाकर मस्तक पर दीप धारण करे और सूय की स्तुनि करे। स्नान करने के बाद सूय भगवान की अष्टदली प्रतिमा बनाकर बीच मे शिव और पावती को स्थापित करे और फिर यथाविधि उनका पूजन करने के बाद ताबे के पात्र मे चावल भरकर ब्राह्मण को दान करे। सूय का विसजन करके घर आये और ब्राह्मण भोजन कराकर आप भी भोजन करे।

६ भीष्माष्टमी

माघ शुक्ल अष्टमी को भीष्माष्टमी कहते ह। इसी दिन बाल-ब्रह्मचारी भीष्म पितामह की मत्यु हुइ थी। इसलिए उनकी

स्मति मे यह त्योहार मनाया जाता ह। कहते ह कि जो मनुष्य इस दिन भीष्म पितामह के निमित्त निर्गो म्हिन तपण और श्राद्ध करता ह, वह शुभ सतान प्राप्त करता ह। पद्म पुराण मे तो यहाँ तक उल्लेख ह कि जीवित पितावाले पुत्र को भी इस तिथि पर भीष्म के लिए तपण करना चाहिए। इसकी कथा इस प्रकार ह—

कथा—कौरव और पाण्डव वश के मूल पुरुष चद्रवशी राजा शातनु की पटरानी का नाम गगा था। गगा के पुत्र का नाम भीष्म था। एक दिन राजा शातनु शिकार खेलने के लिए गगा नदी के उस पार बडी दूर तक चले गये। जब वह आखेट से लौटकर गगा के किनारे आये तब हरिदास केवट की कया मत्स्यगधा ने राजा को नाव मे बिठाकर गगा पार किया। मत्स्यगधा केवट की कया नही थी। वह किसी क्षत्रिय की कन्या थी और केव- के घर लालित पालित हुइ थी। राजा उसे देखते ही उस पर मोहित हो गया और केवट से उसका अपने साथ विवाह करने का प्रस्ताव किया। राजा के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए केवट ने उत्तर दिया—"राजन। आपका ज्येष्ठ पुत्र भीष्म विद्यमान ह। ऐसी दशा मे मेरी कया का पुत्र राज्य का अधिकारी नही हो सकता। अत म आपको कया दान करना उचित नही समझता। केवट की बाते सुनकर राजा शातनु घर आये और उदास रहन लगे। राजा को खिन्न देखकर एक दिन राजकुमार भीष्म ने पिता से खिन्नता का कारण पूछा। तब राजा ने समस्त वृत्ात भीष्म को सुना दिया। कुमार भीष्म अपने पिता की चिता की निवत्ति के लिए स्वय हरिदास केवट के घर गये और गगाजी मे उतर कर आजीवन अविवाहित रहन की प्रतिज्ञा की। इस घटना के पूव उनका नाम गागेय था परन्तु भीष्म प्रतिज्ञा करने के कारण उसी दिन से वह भीष्म नाम से प्रसिद्ध हुए। भीष्म प्रतिज्ञा का परिणाम यह हुआ कि हरिदास केवट ने अपनी कया मत्स्यगधा का विवाह

राजा शान्तनु के साथ कर दिया। राजा अपने पुत्र की पित भक्ति से परम सन्तुष्ट हुए और वरदान दिया कि तुम्हारी इच्छा के बिना तुम्हारी मत्यु न होगी। इस वरदान को पाकर भीष्म पितामह बहुत प्रसन्न हुए। उसी दिन से भीष्म ने मरणपयन्त अपने प्रण को निबाहा।

भीष्म पितामह दुर्योधन के पास रहते थे। इसलिए कौरव-पाण्डव-युद्ध मे उन्होने दुर्योधन का साथ नही छोडा। जिस समय दुर्योधन की लगातार हार होने लगी उस समय उसके दुखोद्गारो को सुनकर एक दिन उन्होने कृष्ण को भी हथियार उठाने के लिए विवश करने की प्रतिज्ञा की। उस दिन अत्यन्त भयकर युद्ध हुआ जिसे देखकर अजुन ने श्रीकृष्ण से स्पष्ट शब्दो मे कहा कि यदि भीष्म का वेग न रोका जायगा, तो पाण्डव कुल का सवनाश हुए बिना न रहेगा। यह सुनकर श्रीकृष्ण ने भी अपने मन मे निश्चय कर लिया कि बाल ब्रह्मचारी, पित भक्त और अपनी इच्छा से मत्यु को प्राप्त होने वाले भीष्म पर विजय प्राप्त करने का इसके सिवा अन्य कोइ उपाय नही है कि म स्वय प्रतिज्ञा भ्रष्ट होकर भीष्म का प्रण पालन करूँ। यह निश्चय करके उन्होने तुरत सुदर्शन चक्र हाथ मे उठा लिया।

श्रीकृष्ण भगवान की प्रतिज्ञा भग होते ही भीष्म ने युद्ध बन्द कर दिया और स्वय वाणो की सेज पर लेट गये। कुछ काल मे जब महा भारत का युद्ध समाप्त होने पर युधिष्ठिर राजा हो गये और सूय दक्षिणायन से उत्तरायण हुए, तब भीष्म ने अपनी इच्छा से शरीर त्याग किया। जिस दिन भीष्म का देहावसान हुआ उस दिन माघ शुक्ल अष्टमी थी और आज तक उन्ही की स्मति मे यह व्रत और उत्सव मनाया जाता है।

७. महाशिव रात्रि

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी को शिवरात्रि का व्रत होता ह। यही शिवजी का अत्यत महत्वपूण व्रत ह और इसीलिए इसे महाशिव रात्रि भी कहते हं। सपूण भारत मे इसका प्रचार है। कही कही यह फाल्गुन कृष्ण चतुदशी को भी मनाया जाता है। इस व्रत के विधान में प्रात काल स्नानादि से निवत्त होकर अनशन व्रत रखा जाता ह और मिट्टी के बतन मे जल भरकर ऊपर से बेलपत्र आकधतूरे के फूल, अक्षत आदि डालकर शिवजी को चढाया जाता ह। यदि आस पास शिव मूर्ति न हो तो शुद्ध गीली मिटटी से ही शिवलिग बनाकर उसे पूजने का विधान है रात को जागरण करके शिव पुराण का पाठ सुनना सुनाना प्रत्येक व्रती का धम माना जाता है। दूसरे दिन प्रात काल जौ, तिल, खीर तथा बेलपत्र का हवन करके व्रत समाप्त किया जाता ह। इसकी कथा लिग पुराण मे इस प्रकार ह—

कथा—एक बार कलाश पर बठी हुइ पावती ने शिवजी से पूछा कि ऐसा कौन सा व्रत है जिसके करने से मनुष्य आपके सायुज्य को प्राप्त हो जाता है? यह सुनकर महादेवजी ने कहा कि फाल्गुन कृष्ण चतुदशी को व्रत रहकर प्रदोष काल मे मेरा पूजन करके रात्रि को जो मनुष्य जागरण करता ह, वह अनायास ही मेरे सायुज्य को प्राप्त हो जाता है। इतना कहने के पश्चात उन्होने पावती जी को निम्न कथा सुनाइ—

प्रत्यत देश मे एक बहेलिया रहता था। वह प्रतिदिन जीवो को मार कर अपने कुटुम्ब का पालन किया करता था। समय पर रुपया न दे सकने के कारण एक दिन साहूकार ने उसे एक शिव-मठ मे बन्द कर दिया। उस दिन फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी थी, इसलिए मन्दिर मे धम और व्रत सम्बन्धी कथा वार्ता हो रही थी। बहेलिया ध्यान देकर कथा वार्ता सुनता रहा। उसने चतुदशी

के दिन होने वाले शिवरात्रि व्रत की कथा भी सुनी। उस दिन सायकाल साहूकार ने उसे छोड दिया और अगले दिन रुपया अदा करने का उससे वचन ले लिया। चतुर्दशी को प्रातःकाल नियमानुसार बहेलिया अपने नगर से दक्षिण दिशा की ओर एक गहन वन मे पशु मारने के लिए चला गया। परन्तु उस दिन कोई पशु उसे नही मिला। तब उसने दिन भर की भूख प्यास से व्याकुल होकर एक जलाशय पर रात बिताने का निश्चय किया। एक जलाशय देखकर उसके किनारे वह अपने छिपने के लिए जगह बनाने लगा। जलाशय के समीप ही एक बेल का पेड था और उसी के नीचे एक शिव लिंग स्थापित था। बहेलिया उस पेड पर चढ कर बैठ गया और अपनी सुविधा योग्य स्थान बनाने के लिए बेल के पत्ते तोड तोड कर नीचे डालने लगा। नीचे गिरे हुए विल्व पत्रो से शिव लिंग ढक गया। बहेलिया दिन भर भूखा रहने के कारण एक प्रकार से शिवरात्रि का व्रत कर चुका था, और शिवजी पर बेलपत्र भी चढा चुका था।

बहेलिया को पेड पर बैठे बैठे जब एक पहर रात बीत गयी, तब एक गर्भवती हिरणी उसको सामने से आती हुई दीख पड़ी। उसे देखते ही उसने उसे लक्ष्य करके धनुष पर बाण चढ़ाया। हिरणी भयभीत हो उठी और बोली—"मैं गर्भिणी हूँ। मेरा प्रसूत काल समीप है। यदि आप मुझे इस समय छोड देंगे, तो मैं प्रसूत बालक को जन्म देकर तुरंत यहाँ लौट आऊंगी। यदि मैं तुरन्त आपके पास न आऊं तो कृतघ्न को जो पाप लगता है, वह मुझको लगे।" हिरणी का इतना कहना था कि बहेलिया ने धनुष पर से बाण उतार लिया और हिरणी को वापस आने की प्रतिज्ञा पर छोड दिया। उस हिरणी के चले जाने पर बहेलिया शिव शिव करता हुआ किसी अन्य जानवर के आने की प्रतीक्षा करने लगा। आधी रात हो जाने पर एक दूसरी हिरणी सामने से आती हुई उसे दिखाई दी। बहेलिया ने फिर धनुष पर बाण चढाया। हिरणी

निवृत्त ऋतु वाली थी। पति से उसका संयोग नहीं हुआ था। इसलिए उसने भी उससे प्रार्थना की और दूसरे दिन आने का वचन दिया। बहेलिया मान गया। हिरणी कूदती-फाँदती आगे निकल गयी।

दूसरी हिरणी के चले जाने पर रात्रि के तीसरे पहर में बहेलिया ने कुछ और बेलपत्र तोड़ कर नीचे डाले, जो शिवजी के शीश पर चढ़ गये। इसके बाद वह शिव-शिव कहता हुआ किसी अन्य जन्तु के आने की प्रतीक्षा करने लगा। तीसरा पहर व्यतीत होते-होते एक तीसरी हिरणी तीन-चार छोटे-छोटे बच्चों को लिए हुए उसी जलाशय पर आ पहुँची। बहेलिया उसे देखते ही प्रसन्न हो गया और अपने धनुष पर बाण चढ़ाने लगा। हिरणी काँप उठी और बिनीत स्वर में अनाथ बच्चों की दुहाई देने लगी। बहेलिया द्रवीभूत हो गया। उसने उससे दूसरे दिन आने का वचन ले कर उसे भी छोड़ दिया।

प्रातःकाल से कुछ ही पूर्व एक बड़ा और बलिष्ठ मृग उसी जलाशय पर आ पहुँचा। उसे देखते ही बहेलिया ने फिर धनुष पर बाण चढ़ाया। यह देखकर हिरण बड़ी सरलता से बोला "हे व्याध ! यदि मेरे प्रथम आने वाली तीनों हिरणियों को आपने मार डाला है तो कृपाकर आप मुझे भी शीघ्र ही मार डालिए, जिससे उन मृत हिरणियों का दुःख मुझको न हो।" बहेलिया ने हिरण की प्रेम एवं पांडित्यपूर्ण वाणी सुनकर रात की हिरणियों वाली सब घटना कह सुनाई, जिसे सुनकर हिरण बोला—'आप व्याध हैं, मैं हिरण हूँ। अतः मेरा आपका सम्बन्ध अवश्य है, परन्तु वे तीनों हिरणियाँ मेरी भार्या थीं और वे मेरी ही खोज में फिर रही थीं। यदि आप मुझको मार डालेंगे, तो वे जिस उद्‌देश्य से आपसे प्रतिज्ञा करके गई हैं, वह सब विफल हो जायगा। अतः जिस धार्मिक भाव से आपने उनकी शपथ को सत्य मानकर उनको छोड़ दिया है, उसी भाव से थोड़ी

देर के लिए मुझको भी आज्ञा दीजिए। मै उन सब स मिलकर और उन सब को साथ लेकर इसी स्थान पर चला आऊगा।" शिवरात्रि-व्रत के प्रभाव से बहेलिया का हृदय विशेष कोमल और शद्ध हो गया था अत उसने हिरण को भी चले जाने दिया। हिरण के चले जाने पर सबेरा होते हीं वह बेल के वक्ष से नीचे उतरा। उतरने मे कुछ और भी विल्व पत्र शिवजी पर आप ही आप चढ गये जिससे प्रसन्न हाकर शिवजी ने उमके हृदय का ऐमा निमल और पवित्र कर दिया कि वह अपने पूवहृत हिसात्मक कर्मो पर पश्चात्ताप करने लगा। थोडी देर बाद हिरण अपनी तीनो हिरणियो के साथ वहा आ पहुँचा, परतु शुद्धात्मा बहेलिया ने उन्हे मारने से इकार कर दिया। ग प्रग अहिसा की चरम सीमा पर पहुँचे हुए बहलिया को देखकर शिवजी ने एक विमान व्याध के लिए और एक हिरण हिरणियो के लिए भेजा और उन सब को अपने लोक मे बुला लिया। यह है महाशिव रात्रि के अनायास व्रत का प्रभाव! जा लोग इच्छापूवक सायुज्यता के हेतु इस व्रत को करते ह, वे निस्सन्देह स्वगलोक को प्राप्त करते ह। महाशिव रात्रि भगवान शकर का परम पवित्र दिन है। यह अपनी आत्मा को पवित्र करने का शुभ पव ह।

८ होलिका दहन

होली अथवा होलिकोत्सव हमारा सामाजिक त्योहार है। इसे स्त्री, पुरुष, बालक वद्ध, सब बडे उत्साह से मनाते ह। इसके समान आनद और प्रसन्नता देने वाला कोइ दूसरा त्योहार नही ह। इस त्योहार मे न तो वण-भेद है और न जाति भेद। यह हमारा राष्ट्रीय त्योहार है। यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस अवसर पर लकडी और घास फूस का बडा भारी ढेर लगा कर वेद-मत्रो से विस्तार के साथ होलिका दहन किया

जाता ह। इसी दिन हर महीने की पूर्णिमा के हिसाब से इष्टि (छोटा-सा यज्ञ) भी होता ह। इस कारण भद्रा-रहित समय मे होलिका दहन होकर इष्टि यज्ञ भी हो जाता ह। पूजन के बाद होली की भस्म शरीर पर लगाइ जाती ह।

होली के लिए प्रदोष अर्थात मायकाल-व्यापिनी पूर्णिमा लेनी चाहिए और उसी रात्रि मे भद्रा रहित समय मे होली प्रज्वलित करनी चाहिए। भद्रा मे होली को प्रज्वलित करने से राष्ट्र मे विद्रोह होता ह और नगर मे शान्ति नही रहती। प्रतिपदा चतुदशी भद्रा और दिन मे होली जलाना सवथा त्याज्य ह। यदि पहले दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्त के पहले पूर्णिमा समाप्त होती हो तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके सूर्योदय होने के पूव होली जला देना चाहिए। ब्रह्म पुराण मे लिखा है कि फाल्गुन की पूर्णिमा के दिन जो मनुष्य चित्त को एकाग्र करके हिडोले में झूलते हुए श्री गोविन्द पुरुषोत्तम का दशन करता है, वह निश्चय ही वकुण्ठ जाता ह। यह दोलोत्सव होली होने के दूसरे दिन होता ह। यदि पूर्णिमा की पिछली रात्रि मे होली जलाई जाय, तो यह उत्सव प्रतिपदा को होता ह और इसी दिन अबीर-गुलाल की फाग होती ह। फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन चतुदश मनुओ मे से एक मनु का जन्म भी ह। इस कारण यह मन्वादि तिथि भी ह। अत उसके उपलक्ष्य में भी उत्सव मनाया जाता ह। सवत के आरम्भ एव वसन्तागमन के निमित्त जो यज्ञ किया जाता है, और उसके द्वारा अग्नि के अधिदेव स्वरूप का जो पूजन होता है वही पूजन अनेक शास्त्रकारो ने इस होलिका का माना ह। इसी कारण कोइ-कोइ होलिका-दहन को सवत् के आरभ मे अग्नि स्वरूप परमात्मा का पूजन मानते हैं।

होलिका-दहन का स्थान शुद्ध होना चाहिए और काष्ठ पुआल, उपले आदि का सग्रह करके उसमे आग लगाना चाहिए।

साय-काल सब पुरवासियो के साथ उक्त स्थान पर जाना चाहिए और पूव या उत्तर की ओर मुख करके बठना चाहिए। इसके पश्चात होलिका पूजन का सकल्प करके पूर्णिमा तिथि के होने पर किसी वत्तिका के घर से बालको-द्वारा आग मँगाकर होली जलानी चाहिए। इस के बाद गेहूँ चने और जौ की बाल को होली की ज्वाला मे भनना चाहिए और यज्ञ सिद्ध नवान्न तथा होली का भस्म लेकर घर आना चाहिए। घर के आगन मे गोबर का चौका लगाकर अन्नादि का स्थापन करना चाहिए।

कथा—भविष्य पुराण मे नारदजी ने राजा युधिष्ठिर से होली के सम्बन्ध मे जो कथा कही ह वह इस प्रकार है—

नारदजी बोले—"हे नराधिप! फाल्गुन की पूर्णिमा को सब मनुष्यो के लिए अभय दान देना चाहिए जिससे समस्त प्रजा भय रहित होकर हँसे और क्रीडा करे। डडे और लाठी लेकर बालक शूर वीरो की तरह गाव के बाहर जाकर होली के लिए लकडी और कडो का सचय करे। उस होलिका मे विधिवत हवन किया जाय। अट्टहास किलकिलाहट और मन्त्रोच्चारण से पापात्मा राक्षसी नष्ट हो जाती ह। इस व्रत की व्याख्या से हिरण्य-कश्यपु की भगिनी अर्थात प्रह्लाद की फुआ जो प्रह्लाद को लेकर अग्नि मे बठी थी प्रति वष होलिका नाम से आज तक जलाइ जाती है।

हे राजन! पुराणान्तर मे ऐसी व्याख्या ह कि ढुढला नामक राक्षसी ने शिव-पावती का तप करके यह वरदान पाया था कि जिस किसी बालक को वह पाये खाती जाय। परन्तु वरदान देते समय शिवजी ने यह युक्ति रख दी थी कि जो बालक वीभत्स आचरण एव राक्षसी वत्ति मे निलज्जता पूवक फिरते हुए पाये जायँगे उनको वह न खा सकेगी। अत उस राक्षसी से बचने के लिए बालक नाना प्रकार के वीभत्स और निलज्ज स्वाग बनाते और अट-सट बकते ह।

हे राजन! इस हवन से सपूण अनिष्टो का नाश होता है और यही होलिका उ मत्र है। होली की ज्वाला की तीन परिक्रमा करके फिर हास परिहास करना चाहिए।"

६. भैया-दूज

होलिका दहन के बाद चैत्र बदी द्वितीया और दीवाली के बाद कार्तिक सदी द्वितीया, इन दोनो तिथियो को भैया दूज कहते ह, क्योकि साल मे दो बार इ ही दोनो पर्वो पर बहिन भाइयो को आमन्त्रित करती ह।

भया दूज के दिन मध्याह्न के पूव ही पूजन होता ह। जो स्त्रिया बाहर नही निकल सकती, वे अपने घर के द्वार के पास भाई भौजाइ की प्रतिमा-सूचक गेरू से दो पुतलिया लिखती ह और रोली-अक्षत से उनकी पूजा करके पकवान का भोग लगाती ह। इसके पश्चात द्वार की पूजा होती ह। मकान के प्रवेश द्वार की देहली के नीचे बाहरी ओर गोबर से चौकोर वेदी बनाइ जाती ह। गोबर की चार पुतलिया उसके चारो कोनो पर और एक पुतली बीच मे रखी जाती ह। गहस्थी सम्ब धी और बहुत सी सामग्री जसे चल्हा चक्की, हाडी इत्यादि गोबर की बनाकर उसी मे इधर-उधर सजाइ जाती ह। फिर द्वार के पास भाइ-भौजाइ की प्रतिमाएँ लिखी जाती ह। पहले रोली, अक्षत, धूप दीप नैवेद्यादि से वेदी की पूजा करके, भाइ भौजाइ की पूजा की जाती है और कहानी कही जाती है। कहानी पूरी होते ही स्त्रिया मूसल चला-चला कर कहती ह—जो कोइ हमारे भाइ को देख कर जले-बले उसका मुह इस तरह मसल से तोडू फोडू।

इसके बाद जिन स्त्रियो के भाइ निकट होते हैं, वे उनको भोजन कराती ह। बहन भाइ का टीका करती है और भाइ बहन के चरण छूकर जो कुछ देना चाहता है, देता ह। फाग की दूज

को भाइ का टीका गुलाल से किया जाता है और दीवाली की दूज को हल्दी का टीका किया जाता ह।

कथा—सात बहनो का एक दुलारा भाइ था। वह अपने मा-बाप का इकलौता बेटा और सात बहनो का छोटा भाइ होने के कारण बडे ही लाड प्यार से पला था। कभी किसी ने उसे भूल कर भी दुवचन नही कहा था। जब वह बडा हुआ, तब उसकी सगाइ हो गइ। लग्न का समय पास आने पर उसकी माता ने उससे अपनी बहनो को बुला लाने के लिए कहा।

उसकी बडी बहने बहुत दूर दूर थी। वे समय पर नही आ सकती थी। सब से छोटी बहन जो पास ही थी उसको लाने के लिए वह उसके घर गया।

जिस दिन वह अपनी बहन के घर पहुचा उस दिन भाइ दूज थी। बहन दरवाजे के बाहर दूज की पूजा कर रही थी। जब बहन पूजा कर चुकी तब उसने भाइ को बुलाकर उसका आदर-सत्कार किया। भाइ को ठहरा कर वह पडोस की स्त्रियो से पूछने दौडी गइ कि अपने सब से प्यारे भाइ को क्या खिलाना चाहिए। स्त्रियो ने कह दिया कि घी मे चावल पका कर खिलाना चाहिए। वह घी मे चावल पकाने लगी पर चावल पके नही जल कर कोयले हो गये। तब उसने दूध मे चावल पकाकर खीर बनाइ, पूडियाँ बनाइ और भाइ को भोजन कराया। भोजन करने के बाद भाइ ने कहा— मेरा विवाह ह। इसलिए म तुमको बिदा कराने आया हू। तुम मेरे साथ चलो। इस पर बहन ने जवाब दिया— अभी तुम आराम करो। म तुमको रास्ते के लिए खाना बना देती हूँ। चलो, मैं पीछे चली आऊँगी।"

बहन रात्रि को अधेरे मे आटा पीसने लगी। उसमे वह धोखे से सप की हडिडयो का ढाचा पीस गइ। दूसरे दिन उसने उसी आटे की पूडियाँ बनाइ और जब भाइ चलने लगा, तब रात की बनाइ

पूडिया उसने उसे रास्ते के लिए देकर विदा कर दिया। भाइ के चले जाने पर जब उसने एक पूडी कुत्ते को दी तब कुत्ता उसे खाते ही मर गया। तब बहन सब काम छोडकर भाइ के पीछे पीछे दौडी। कुछ दूर जाकर उसने देखा कि भाइ एक वक्ष के नीचे पडा सो रहा है और जो खाना उसने उसे दिया था वह वृक्ष की डाल से टँगा हुआ है। उसने तुरन्त उस भोजन को पथ्वी मे गाड दिया। जब भाइ सोकर उठा तब बहन ने अपने पास से उसे खाने को दिया। खाना खाकर भाइ ने पानी मागा।

बहन अपन भाइ के लिए पानी लाने चली गइ। वह इधर-उधर जलाशय खोजती हुइ एक बावली पर पहुची। वहा उसने देखा कि एक बढइ साही के काटे बटोर रहा ह। यह देखकर उसने उस बढइ से उसका रहस्य पूछा। बढइ ने कहा कि यह सात बहनो के भाइ की अलाय-बलाय ह। यदि इन कॉटो को ले जाकर गालिया देते हुए उन्ह उसके मुख मे दे देगा, तो वह सब बलाओ से बच जायगा अन्यथा उसकी अकाल मृत्यु हो जायगी। जहा वह व्याहने जायगा, वहॉ का द्वार फिसल कर उस पर गिर पडेगा। यदि कोइ बरात आने के दिन द्वार पर सोने की ध्वजा चढा देगा, तो द्वार नही गिरेगा। दूसरी विपत्ति उसकी भावरो के समय ह। ठीक भावरो के समय एक सिह आएगा और उसे उठा ले जायगा। यदि कोइ हरे जौ का पूला उसके सामने डाल देगा और एक कॉंटा मडप मे खोस देगा तो सिह भाग जायगा।

बढइ की बाते सुनकर बहन ने कहा कि जिसके लिए तुम यह सब कर रहे हो, वह मेरा ही छोटा भाइ है। यदि तुम ये कॉटे मुझे दे दो, तो म स्वय अपने भाई की रक्षा के लिए उपाय करूँगी।

बढइ ने तीन कॉंटे उसे दे दिये। कॉटे पाते ही वह गालियॉ देती हुइ अपने भाइ के पास गइ और एक कॉटा उसने उसके मुँह मे छुआ दिया। उसकी गालिया सुनकर वह आश्चय में

पड गया। उसने अपनी बहन से पूछा भी पर उसने किसी बात का ठीक उत्तर नहीं दिया। पागलो की तरह वह अट शट बकने लगी। भाइ उसे पागल समझ कर अपने घर ले गया।

जब लग्न चढने का समय आया तब वह भाइ को बुरी तरह कोसने और गालिया देने लगी। वह बोली—' माता का पूत मरे भावज का पति मरे, बहन का बीरन मरे, पहले मेरे हाथ पर लग्न रखी जायगी तब इसके हाथ पर लग्न रखना।' पगली की जिद के कारण लोगो को पहले उसी के हाथ पर लग्न रखनी पडी। उसने हाथ पर लग्न रखकर उसमे काटा खोस दिया। तदतर भाइ के हाथ पर लग्न रखी गइ। इसी तरह व्याह के प्रत्येक नेग क समय बहन आप आगे होकर पहले अपना नेग कराती पीछे भाई के नेग चार होते थे।

जब बरात की तयारी हुइ तब भी बहन सब से आगे बरात में जाने को तयार हो गइ। भाइ की ससराल म पहुच कर उसने तुरत ही ससुर के द्वार पर सोने की ध्वजा चढवाइ। जब भॉवरों का समय आया तब बहन डेरे मे सो रही थी। दूल्हा मडप मे गया। वहा ज्यो ही भावरे पडने लगी त्यो ही वह मूर्च्छित हो गया। उसे मर्च्छित देखकर लोग उसकी बहन को बलाने दौडे गये। उन लोगो के साथ बहन गालिया देती हुइ ब्याह के घर की ओर चली। वह मडप के पास पहुँची ही थी कि उधर से एक भयानक सिह आ पहुँचा। बहन ने उसके सामने जौ का पूला डाल दिया और मडप मे काटा खोस दिया। सिह चला गया। सकुशल भॉवरें पड गइ। विवाह के सब नेग पूरे हो जाने पर भाई अपनी नइ दुलहिन को लिवा कर घर आया।

ग्राम देवताओ का पूजन होने के बाद जब सोनारे के नेग का समय आया, तब भी बहन मचल गइ कि भाइ भौजाइ के साथ म भी सोऊँगी। सब लोग मना करने लगे, पर वह कब किसी की सुनती थी। वह एक ओर भाइ को और दूसरी ओर भौजाइ को

लिटा कर बीच मे स्वय लेट रही। भाइ-भावज दोनो सो गये। कोठे के बाहर स्त्रियाँ गाने-बजाने में लगी हुइ थी। ठीक आधी रात के समय ऊपर से सप उतरा। बहन जागती थी। उसने सप को मारकर एक कपडे के नीचे ढाक दिया और आप गाती हुइ बाहर निकल आइ। भाइ-भावज दोनो आनन्द से रात भर सोते रहे।

बहन भी सब कामो से निश्चिन्त होकर सो गयी और दोपहर तक सोती रही। भाइ के जगाने पर भी वह नही उठी। अन्त मे उसकी माता ने खीजकर उसे उसके ससुराल भेजना ही उचित समझा। भाइ बाजार से बहन के लिए कपडे आदि ले आया। उसी समय बहन जाग उठी। सब को यह देखकर आश्चय हुआ कि वह बिलकुल स्वस्थ थी। स्त्रियो के बार बार पूछने पर वह उठी और जहा भाइ भावज रात मे सोए थे वहा वह गयी। वहाँ से वह मरा हुआ सप उठा लाइ और उसे सब को दिखा कर कहा कि भाइ की रक्षा के लिए ही म पगली बनी थी। कुछ दिनो तक वह अपने भाइ के पास रहकर अपने ससु राल चली गयी। भाइ भावज भी आनन्द से रहने लगे।

दूज की पूजा तो सनातन से चली आती ह परन्तु भाइ को आमन्त्रित करने की परपरा इसी समय से चली है।

१० तिसुआ सोमवार

चत्र मास के चारो सोमवारो को तिसआ सोमवार कहते ह। इन सोमवारो मे श्री जगदीश के पट और बेतो की पूजा होती ह। तिसुआ सोमवार का व्रत और पूजन उसी के यहाँ होता है जो श्री जगदीश के दशन कर आया हो या जिसके घर मे कोइ जगदीश यात्रा कर चुका हो।

यह पूजा मध्याह्न के समय होती ह। जब तक पूजा नही हो

जाती जगदीश का जानेवाला या घर का प्रमुख व्रत रहता ह। पूजन के समय जगदीश के पट, पटा पर पधारे जाते ह और बेतो को धोकर उसका पानी बरतन मे रख लेते ह। उसी बरतन मे बेत खडे करके दीवार से टिका देते ह। च दन, चावल, धप, दीप, नवेद्यादि से विधिवत पट और बेतो का पूजन किया जाता ह। पुष्प मालादि के साथ जौ की बाल आम का बौर और तिसुआ (टेस्) के फूल चढाना आवश्यक समभा जाता ह। नवेद्य के अनुपान मे यह विशेषता ह कि पहले सोमवार को गुरधानी (भुने हुए गेहूँ और गुड) का भोग लगता है। तीसरे सोमवार को पचमेल और चौथे सोमवार को गज भोग अर्थात कच्चा पक्का सब तरह का पकवान बनाकर भोग लगाया जाता ह। भोग लगाने के बाद कथा कही जाती ह। कथा हो चुकने पर बेतो पर अक्षत छोडते ह फिर भोग बाट कर पूजन और विसजन होता ह। पूजन करनेवाले के लिए भोजन की कोइ विशेष विधि नही ह।

कथा—एक था भाट एक थी भाटिन। भाट का नाम था कुदरती। वह बहुत गरीब था। एक दिन भाटिन ने अपनी लडकी और दामाद को खिलाने की इच्छा प्रकट की। भाट राजी हो गया। वह कइ गाव से भिक्षा मागकर लाया। खूब सामान मिला। भाटिन ने अच्छा अच्छा भोजन बनाया। भोजन बनाकर वह हाथ पर धोने बाहर गइ। भाट ने घर मे जाकर रसोइ देखी, तो वहाँ केवल एक बडी और एक छोटी,दो ही रोटियाँ थी। भाट भाटिन यह देखकर बहुत दु खी हुए। उन्होने दामाद को बडी रोटी परोसी और लडकी को छोटी रोटी खिलाकर दोनो को विदा किया। भाट ने उसी समय श्री जगदीश के दशनो के लिए यात्रा की।

भाट घर से चलकर रास्ते मे जा रहा था। उसने देखा कि बहुत से आदमी पत्ते तोड-तोड कर दोने पत्तले बना रहे ह। लोगो से पूछने पर उसे ज्ञात हुआ कि राजा के यहा जगदीश का

भडारा है। तब वह भी उन्ही लोगो के साथ काम करने लगा। शाम को सब लोगो के साथ भाट भी राजा के महल मे गया। पत्तल वाले पत्तले देकर भोजन करने बठ गये। भाट भी एक जगह बठ गया। उसने एक पत्तल मे भोजन किया और दूसरा पत्तल बाँधकर एक मटकी मे रख दिया। सायकाल छाछ बेचने वाली स्त्रिया नगर से अपने गाव को जा रही थी। उन्ही मे भाट के गाव की स्त्रिया भी थी। उसने उनमे से एक को वह मटकी दे दी।

छाछ बेचने वाली भाट की सौगात लेकर थोडी ही दूर चली होगी कि उसके सिर का बोझ भारी होने लगा। उसने बोझ को सिर पर से उतार कर भाट की पठौनी देखने की इच्छा से मटकी मटके मे जो हाथ डाला वो वह उसी मे फँस गया। बहुत उपाय करने पर भी हाथ नही निकला। तब उन्होने जगदीश का स्मरण करके कहा— भाट की सौगात भाट के यहा जाय हमारा हाथ छूट जाय। इतना कहते ही हाथ बाहर निकल आया।

घर आकर उस स्त्री ने अपनी सास से कहा कि इस मटकी को देखना नही। भाटिन को बुलाकर उसे दे देना। पर सास नही मानी। उसने मटकी खोल कर जो देखी तो उसमे जवाहरात भरे हुए थे। उसने सोचा कि मटकी भर गेहूँ भाटिन को दे दू और ये जवाहरात अपने घर मे रख लू। परतु जब उसने गेहूँ निकालने के लिए कच्ची कोठार का छेद खोला तब उसमे से कीडे निकलने लगे। यह देखकर सास ने कहा— भाट की सौगात भाट के यहा जाय, हमारे गेहूँ के गेहूँ हो जाय। इतना कहते ही कोठार के गेहू ज्यो के त्यो हो गए। सास ने उस भाटिन को बुलाकर बद मटकी उसे दे दी। भाटिन ने मटकी को घर ले जाकर खोला। उसमे बहु-मूल्य हीरे जवाहरात भरे निकले। उसमे से उसने एक अंश पुण्य कार्यों के लिए सकल्प कर दिया और शेष मे वह अपने खाने पीने का काम चलाने लगी।

भाट जगदीशजी की यात्रा करने चला गया। माग मे उसे एक साधु मिला। साधु ने उससे कहा कि यदि सचमुच तुझे जगदीश की छडी लगी ह तो तू हमारी धूनी मे धँस जा, शीघ्र ही जगदीशजी पहुँच जायगा। जब भाट धूनी मे धँसने लगा तब साधु ने उसे मना करके एक अध कूप मे गिरने के लिए कहा। भाट उसमे भी कूदने को तयार हो गया। यह देखकर साधु ने उससे भडभूजे की भाड मे सर दने के लिए कहा। भाट भाड मे सर देने को भी तयार हो गया। इस प्रकार उसे सब परीक्षाओ मे उत्तीण पाकर साधु सतुष्ट हो गया।

रात्रि मे साधु ने उसे एक दाल एक चावल और एक चुटकी आटा देकर भोजन पकान क लिए कहा। एक हाडी मे अदहन रख कर दाल चावल के दाने उसने उसमे डाल दिये और आटा गूध कर ढाक दिया। आच लगते ही खिचडी हाडी से ऊपर उबल आइ। भाट ने उफान मे आए हुए पानी को पी लिया और उसी से सतुष्ट हो गया। थोडी देर मे रसोइ भी तयार हो गयी। उसने साधु से भोजन करने के लिए कहा। रसोइ जूठी हो चुकी थी। इसलिए साधु ने भाजन नही किया। भाट ने यात्रियो को खूब भोजन कराया फिर भी भडार मे बहुत सा भोजन बच गया। यह देख कर उसने साधु से कहा— बस म समझ गया तुम्ही स्वामीजी हो क्योकि ऐसी सिद्धि और किसी मे नही ह। म आपकी परीक्षा लेने योग्य नही हूँ। म तो अल्पज्ञ हूँ और आप सवज्ञ ह। जैसे आपने कृपा करके माग मे दशन दिये वैसे ही दशन पुरी मे दीजिए । साधु ने कहा—"जहा हम ह वही पुरी है। तू इस भ्रम मे न पड। जो तेरी इच्छा हो सो कह"। वह बोला— महाराज ! म बहुत ही दरिद्र हूँ मुझको भर पेट खाने को नही मिलता। इसलिए मेरी दरिद्रता दूर कीजिए।"

साधु ने कहा कि पुरी के समीप ही बेत की झाडी का वन ह। तू उस झाडी से पाच बेत तोड ला। भाट झाडी मे जाकर ज्योही

अच्छे-अच्छे बेत तोडने लगा त्योंही उसकी मुशके बध गइ। यह देखकर साधु ने कहा—"तू बडा लोभी ह। तुझे असतोष तो ह ही तष्णा भी अधिक ह। इसी से तेरा यह हाल हो रहा है। तू इन बातो के त्यागने का सकल्प करके सिफ पाच बेत लेकर चला आ।' भाट ने वसा ही किया। वह पाच बेत लेकर साधु के पास आ गया। साधु ने एक पीतल की बटलोइ उसे देकर कहा कि चत्र मास के प्रति सोमवार को इन बेतो की पूजा किया करना। चौथे सोमवार को हमारे नाम से भडारा देना। यदि तू ऐसा करेगा तो इस बटलोइ से छप्पन प्रकार के भोजन तुझको मिला करेगे।

बटलोइ लेकर भाट घर वापस आया। माग मे एक जगह जब वह पानी पीने लगा तब उसके चुल्लू मे पानी के साथ टेसू का फूल आ गया। उस फूल को देखकर उसे स्मरण आया कि आज तो चैत्र का पहला सोमवार ह साधु की पूजा करनी ह और कथा कहनी है। पास ही खेतो मे लोग दावर चला रहे थे। उसने उनसे कहा कि मेरी कथा सुन लो, तो म इसी जगह पूजन कर लू परन्तु उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नही दिया। वह आगे बढा। उसके जाते ही किसानो का गल्ला आप-से आप जलने लगा। यह देख कर वे भाट को वापस बुला लाये। भाट ने बेतो की पूजा करके साधु की कथा कही। इसके बाद वह आगे चला गया। दूसरे सोमवार को उसे भेडे चराते हुए एक गडरिया मिला। उसने उससे भी कथा सुनने के लिए प्राथना की, पर गडरिये ने भी उसकी बात पर ध्यान नही दिया। सहसा उसकी भेडे बिला गइ। तब उसने भाट को बुलाकर कथा सुनी कथा पूरी होते होते उसकी भेडें दुगनी तिगुनी होकर चरती हुइ दिखाई देने लगी।

भाट के दो लडकियाँ थी। पहली लडकी किसी बडे अमीर के घर ब्याही थी और दूसरी उसी गाव के पास एक निधन के

यहा ब्याही थी। तीसरे सोमवार को भाट पहली लडकी के घर पहुँचा। उसने उससे कथा सुनने के लिए कहा, पर उसने उसकी बात पर ध्यान नही दिया। तब वह वहा से अपनी गरीब लडकी के घर गया। गरीब लडकी उससे बडे प्रेम भाव से मिली। उसने बाप के आदेशानुसार पूजा के लिए चौका लगा दिया। बाप पूजा करने लगा, तब तक लडकी घर मे से सन की अटी लेकर बनिये के यहा से पूजा के लिए घी-गुड लाइ और उसी घी गुड से साधु के नाम का होम करके प्रेम से कथा सुनी। इसके बाद जब उसने साधु की दी हुइ बटलोइ मे बेत डालकर खटखटाया तब कच्चे पक्के सब प्रकार के छप्पन व्यजनो के ढेर लग गये। गॉव के जो लोग प्रसाद लेने आये, उन्हे भाट ने खूब भोजन कराया। लडकी और दामाद ने भी खब भोजन किया। चलते समय भाट ने अपनी लडकी को श्री स्वामीजी का स्मरण करने का आदेश दिया। लडकी भी श्री स्वामीजी का स्मरण करने लगी और उसके घर मे भी धनधान्य की बढती होने लगी।

अपनी छोटी लडकी के यहा से भाट अपने गॉव के पास पहुचा। वहा उसे कुछ विशेष चमत्कार दिखाइ दिया। गाँव के बाहर नये-नये बाग-बगीचे, मदिर, तालाब आदि देख कर वह दग रह गया। यह सब उसी का था। जिस दिन वह अपने घर पहुचा, उस दिन सोमवार था। भाट ने गाव भर को न्योता दिया और बेतो की पूजा करने के बाद बटलोइ मे बेत खटखटाया। तुरन्त छप्पन व्यजनो के ढेर लग गये। गाँव के छोटे बडे सभी लोग भाट के यहाँ भोजन करने आये। और भोजन करके चले गये। भाट ने राजा के यहाँ भी प्रसाद भेजा।

राजा को नाइ से सब हाल पहले मालूम हो चुका था कि भाट की बटलोइ में करामात ह। राजा ने यह बात मत्रियो से कही और यह भी कहा कि किसी युक्ति से भाट के पास से वह बटलोइ ले लेनी चाहिए। इस पर मत्रियो ने सलाह दी कि राज

कुमार को भाट के घर भेजना चाहिए। वह जिद करक उससे बटलोइ ले लेगा। यदि वह उनको न दे, तो फिर बल प्रयोग कर के उससे बटलोइ छीन ली जायगी।

दूसरे दिन कुछ लोग राजकुमार को भाट के घर लिवा लाये। राजकुमार नें जब भाट से बटलोइ मागी, तब उसने खुशी से बटलोइ राजकुमार को दे दी। बटलोइ पाकर राजा ने नगर भोज ठान दिया। पर तु जब बटलोइ मे बेत डालकर उसन खटखटाया तब उसमे से कुछ भी न निकला। जो लोग योते हुए आये थे वे भूखे बैठे थे। कोठार मे गल्ला भी नही था। राजा ने असतुष्ट हो कर भाट को पकडने के लिये सिपाही भेजे परन्तु वह पहले ही चपत हो गया था।

कुदरती भाट घबडाया हुआ श्रीस्वामीजी की ओर भागता जाता था। माग मे उसे कही दो आम के वक्ष कही दो पोखरे, कही कइ स्त्रिया, कही एक साप, कही एक बिना सवार का घोडा मिला। उसने कहा भाइ! मेरा सदेश स्वामीजी से कहना कि म मुददत से सजा सजाया फिर रहा हू? कोइ मुझ पर सवारी नही करता। वह और भी आगे चला तो कही नदी, कही एक गाय और कहीं एक अधबने मकान का मालिक मिला। सब दु खी थे। भाट सबके स देश लेता हुआ जब जगदीशपुरी के समीप पहुँचा तब पुन स्वामीजी नें उसे साक्षात दशन दिया। स्वामीजी का दशन पाकर उसने बटलोइ की घटना उन्हे बता दी और अपने बडे दामाद का हाल भी सुना दिया। स्वामीजी ने कहा कि वापस जाकर राजा रानी से अपनी बटलोइ ले ले और दामाद को कथा सुना दे।

भाट स्वामीजी को दण्डवत करके घर की ओर भागा। जितने पग वह घर की ओर उठाता था, उतना ही वह बहरा होता जाता था। अन्त मे घबडा कर वह फिर स्वामीजी की ओर चला। वहाँ पहुँच कर उसने सब के सन्देशे कह सुनाये। तब श्री स्वामीजी

ने प्रकट होकर कहा कि वे दोनो आम के वक्ष उस जन्म के मामा भानजे ह। मामा ने भानजे की धरोहर खाइ थी, इस पाप स उनकी यह दशा हुइ। तुम पाच पाच आम दोनो पेडो मे स खाना, तब सब उनके फल खाने लगेगे। दोनो पोखरी उस जन्म की देवरानी जेठानी ह। हमेशा कलह करती रही ह, कभी मिल कर नही रही। इसी कारण उनका कोइ जल नही पीता। यदि तुम पाच पाच चुल्ल जल दोनो पोखरियो मे से पी लोगे, तो सब लोग उनका जल पीने लगेगे। बोझ वाली स्त्री स्वार्थिन ह। उसने उस जन्म मे दूसरो से अपने बोझ तो उतरवाये परन्तु उनके बोझ नही उतारे। इसी कारण उसको यह दण्ड मिला ह। यदि तुम उसके बोझ को छू दोगे, तो वह सिर पर से उतर जायगा। सिर पर बडा तवा लिये फिरने वाली ऐसी स्त्री ह जिसने सास ननद की ओट कर के चल्हे पर तवा चढाया और खाने बठ गइ। यदि तुम उसके तवे को छू दोगे तो उसका पाप दूर हो जायगा। चतड पर पीढा लिये फिरने वाली अभिमानिनी स्त्री ह। उसकी सास-ननद जब जमीन पर बैठती थी, तब वह पीढ़े पर बठती थी। इसी कारण अब वह पीढा उससे चिपका फिरता ह। यदि तुम उसे छू दोगे तो वह गिर जायगा। आधा बाबी म आधा बाहर जो सप ह वह उस जन्म का प्रधान ह। उसने औरो की विद्या तो ली परन्तु अपनी विद्या किसी को नही दी। तुम्हार छूने से वह भी चलने लगेगा। वह जो गाय ह, उस जन्म की स्त्री ह। उसने अपनी सौत और उसके पुत्र मे झगडा लगाया था। इस कारण अब उसको मा बेटे का वियोग हुआ है। तुम उनको इकटठा कर देना। वह जो घोडा ह, वह अपने स्वामी को रण मे जुझाकर भाग आया था। तुम उस पर सवार होकर पॉच कदम चलना तब सब उस पर सवारी करेंगे। महल की बाबत साहूकार से कहना कि उसके नगर मे कोइ कन्या क्वारी है। उसके माँ-बाप गरीब ह। यदि उसको खोजकर

साहूकार उसका ब्याह करा दे, तो उसका महल उठ जायँगा और उसकी सब इच्छाए पूरी होगी।

सब के सदेशे भुगतान करता हुआ जब भाट अपने घर पहुँचा राजा ने बुलाकर उसका बडा आदर किया और उसकी बटलोइ उसे लौटा दी। इसके बाद उसने फिर स्वामीजी की पूजा की और लडकी तथा दामाद को बुलाकर कथा सुनाइ। इससे उनकी सम्पत्ति जैसी-की-तैसी हो गइ।

कहा जाता ह कि तिसुआ सोमवार की पूजा इसी कुदरती भाट की यात्रा के समय से चली ह। टेसू के फूल से प्रथम पूजन भी तभी से आरम्भ हुआ है। इसी कारण यह तिसुआ सोमवार कहा जाता है।

११. अरुन्धती-व्रत

अरुधती महर्षि वशिष्ठ की पत्नी और प्रजापति कदभ ऋषि की पुत्री थी। सप्त ऋषियो मे वशिष्ठजी के साथ अरुन्धती को भी स्थान मिला है और उन्ही के नाम पर अरुधती-व्रत की परपरा चली ह। यह व्रत चिर सौभाग्य के लिए किया जाना ह। इससे बाल वधव्य दोष का परिहार होता है। यह चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर ततीया को समाप्त होता है। प्रतिपदा के दिन किसी नदी अथवा घर मे स्नान कर इस व्रत का सकल्प किया जाता ह। दूसरे दिन द्वितीया को धान पर कलश स्थापित कर उसके ऊपर अरुधती वशिष्ठ और ध्रुव की तीन स्वण मूर्तिया स्थापित की जाती ह। गणपति के पूजन के पश्चात उनका पूजन होता है। तृतीया को शिव-पावती की पूजा करके इस व्रत की समाप्ति होती है। स्वण प्रतिमाएँ किसी ब्राह्मण को दान कर दी जाती है। आजकल इस व्रत का प्रचार बहुत कम हो गया ह। इसकी कथा इस प्रकार ह—

कथा—प्राचीन काल मे सव-शास्त्र निष्णात एक ब्राह्मण था। उसकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या बाल्यावस्था ही मे विधवा हो गइ थी। एक दिन वह कन्या यमुना के किनारे तप कर रही थी। दवात्त वहा पावती सहित महादेव आ गए। पावती ने उस कन्या का वृत्तान्त जानकर महादेवजी से उसके बाल्य काल ही मे विधवा हो जाने का कारण पूछा। महादेवजी ने उत्तर दिया कि प्राचीन समय में यह ब्राह्मण था। उसने एक कुल शीलवाली सवर्णा और समान-वयस्का कन्या के साथ विवाह किया था। विवाह करके वह ब्राह्मण सदैव के लिए परदेश चला गया और वहा जाकर उसने किसी पर स्त्री के साथ प्रीति कर ली। उसी पाप के कारण उस ब्राह्मण को दूसरे जन्म मे कन्या का शरीर मिला और अब उसे बाल वधव्य का दुख भोगना पड रहा ह। अपनी कुलीन और निर्दोष स्त्री को छोडकर जो मनुष्य सदव के लिए देशान्तर को चला जाता ह, वह अन्ध पुरुष की भाति महासागर म डूब जाता ह। जो पुरुष निज-स्त्री को छोडकर पर स्त्री से प्रीति करता ह अथवा पर-स्त्री को घर म डाल लेता ह, वह जन्म जन्मान्तर स्त्री होकर बाल-वैधव्य का दुख भोगता ह। जो स्त्री एकान्त मे अन्य पुरुष के साथ व्यभिचार करती ह, वह भी उस पाप के कारण बाल वैधव्य का असाध्य दुख भोगती ह।

इस प्रकार का उपदेश सुनकर पावती ने शिवजी से पूछा कि इस वधव्य दुख की निवत्ति का क्या कोइ ऐसा उपाय भी ह, जिससे पुन इस पाप के फलो को न भोगना पडे। इसके उत्तर मे महादेवजी ने अरुन्धती-व्रत का विधान बतला कर कहा कि जो स्त्री विधिपूवक इस व्रत को करेगी, उसको बाल वधव्य का असह्य दुख न भोगना पडेगा।

१२ गनगौर-व्रत

गनगौर व्रत चैत्र शुक्ल ततीया को किया जाता ह। यह हिदू-स्त्री-मात्र का त्योहार है। देश भेद से पूजन और उत्सव की विधि मे भले ही थोडा बहुत अन्तर हो, परतु मल आशय एक ही ह। कहा जाता है कि इसी तिथि को शिवजी ने पावती को और पावतीजी ने सम्पूण स्त्रियो को सौभाग्य वर दिया था। इस तिथि पर सौभाग्यवती स्त्रिया मध्याह्न तक व्रत रखती ह। पूजन के समय रेणुका की गौर स्थापित करके उस्पर सौभाग्य सम्बधी सब चीजे चढाइ जाती ह—जैसे काच की चडी, महावर, सिन्दूर और नवीन वस्त्र। चन्दन, अक्षत धूप दीप नवेद्यादि से विधिवत पूजन होने के बाद सुहाग की सामग्री अपण होती है। तब भोग लगता ह। भोग के बाद कथा कही जाती ह। कथा पूरी होने के बाद व्रत रखनेवाली सौभाग्यवती स्त्रियाँ गौर का चढा हुआ सिदूर अपनी अपनी माँग मे लगाती ह। फिर केवल एक बार भोजन करके व्रत को समाप्त करती ह। गनगौर का प्रसाद पुरुषो को नही दिया जाता। इस व्रत के सम्बध मे जो लौकिक कथा प्रचलित ह, वह इस प्रकार ह—

कथा—एक समय महादेवजी नारदजी के साथ देश-पर्यटन को निकल। उनके साथ पावतीजी भी हो गयी। तीनो चलते हुए एक गाव मे पहुँचे। उस दिन चैत्र शुक्ला ततीया थी। गाव के लोगो ने जब सुना कि साक्षात शिव पावती पधारे ह तब सब स्त्रियाँ उनका पूजन करने के लिए रुचिकर भोग बनाने लगी। इसी मे उनको देर हो गई। परन्तु नीच कुल की स्त्रियाँ जो जहाँ जैसे बठी थीं वसे ही हल्दी-चावल थालियो मे रखकर दौडी हुइ शिव पावती के समीप जा पहुँची। उनकी पत्र पुष्प पूजा अगीकार करके पावतीजी ने उनके ऊपर सम्पूण सुहाग रस (सौभाग्य का टीका लगाने की हल्दी) छिडक दिया। वे अटल

सौभाग्य पाकर चली गइ। इसके पश्चात उच्च कुल की महिलाए आइ। वे सोलहो श्रृङ्गार, बारहो आभूषणो से सजी हुइ नाना प्रकार के पकवान और पूजा की सामग्रिया चादी-सोने के थालो म सजा कर ले आइ। उनको देखकर शिवजी ने कहा—"गौरी! तुमने सपूण सहाग रस तो साधारण स्त्रियो मे वितरण कर दिया। अब इनको क्या दोगी?"

पावतीजी बोली—'आप इसकी चिता न कर। उनको ऊपरी पदार्थो से बना हुआ रस दिया गया ह, इस कारण उनका सुहाग धोती से रहेगा परन्तु म इन लोगो को अपनी उगली चीरकर आधे रक्त का सुहाग रस देती हूँ। जिस किसी के भाग मे मेरा दिया यह सुहाग रस पडेगा वह मेरी तरह तन मन से सौभाग्यवती होगी।" निदान जब स्त्रिया पास आइ और पूजा कर चुकी तब पावतीजी ने अपनी उगली चीरकर उन पर छिडकी। उगली मे से जो किचित रक्त निकला उसी का एक एक दो-दो छीटा किसी किसी पर पडा। मतलब यह कि जिस पर जसे छीटे पडे उसने वसा ही सुहाग पाया। इस काम से निवत्त होकर पावतीजी ने शिवजी की आज्ञा से नदी के किनारे जाकर स्नान किया। फिर बालू के महादेव बनाकर वह उनका पूजन करने लगी। पूजन के बाद बालू के ही पकवान बनाकर उन्होंने शिवजी को भोग लगाया परिक्रमा की और नदी के किनारे की मिट्टी का टीका माथे पर लगा कर दो कण बालू का प्रसाद पाया। इसके बाद वह शिवजी के पास चली गईं।

विधिवत षोडशोपचार पूजन करने मे पावतीजी को नदी के किनारे बहुत देर लग गइ। इसलिए जब वह शिवजी के समीप गइ तब उन्होने उनसे पूछा कि तुम्हे इतनी देर क्यो लगी? पार्वतीजी ने उत्तर दिया कि वहा मेरे भाइ भावज आदि मायक स आ गये थे इसी कारण देर हो गइ। शिवजी ने फिर पूछा कि तुमने पूजन के बाद क्या प्रसाद चढाया और स्वय क्या पाया?

पावतीजी ने कहा कि हमारी भावजो ने हमको दूध भात खिलाया ह। उसे खाकर म चली आ रही हू। पावतीजी की बाते सनकर शिवजी भी दूध भात खाने क लिए वहाँ चल पडे। उन्ह चलते देखकर पावतीजी बडे असमजस मे पड गयी। उन्होने शिवजी का ध्यान धर कर प्राथना की कि यदि म तुम्हारी अन य दासी हूँ तो हे प्रभु! तुम्ही इस समय मेरी लज्जा रक्खो। ऐसा सकल्प करके वह भी शिवजी के पीछे पीछे चलने लगी। अभी वे थोडी ही दूर चले होगे कि नदी के किनारे एक सु दर माया का महल दिखाइ देने लगा। जब वह उस महल के भीतर गये तब वहा शिवजी के साले और सरहज आदि सभी परिवार के लोग मौजूद थे। उन्होने बहन-बहनोई का बडे प्रेम से स्वागत किया। दो दिन तक अच्छी तरह मेहमानदारी होती रही। तीसरे दिन सबेरे पावतीजी ने शिवजी से चलने के लिए कहा, परन्तु वह राजी नही हुए। अन्त मे पावतीजी रूठ कर चल दी। तब तो शिवजी को भी उनका साथ देना पडा। आगे शिवजी, उनके पीछे पावतीजी और उनके पीछे नारदजी। तीनो यात्री चलते चलते बहुत दूर निकल गये। जब स ध्या होने का समय आया, तब शिवजी बोले कि मैं तुम्हारे मायके मे अपनी माला भूल आया हूँ। उसके लाने का क्या उपाय है? पावतीजी वहाँ जाकर माला लाने के लिए तयार हुइ, पर शिवजी के आग्रह से वह न जा सकी। नारदजी वहा गये।

नारदजी ने उक्त स्थान पर जाकर देखा तो वहाँ न कोइ महल था, न मनुष्य के रहने का सकेत। घोर सघन जगल मे असख्य हिसक पशु फिर रहे थे, महान अ धकार छाया हुआ था बादल उमडे हुए थे और बिजली चमक रही थी। नारद अ धकार मे भूलते भटकते फिर रहे थे। इतने मे बिजली चमकी और शिवजी की माला उनको एक वट-वक्ष की शाखा मे टँगी दिखाइ दी। नारदजी माला लेकर वहा से भागे और शिवजी के पास

आकर अपनी कष्ट कथा सुनाने लगे। उस समय शिवजी ने हँसते हुए कहा कि यह पार्वतीजी की लीला है।

गौरी पार्वती ने विनती की और कहा कि यह सब आपकी कृपा का प्रभाव है। मै किस योग्य हूँ। शिव-पार्वती की बाते सुन कर नारदजी ने दोनो को साष्टाग प्रणाम किया और कहा—'माता! आप पतिव्रताओ मे अग्रगण्य, सदैव सौभाग्यवती, आदि शक्ति है। यह सब आपके पातिव्रत का प्रभाव है। जब स्त्रियाँ तुम्हारे नाममात्र के स्मरण से अटल सौभाग्य प्राप्त कर पातिव्रत मे लीन हो ससार की सम्पूर्ण सिद्धियो को बना और मिटा सकती है, तब आपके लिए यह कोई बडी बात नही है।"

१३. शीतला-अष्टमी

चैत्र कृष्ण अष्टमी को शीतला अष्टमी कहते है। इस तिथि पर स्त्रिया भगवती का पूजन करके उनकी मढी या देवलाय मे जाती है। पूजन की विधि मे कोइ विशेषता नही है। किन्तु इस पूजन के बाद सम्पूर्ण ठडी वस्तुओ का भोग लगाया जाता है। इस दिन जो पकवान बनाया जाता है, वह सब सप्तमी का बना हुआ होता है। एक दिन पहले के बने हुए कच्चे पक्के सब प्रकार के व्यजन पूजा मे रखे जाते है। घर की अधिष्ठात्री या पूजा करने वाली इस दिन बासी अन्न खाती है।

स्त्री हो या पुरुष, जो शीतला अष्टमी का व्रत करता है, वह मध्याह्न मे भगवती का पूजन करके बासी अन्न केवल एक बार भोजन करता है। मढी मे पूजा हो चुकने के बाद कथा कही जाती है जो इस प्रकार है—

कथा—किसी राजा के पुत्र को शीतला (चेचक) निकली थी। उसी नगर मे एक काछी के लडके को भी शीतला निकली थी। काछी बहुत गरीब था परन्तु भगवती का उपासक था। वह

शीतला-सम्बन्धी उन सब नियमो को भलीभाति मानती था, जो धार्मिक दष्टि से आवश्यक समझे जाते ह—जैसे ीनन्ा ान्ले के पास खूब सफाइ रखना, वहा की जमीन को प्रतिदिन लीपना शुद्ध अवस्था ही मे छूना, भगवती की पूजा करना, नमक न खाना, घर मे तरकारी न बघारना, न कोइ चीज भनना, कडाही न चढाना, कोइ गरम चीज न आप खाना न शीतलावाले को खिलाना, सदव शीतल वस्तुओ का व्यवहार करना इत्यादि। इससे उसका लडका शीघ्र ही चगा हो गया।

राजा के यहा राजकुमार को शीतला निक्लने के कारण भगवती के मडप मे शतचडी का पाठ बैठा था। नित्य हवन और बलिदान होते थे। राज पुरोहित भगवती की पूजा करते थे। परन्तु राजघर मे नित्य कडाही चढती थी अनेक प्रकार के गरम पुष्ट और स्वादिष्ट व्यजन बनते थे, हर तरह की तरकारियो के साथ मास भी पकता था। उन व्यजनो की गध पाकर राजकुमार मनमानी चीजे खाने को मागता था और सब चीजें उसे खाने को दी जाती थी। इस कारण राजकुमार पर शीतला का अधिकाधिक प्रकोप होता जाता था। उसके शरीर मे बडे-बडे फोडे निकल आए थे खुजली होती थी और सर्वाङ्ग में जलन पदा होती थी। राजा रानी ज्यो ज्यो शीतला की शान्ति के उपाय करते थे त्यो-त्यो उमका प्रकोप अधिक होता जाता था।

जब राजा को यह समाचार मिला कि राजकुमार के साथ ही एक काछी के लडके को भी शीतला निकली थी और वह बिल्कुल अच्छा हो गया ह तब राजा के मन मे एक प्रकार की इर्ष्या उत्पन्न हुइ। वह अपने मन मे सोचने लगा कि भगवती क्यो ऐसा अन्याय कर रही ह। मै हजारो रुपये प्रतिदिन खच कर रहा हू, पर मेरा लडका तो दिन दिन विशेष व्यथित होता जाता है और जो गरीब काछी किसी तरह भी भगवती की सेवा-पूजा मेरे मुकाबिले मे नही कर सकता, उसका लडका बिना प्रयास चगा हो गया ह।

इस प्रकार का तर्क-वितर्क करते हुए जब राजा को नीद आ गई तब शुक्लाम्बर-धारिणी भगवती ने उसे स्वप्न मे दर्शन देकर कहा कि मै तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ। यही कारण है कि अब तक तुम्हारा पुत्र जीवित है। वास्तव मे तुम स्वय तो उन नियमो का पालन नही करते, जो शीतला के समय जरूरी है और मुझको दोष देते हो। ऐसी दशा मे सदा ठडी वस्तुओ का प्रयोग होना चाहिए। नमक खाना इसलिए मना है कि उससे खुजली पैदा होती है। घर मे बघार लगाना इस कारण मना है कि उसकी गध पाकर बीमार आदमी उसे खाने के लिए लालायित हो उठता है। किसी के पास जाना-आना और मिलना मिलाना इस कारण मना है कि यह रोग दूसरे को न लग जाय। दूसरो की कुशल चाहने से अपनी कुशल होती है।

भगवती की बाते सुनकर राजा ने विनती की और कहा—हे माता! अब मुझे जो आज्ञा हो वह करूँ, परन्तु पुत्र की रक्षा कीजिए।"

भगवती ने कहा—'आज से तुम कडाही न चढने दो, शीतल पदार्थ राजकुमार को खिलाओ और इसी प्रकार शीतल पदार्थ मुझे भोग लगाओ।" यह कहकर देवी अन्तर्धान हो गई। राजा ने सबेरे ही विधिवत भगवती का पूजन आरभ किया। दैवयोग से उसी समय से राजकुमार की तबियत अच्छी होने लगी। कुछ दिनो के बाद राजकुमार बिल्कुल अच्छा हो गया।

जिस दिन भगवती ने राजा को स्वप्न मे दर्शन दिये थे, उस दिन चैत्र कृष्ण सप्तमी थी। राजा ने नगर मे ढिढोरा पिटवा दिया कि अष्टमी को सब लोग बासी अन्न और शीतल पदार्थों का भोग लगा कर भगवती की पूजा करे और इस अष्टमी को शीतला-अष्टमी कहा जाय। उसी समय से सर्वसाधारण मे शीतला-अष्टमी की पूजा का प्रचार हुआ है।

अधिकाश देखा गया है कि चैत्र और वैशाख मे ही शीतला

का प्रकोप अधिक होता ह। अस्तु शीतला-अष्टमी की पूजा आमतौर से यह शिक्षा देती ह कि शीतला के रोग के समय किस विधि से रहना चाहिए और कसे भगवती की पूजा करनी चाहिए।

१४. नव सवत्सर-प्रतिपदा

हमारे देश मे वष का आरभ चत्र शुक्ल प्रतिपदा स होता है। इसलिए इसको 'सवत्सर प्रतिपदा' कहते ह। ब्रह्मपुराण मे लिखा ह कि ब्रह्मा ने इसी तिथि पर सष्टि की रचना की थी। उसके अनुसार इस तिथि से देवी देवताओ ने सष्टि सचालन का कार्यारभ किया था। अथववेद मे इसका उल्लेख है। अतर केवल इतना ह कि जहा पुराण मे ब्रह्मा की मर्ति के पूजन का विधान है वहा वेद मे सवत्सर रूप प्रजापति की प्रतिमा का पूजन लिखा है। इसके अतिरिक्त शतपथ ब्राह्मण' मे इसका उल्लेख मिलता ह। तात्पय यह कि यह पव अत्यन्त प्राचीन ह। स्मति कौस्तुभ' के रचनाकार का कहना है कि चत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र के विष्कम्भ योग मे दिन के समय भगवान ने मत्स्य रूप अवतार लिया था। इन सबसे महत्वपूण बात यह ह कि यही दिन भारतके सम्राट विक्रमादित्य के सवत्सर का प्रथम दिन है। इसी तिथि से रात्रि की अपेक्षा दिन बडा होने लगता ह। ईरानियो मे इसी तिथि पर नौरोज मनाया जाता ह। इस प्रकार इस तिथि का महत्व ऐतिहासिक एव धार्मिक दोनो दष्टियो से ह।

नव सवत्सर प्रतिपदा के दिन प्रात काल स्नान करके हाथ मे गध अक्षत, पुष्प और जल लेकर सकल्प करना चाहिए। फिर नइ बनी हुइ चौकी अथवा बालू की वेदी पर स्वच्छ श्वेत वस्त्र बिछाकर उस पर हलदी अथवा केसर मे रगे हुए अक्षत का अष्टदल कमल बनाना चाहिए। अष्टदल कमल पर सोने की

मूर्ति स्थापित करके ॐ ब्रह्मणेनम से ब्रह्मा का आवाहन कर पुष्प, धूप दीप नैवेद्य से उनका पूजन करना चाहिए। पूजा के अंत में ब्रह्मा से अपने लिए सपण वष कल्याणकारी होने की प्राथना करनी चाहिए। इस दिन नए वस्त्र धारण करने, घर को ध्वजा पतका और तोरण से सजाने, नीम के कोमल पत्तो को खाने प्याऊ की स्थापना करने तथा ब्राह्मणो को भोजन कराने का भी विधान ह।

१५. रामनवमी

हमार यहा वष म दो नवरात्र हाते ह—एक आश्विन मास की शक्ल प्रतिपदा से नवमी तक और दूसरी चत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक। पहली शारदीय नवरात्र के नाम से प्रसिद्ध ह और दूसरी वासन्तीय। वासन्तीय नवरात्र को रामनवमी भी कहते ह। कहा जाता ह कि चैत्र शुक्ल नवमी का भगवान रामचद्र का जन्म हुआ था। इसलिए यह प्रत्येक हिन्दू के लिए पुण्य का पव माना जाता ह।

रामनवमी के व्रत मे मध्याह्न व्यापिनी तिथि लेनी चाहिए। अर्थात् जिस दिन दोपहर को नवमी पडे उसी दिन रामनवमी माननी चाहिए। अगस्त्य सहिता मे लिखा ह कि यदि चैत्र शुक्ल नवमी पुनवसु नक्षत्र से युक्त हो और मध्याह्न-व्यापिनी हो तो उसको महापुण्य वाली जाननी चाहिए। विष्णु भक्तो को अष्टमी विद्धा नवमी कभी न माननी चाहिए। नवमी को उपवास और दशमी को पारण करना चाहिए। नवमी की रात्रि मे व्रती को रामायण की कथा सुननी चाहिए और दशमी को प्रात काल राम का पूजन करना चाहिए। इसके पश्चात ब्राह्मणो को भोजन कराना और उन्हे गौ, भूमि, सुवण, तिल वस्त्र, अलकार आदि दक्षिणा में देना चाहिए।

रामनवमी हमारा राष्ट्रीय पव ह। यह सस्कृति की स्मारक और हमारे विस्मत आदर्शो का परिचायक ह। दक्षिण भारत मे यह पव बडी धमधाम से मनाया जाता है। अयोध्या मे भी इस तिथि पर बडा भारी मेला लगता है और दूर-दूर के लोग रामच द्र के मदिर मे भगवान का दशन करने जाते ह।

१६ पजूनो पूनो व्रत

चत्र शक्ला पूर्णिमा को पज्नो पूनो भी कहते ह। इस तिथि पर व्रत नही होता केवल पजनकुमार का पूजन होता है। पूजन उसी घर मे होता ह जिसमे कोइ लडका होता है। यदि लडका नही होता, लडकिया ही होती ह, तो पूजा नही होती।

किसी के यहा पाच मटकिया पुजती ह किसी के यहाँ सात। जहा पाच पुजती ह, वहा चार मटकिया और एक करवा होता ह। इसी तरह सात मे एक करवा होता ह। मटकिया चूना या खडिया मिट्टी से रँगी जाती ह। करवा पर हल्दी से पजनकुमार और उसकी दोनो माताओ की प्रतिमाए लिखी जाती ह। शुद्ध जगह लीपकर और चोक पूरकर बीच मे पजनकुमार का करवा और उसके चारो ओर अ य मटकियाँ रक्खी जाती ह। ये सब मटकियाँ विविध प्रकार के पकवानो से भरी जाती ह। बीच वाली मटकियो मे अधिकाश लडडू ही रखे जाते ह। चन्दन अक्षत धूप दीप, नैवेद्यादि से मटकियो की पूजा करके कथा कही जाती है। एक स्त्री कथा कहती ह। बाकी स्त्रियाँ अक्षत हाथ मे लेकर बठ जाती है। कथा समाप्त होते ही वे सब मटकियो पर अक्षत छोडती ह और मटकियो को दण्डवत करती ह। तब लडका सब मटकियो को हिला हिलाकर यथास्थान रख देता है। पजनकुमार की मटकी में से लडका लडडू निकालकर मा की झोली मे डालता है। तब माँ लडके को लडड या और पकवान

देती ह और फिर सब घर के लोगो मे मटकियो का पकवान प्रसाद की तरह वितरण किया जाता ह। प्रसाद बॉटते समय कहा जाता है——

पजन के लड्वा पजन खायॅ।
दौर दौर वही कोठरी मे जायॅ ॥

कथा—किसी समय बासुकदेव नाम का एक राजा था। उसके दो रानिया थी। बडी रानी का नाम था सिकौली और छोटी का रूपा। दोनो रानियो मे से सन्तान एक के भी नही थी। छोटी रानी रूपा राजा को अत्यन्त प्रिय थी और सिकौली पर उनकी सास-ननद का अधिक प्रेम था। रूपा पति की प्यारी होने से सास ननद की नाराजगी की कुछ भी परवा नही करती थी। परन्तु उसको पुत्र की बडी लालसा थी। इस कारण उसने एक दिन वद्धा स्त्रियो से कोख चलने का उपाय पूछा। उन स्त्रियो ने कहा कि सन्तान तो सास ननद के आशीर्वाद से हो सकती ह। रानी ने कहा कि वे तो मुझसे नाराज ह। इसलिए यह सम्भव नही ह कि मझको आशीर्वाद दे। इस पर स्त्रियो ने सिखाया कि तुम ग्वालिन का भेष धारण कर अपनी सास ननद के पास जाओ और उनके पर पडो। वे आशीर्वाद देगी तो अवश्य तुम्हारे सन्तान होगी।

एक दिन रूपा रानी ग्वालिन के भेष मे सास-ननद के महलो मे गइ। उसने दूध-दही की मटकियॉ सर पर से उतार कर सास-ननद के पर छुए। तब उन्होने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया। इस प्रकार सास ननद का आशीर्वाद लेकर वह चली आइ। भगवान की कृपा से उसको गभ रह गया। अब उसको सास ननद के न आने जाने की चिन्ता हुइ। उसने एक दिन अपने जी की बात राजा से कही। राजा ने कहा कि इस बात की तुम कोइ चिता न करो। म आज ही तुम्हारे महल मे एक घण्टी बँधवाए देता हू। जब तुम्हारे लडका होने लगे अथवा तुमको और कोइ सकट हो तब

तुम डोरी खीचना। घण्टी बजते ही मै तुरत दौडा आऊँगा। यह कहकर राजा ने रानी के महल मे घण्टियो का प्रबन्ध करा दिया। एक दिन रानी ने घण्टी खीच कर राजा की परीक्षा ली । उस समय राजा दरबार मे बठे थे। घण्टी बजते ही वह रनिवास मे गये। उन्हे जब मालूम हुआ कि घटी परीक्षा लेने के लिए बजी थी तब उन्हे बहुत क्रोध आया। वह बिगड कर चले गये। ऐसी दशा मे रूपा रानी को विवश होकर सास ननद की शरण मे जाना पडा। उसने उनसे कहा कि मेरे प्रसव के दिन निकट ह। ऐसा उपाय बताइए जिससे यह सब काम सख से हो जाय। ननद ने उसे धय बँधाते हुए कहा कि जब तुम्हारे पेट मे दद हो तब तुम कोने मे सिर डालकर ओखली पर बठ जाना। रूपा रानी कुछ सीधे स्वभाव की थी। उसने ननद की बात को सच मानकर अक्षरश उसका पालन किया। प्रसव के समय वह ओखली पर बठ गयी। बालक पदा होकर ओखली मे गिर गया और रोन लगा। उसका रोना सनकर सास ननद दौडी आई। उन्ही के साथ रूपा की सौत सिकौली रानी भी आइ। उसने नवजात बालक को उठाकर घरे पर फिकवा दिया और ओखली मे कँकड पत्थर डाल दिये। सास ननद ने आकर रूपा से कहा कि तूने तो कँकड पत्थर जाये ह।

जब राजा को यह समाचार मिला तब वह भी दाडे आये। और कँकड पत्थरो को देखकर आश्चय मे रह गये। वह माता या बहन से न तो कुछ कह सके और न पूछ सके। परन्तु अपन मन मे समझ गये कि यह एक असम्भव-सी बात है। स्त्री के गभ से कँकड पत्थर पैदा नही हो सकते। ऐसा सोच विचार कर राजा चुपचाप बाहर चले गये।

जिस दिन रूपा रानी के गभ से लडका जन्मा उस दिन चत्र सुदी पूर्णिमा थी। जिस घूरे पर लडका डाला गया था, उसी घूरे पर एक कुम्हारिन कूडा डालने आइ।

उसने देखा कि एक सुन्दर बालक घूरे की राख मे पडा खेल रहा ह। वह उसे उठाकर अपने घर ले गइ। उसके कोइ सतान नही थी। इसलिए वह बडे लाड प्यार से उसका लालन पालन करने लगी। लडका जब बडा हुआ तब कुम्हार ने उसके खेलने के लिए एक मिट्टी का घोडा बना दिया। लडका उस घोडे को लेकर नदी के किनारे जाता और उसका मुह पानी मे लगाकर कहा करता—मिट्टी के घोडे पानी पी चे चे चे।

नदी के उस तट पर रनिवास की स्त्रिया नहाने आती थी। लडके का चरित्र देखकर एक दिन एक स्त्री ने कहा— ओ कुम्हार के छोकरे! तू पागल ह क्या? कही मिट्टी का घोडा पानी पीता ह?"

लडके ने उत्तर दिया—"म पागल नही हूँ दुनिया पागल ह। क्या यह भी सम्भव ह कि रानियो के गभ से कॅक्ड पत्थर पदा हो।

लडके की बात सुनते ही स्त्रियो ने समभ लिया कि हो न हो, यही वह लडका ह। उहोने महलो मे जाकर रानी सिकौली को यह समाचार सुनाया कि तुम्हारी सौत का बालक अमुक कुम्हार के घर म ह। रानी ने वहा भी उस बालक को मरवाने का निश्चय करके मान ठान दिया। वह कोप भवन मे मलिन वसन पहन कर लेट रही। जब राजा ने उसके पास जाकर मान का कारण पूछा तब उसने कहा कि जब तक अमुक कुम्हार का बालक जान स न मार डाला जायगा तब तक म अन्न जल ग्रहण नही करूगी।

राजा ने पूछा—'उसका ऐसा अपराध क्या है?"

रानी ने कहा— वह हमारी दासियो को चिढाता ह।"

राजा ने कहा— 'यह अपराध जीव-हत्या के योग्य नहीं ह। हा यदि चाहो तो वह इस गाव से या देश से निकाला जा सकता ह।'

रानी राजी हो गयी। राजा ने कुम्हार के बालक को गाँव से

निकलवा दिया। कुछ दिनो मे कुम्हार का बालक और भी बडा हो गया। तब वह अच्छे अच्छे कपडे पहन कर राजा क दरबार म आने लगा। राजा समझता था कि वह किसी राज-कमचारी का लडका है और राजमन्त्री समझते थे कि वह किसी राजा का सगा सम्बधी राजकुमार ह। इसी कारण उससे कोइ कुछ नही पूछता था। वह नित्य दरबार मे बठकर राज-काज की सब बाते ध्यान म रखता जाता था। राज दरबार के सभी लोग उसके आचरण से प्रसन्न थे।

एक वष राजा वासुकदेव के राज मे जल नही बरसा। तब पडितो ने सलाह दी कि यदि ऐसा रथ चलाया जाय जिसमे राजा रानी कधा देकर बल की तरह चले और कोइ चत्र सुदी पूर्णिमा का उत्पन्न हुआ द्विजातीय बालक रथ को हाके, तो जल बरसेगा। उस समय अवसर पाकर राजकुमार ने कहा कि म पूर्णिमा को उत्पन्न हुआ हू। म रथ भी चला सकता हूँ। युवक की बाते सुनकर रथ चलाने की सब तयारिया की जाने लगी। इसी बीच राजकुमार ने अपनी मा के पास जाकर कहा कि जब तुमसे रथ के सम्बध मे कोइ काम करने को कहा जाय तब तुम कहना कि पहले हमारी जेठानी करे, तब हम करगी। इस तरह हर काम म तुम उसी को आगे रखना। रूपा रानी राजी हो गयी।

जब रथ चलाने का समय आया तब पजूनकुमार की माँ रूपा रानी से कहा गया कि जगह लीपो। वह बोली कि पहले जेठानी लीपे, तब म लीपूगी। राजा की आज्ञा से पहले सिकौली रानी ने लीपा, तब पीछे से रूपा ने भी लीप दिया। जब रथ मे कधा देन का समय आया, तब भी रूपा रानी ने कह दिया कि पहले जेठानी कधा दे, तब मैं दूगी। लाचार सिकौली रानी ने रथ मे कधा दिया। उस समय खूब धूप निकली हुइ थी। राजकुमार ने जमीन मे गोखरू के काटे बिखेर दिये थे। एक ओर उसके प व मे काटे धसते थे, दूसरी ओर राजकुमार उसकी पीठ पर छडियाँ मारता

था। इस प्रकार जब रथ सीमा तक पहुँच गया तब वह उससे अलग हुइ।

अब रूपा रानी की बारी आइ। उसने ज्योही कन्धा दिया त्योही आसमान मे बादल घिर आये और माग के गोखरू हट गये। इसलिए रूपा रानी को कुछ भी कष्ट नही हुआ। रथ चलाने का काम पूरा होते ही जल बरसने लगा। सब को बडी प्रसन्नता हुइ। उसी समय पजूनकुमार ने अपनी माता के पास जाकर उसके चरण छुए। तब सबने जान लिया कि यही पजूनकुमार ह। राजा ने भी अपने पुत्र को पहचान कर उसे गले मे लगा लिया।

बाहर सबसे मिल मिला कर राजकुमार रनिवास मे गया। उसने अपनी आजी (दादी) मे कहा—'दादी! हम आये, क्या तुम्हारे मन भाये?'

इस पर बुढिया ने जवाब दिया—'बेटा! नाती पोते किसे बुरे लगते ह!

पजूनकुमार ने कहा— तुमने मेरे मन की बात नही कही। तुम्हारी बात निरथक और अधूरी ह। इस कारण म शाप देता हू कि तुम अगले जन्म मे दहली होगी।

फिर वह फुआ के पास गया और बोला—"फुआ री फुआ! हम आये तुम्हारे मन भाये या न भाये?"

उसने कहा—"भतीजे किसे बुरे लगते हैं!"

कुमार ने कहा—तुमने भी मेरे मन की बात नही कही। तुमने ऊपर से सफाइ दिखाइ। पर तुम्हारा दिल मेरी ओर से साफ नही ह। इस कारण तुम पुताडी (चौका लगाने का मिट्टी का बतन) होगी।

इसके बाद वह सौतेली मा के पास गया और बोला—माता! हम आये क्या तुम्हारे मन भाये?"

उसने जवाब दिया—'आये सो अच्छे आये, जेठी के हो या लहुरी के, आखिर हो तो लडके ही।"

तब राजकुमार ने कहा—"तुमने भी मेरे मन की बात नहीं कही। तुमने दो रुखी बातें कही। इस कारण तुम घुघची (गुजा) होगी, जो आधी काली आधी लाल होती है।"

अन्त में राजकुमार अपनी मा के पास गया और बोला—'माता हम आये। तुम्हारे मन भाये कि न भाये?"

उसने जवाब दिया—"बेटा! भले आये। हमने न पाले न पोसे, न खिलाये न पिलाये, हम क्या जाने कसे आये?'

उसी समय वह किशोर-वय राजकुमार नवजात शिशु के रूप में होकर 'कहाँ कहा' रुदन करने लगा। मा उसको गोद में ले कर दूध पिलाने लगी। जब राजा को यह समाचार मिला तब उन्होंने शिशु को देखकर प्रसन्नता प्रकट की। आप से आप तोपें दगने लगीं और सारे राज में आन[illegible] [illegible] बजने लगी। कहते ह, पजूनो पूनो की पूजा का प्रचलन लोक में उसी दिन से हुआ है।

१७ अक्षय तृतीया व्रत

वशाख मास के शुक्ल पक्ष की तीज को अक्षय ततीया कहते ह। इसमे पूर्वाह्न व्यापिनी अर्थात् दोपहर के पूव जो तिथि हो उसे ही लेना चाहिए। जो मनुष्य वशाख शुक्ल तृतीया का पराह्न व्यापिनी लेता ह उसके हव्य और कव्य को पितर ग्रहण नहीं करते। यह दिन अ[illegible] [illegible] है। इस दिन होम जप तप, दान, स्नान आदि अक्षय रहते ह। इसीलिए इसे अक्षय ततीया कहते हैं। जो मनुष्य इस दिन लड्डू और पँखा दान करता ह वह स्वग लोक को प्राप्त करता ह और जो मनुष्य इस दिन गगा स्नान करता ह वह अवश्य ही सब पापो से मुक्त हो जाता ह।

कथा—एक समय राजा युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—"हे भगवन! कृपाकर आप अक्षय ततीया का माहात्म्य वणन कीजिए।"

श्रीकृष्ण भगवान बोले—'हे राजन ! सुनो। इस पुण्य तिथि में पूर्वाह्न मे स्नान, जप, तप, होम, स्वाध्याय पित तपण और दान आदि जो कुछ भी किया जाता ह, वह अक्षय पुण्यफल का दाता होता है। इस तृतीया को 'युगादि ततीया' भी कहते ह, क्योकि इसी दिन से सतयुग का आरम्भ होता ह"

'हे युधिष्ठिर ! पूवकाल मे एक अत्य त निधन, सत्यवादी, व्रती और देव ब्राह्मणो का पूजन करने वाला तथा श्रद्धालु वैश्य था। वह बहु-कुटुम्बी होने के कारण सदव व्याकुल चित्त रहा करता था। उसने वैशाख शुक्ल पक्ष की अक्षय ततीया के माहात्म्य मे सुना कि इस तिथि मे दान, जप हवन और स्नानादि से महत्फल प्राप्त होता है। उस वैश्य ने अक्षय ततीया के दिन प्रात काल गगाजी मे स्नान करके विधिपूवक देवताओ और पितरो का पूजन किया। पुन घर आकर उसने ओले के लडडू, पँखा, जल भरे हुए घट, जौ, गेहू और लवण आदि तथा सत्तू, दही, चावल और गुड आदि खाद्य पदार्थो का और स्वण, वस्त्रादि, दिव्य पदार्थों का भक्तिपूवक दान किया। स्त्री के निषेध करने पर, कुटुम्ब चिता से चिंतित होने और व द्धावस्था के कारण अनेक रोगा से ग्रसित होने पर भी वह धम-कमसे पराङ्मुख नही हुआ। इस कारण हे राजन् ! समय पाकर उस ब्राह्मण का आगामी ज म कुशावती नगरी मे एक क्षत्रिय के घर मे हुआ। पूव-सचित पुण्य के प्रभाव से वह बडा धनाढ्य और प्रतापी हुआ। सब प्रकार का वभव पा कर भी उसकी बुद्धि धम से विचलित नही हुइ। प्रत्युत उसने और भी अधिक धम सचय किया। यह सब अक्षय तृतीया का ही प्रभाव था।"

१८. आसमाई का पूजन

वैशाख, आषाढ और माघ, इन्ही तीनो महीनो की किसी तिथि मे रविवार के दिन आसमाइ की पूजा होती ह। यह पूजा किसी काय की सिद्धि के लिए की जाती है। किसी किसी के यहाँ साल मे एक दो अथवा तीन बार भी पूजा होती है। बाराजीत (बारह आदित्य) और आसमाइ (आशा पूण करने वाली शक्ति) की पूजा एक साथ होती है। प्राय लडके की माँ यह व्रत करती है। वह व्रत के दिन अलोना भोजन करती है।

एक पान पर सफेद च दन से एक पुतली लिखी जाती है। उसी पर चार गँठीली कौडिया रखकर उसकी पूजा की जाती है। चौक पर कलश की स्थापना की जाती है। उसी के समीप एक पटा पर ऊपर कहे अनुसार आसमाइ की स्थापना की जाती है। पडित पचाग पूजन कराकर कलश का तथा आसमाइ का विधिवत पूजन कराता है। पूजन के अ त मे पडित बारह गाठवाला एक गडा व्रतवाली को देता है। उसी गडे को हाथ मे पहन कर आसमाइ और बाराजीत को भोग लगाया जाता ह। पूजा के अन्त में जब पूजा की सब सामाग्री जल मे सिराई जाती है तब उक्त गडा भी सिरा दिया जाता है। लेकिन पूजावाली कौडिया रख ली जाती ह। वे ही फिर पूजा के काम आती ह। यदि उनमे से कोइ कौडी खो जाय तो उसके बजाय नइ कौडी पूजा मे रख दी जा सकती ह। इस पूजन के सम्ब ध म जो कथा कही जाती है, वह इस प्रकार ह—

कथा—एक राजा था। उसके एक ही राजकुमार था। माता पिता का बहुत लाडला होने के कारण वह बहुत ऊधम मचाया करता था। प्राय कुओ या पनघटो पर बैठ जाता और जब स्त्रियाँ जल भर कर घर को चलने लगती तब गुलेल का गुल्ला मारकर उनके घडे फोड डालता था। लोगो ने राजा के

पास जाकर राजकुमार के आचरण की शिकायत की। राजा ने यह आज्ञा निकाल दी कि कोइ मिट्टी का घडा लेकर पानी भरने न जाया करे। स्त्रिया ताँबे पीतल के घडे से पानी ले जाने लगी। यह देखकर राजकुमार मिट्टी के बजाय लोहे और शीशे के गुल्ले मार-मार कर उनके घडे फोडने लगा। ऐसी दशा मे लोगो ने एकत्र होकर राजा से फिर शिकायत की।

राजा ने सोचा कि यदि प्रजा भाग जायगी तो म राज किस पर करूँगा। कुँवर चला जायगा तो और हो जायगा। इसलिए प्रजा को रखकर कुवर को निकाल देना उचित ह। यह सोचकर राजा ने प्रजा को समझा बुझाकर शान्त किया।

एक दिन राजकुमार शिकार खेलने गया। अवसर पाकर राजा ने अपने हस्ताक्षर सहित एक आज्ञा पत्र ड्योढी के सिपाहियो को देकर कहा कि जब राजकुमार शिकार से लौटकर महल मे जाने लगे तब यह पर्चा तुम उसको दिखा देना। इसके कुछ देर बाद राजकुमार लौटा। उस समय सिपाहियो ने उसे देश निकाले की आज्ञा का पर्वाना दिया। पर्वाना पाकर वह उल्टे परो राज द्वार से जगल की ओर चला गया।

राजकुमार घोडा बढाता हुआ चला जा रहा था कि उसे कुछ दूरी पर चार बुढिया सामने माग मे बठी हुइ दिखाइ दी। उसी समय अनायास राजकुमार का चाबुक गिर गया। उसे उठाने के लिए वह घोडे पर से उतरा और फिर सवार होकर आगे बढा। बढियो ने समझा कि इस पथिक ने घोडे से उतर कर हम लोगो का अभिवान्न किया ह। इसलिए जब वह उनके पास पहुँचा तब उ होने उससे पूछा—'यात्री! सच बताओ, तुमने हम लोगो मे से किसको घोडे से उतर कर प्रणाम किया था?"

राजकुमार बोला कि तुम सब मे जो बडी ह, मने उसी को प्रणाम किया था। उन्होंने कहा कि तुम्हारा यह उत्तर ठीक नही है। हम सब समान आयु की ह। अपने-अपने स्थान पर सब

बडी ह। तुमको किसी एक को बतलाना चाहिए। राजकुमार न उनका पहले नाम पूछा।

एक बढिया ने कहा— 'मेरा नाम भखमाइ है।"

राजकुमार ने कहा—"तुम्हारी एक स्थिति नही है। तुम्हारा कोइ मुख्य उददेश्य या लक्ष्य भी नही है। किसी की भूख जैसे अच्छे भोजनो से शान्त होती ह, वसे ही रूखे सखे टकडो से भी शान्त हो जाती है। इसलिए मने तुमको प्रणाम नही किया।"

दूसरी ने कहा— मेरा नाम प्यासमाइ ह।'

राजकुमार ने जवाव दिया—"जो हाल भूखमाइ का है, वही तुम्हारा भी ह। तुम्हारी शान्ति जैसे गगाजल से हो सकती ह वैसे ही पोखरे के ग दे जल से भी हो सकती ह। इसलिए मने तुमको भी प्रणाम नही किया।"

तीसरी बोली— 'मेरा नाम नींदमाइ ह।"

राजकुमार ने कहा—"तुम्हारा प्रभाव या स्वभाव भी उक्त दोनो की तरह लक्ष्यहीन ह। पुष्पो की शया पर जसे नींद आती ह, वसे ही खेत क ढेलो पर भी आती है। इसलिए मने तुमको भी प्रणाम नही किया।"

अ त मे चौथी बुढिया ने कहा—"मेरा नाम आसमाइ ह।"

तब राजकुमार बोला— जसे ये ताना मनुष्य को विकल कर देने वाली ह, वसे ही तुम उसकी विकलता को नाश कर उसे शान्ति देनेवाली हो। इसलिए मने तुम्ही को प्रणाम किया ह।"

इससे प्रसन्न होकर आसमाइ ने राजकुमार को चार कौडिया देकर आशीर्वाद दिया कि जब तक ये कौडिया तुम्हारे पास रहेगी, तब तक कोइ भी तुमसे युद्ध मे या जुए मे न जीत सकेगा। तुम जिस काम मे हाथ लगाओगे उसी मे तुमको सिद्धि प्राप्त होगी। तुम्हारी जो इच्छा होगी या यत्न करते हुए तुम जिस वस्तु की प्राप्ति की आशा करोगे, वही तुमको प्राप्त होगी।" यह सुनकर राजकुमार वहा से चल दिया।

राजकुमार चलता चलता कुछ दिनो के बाद एक राजा के नगर मे पहुँचा। उस राजा को जुआ खेलने का व्यसन था। इस कारण उसके नौकर-चाकर प्रजा परिजन सभी को जुआ खेलने का अभ्यास पड गया था। राजा के कपडे धोने वाला धोबी भी जुआरी था। वह नदी के जिस घाट पर कपड धो रहा था, उसी घाट पर राजकुमार अपने घोडे को नहलाने गया। धोबी उससे बोला—'यात्री! पहले मेरे साथ दो हाथ खेल लो। जीत जाओ तो घोडे को पानी पिलाकर चले जाना और राजा के सब कपडे जीत मे ले लेना और जो हार जाओ तो घोडा देकर चले जाना। फिर म इसे पानी पिलाता रहूँगा।"

राजकुमार को तो आसमाइ के वरदान का बल था। वह घोडे की बाग थामकर खेलने बठ गया। थोडी ही देर मे राजकुमार ने राजा के सब कपडे जीत लिये। उसने कपडे तो न लिये, पर घोडे को पानी पिलाकर वह चला गया।

धोबी शाम को जब महल मे गया तब उसने राजा से कहा कि एक ऐसा खिलाडी यात्री इस नगर मे आया ह, जसा आज तक मने न देखा न सुना। कोइ उससे जुए मे जीत ही नही सकता। यह सुनकर राजा ने उस यात्री के साथ जुआ खेलने की इच्छा प्रकट की। दूसरे दिन धोबी राजकुमार को राजा के पास लिवा ले गया। दोनो खेलने लगे। थोडी ही देर मे राजकुमार ने राजा का राज पाट सब जीत लिया। राजा ने हार स्वीकार कर ली। तब अपने मन्त्री, मित्र मुसाहब सबको इकटठा करके राजा ने सलाह ली कि अब क्या करना चाहिए? किसी ने कहा कि उसे मार डालना उचित है। किसी ने कहा कि राज्य का एक अश देकर उसे राजी कर लेना चाहिए। राजा के पिता के समय का एक पुराना मन्त्री था। वह प्राय घर मे रहता था। उसने जब यह समाचार सुना तब वह बिना बुलाये ही दरबार मे गया। राजा ने एकान्त मे बठकर उसका मत लिया। वद्ध ने कहा कि विजयी यात्री को अपनी बेटी

ब्याह दीजिए। वह आपका लडका हो जायगा। तब आप ही राज्य पर दावा न करेगा। यदि वह रह जायगा और योग्य होगा तो उसे प्रजा आपका उत्तराधिकारी मान लेगी। यदि अयोग्य होगा, तो जैसा होगा वसा व्यवहार उसके साथ किया जायगा।

राजा ने वद्ध की बात मानकर राजकुमार को अपनी बेटी ब्याह दी। राजकुमार कोइ साधारण मनुष्य तो था नही। वह भी राजा का लडका था। उसके आचरण मे राजा को बडी प्रसन्नता हुइ। राजा ने सलाह देने वाले वद्ध को बहुत इनाम दिया। विवाह हो जाने के बाद राजकुमार को अलग महल मे डेरा दिया गया। राजा की कन्या भी अपने पति के साथ उस महल मे रहने लगी। वह बडी ही सदाचारिणी और विनयशीला थी। उस घर मे सास ननदे तो कोइ थी नही जिनकी आज्ञा का वह पालन करती। इस कारण उसने कपडे की गुडिया बनाकर रख ली। जब वह श्रृङ्गार करके निश्चिन्त होती तब वह उन गुडियो को सास-ननद मानकर उनके पर पडती और आचल पसार कर उनका आशीर्वाद लेने के बाद पति के समीप जाती थी।

एक दिन राजकुमार ने उसे गुडियो के पर पडते देख लिया। उसने पूछा कि यह तुम क्या करती हो ? राजकुमारी ने उत्तर दिया कि म स्त्री धम का निर्वाह करती हूँ। यदि मै आपके घर मे होती तो नित्य सास ननद के पैर पडती और उनसे आशीर्वाद लेती। परन्तु यहाँ सास-ननद कोइ नही है, इसलिए मैं इन गुडियो को सास ननद मानकर अपना धम निर्वाह करती हूँ। यह सुन कर राजकुमार ने कहा कि यदि ऐसी बात ह तो गुडियो के पैर पडने की क्या आवश्यकता ह ? तुम्हारे परिवार मे तो सभी है। यदि तुम्हारी यही इच्छा ह तो अपने घर चलो। राजकुमारी तैयार हो गयी। राजा को जब यह समाचार मिला तब उन्होने उनकी यात्रा का सब प्रबन्ध करके बेटी की विदा कर दिया। राजकुमार नई बहू को लेकर, भीड भाड के साथ कुछ दिनो मे अपन पिता की

राजधानी के पास पहुँचा। इधर जिस दिन से राजकुमार चला गया था, उसी दिन से राजा रानी दोनो उसके बिछोह मे रोते-रोते अन्धे हो गए थे। राजकुमार की सेना देखकर लोगो ने राजा को सूचना दी कि कोइ बडा राजा चढ आया है। राजा गल मे अँगौछी डालकर उससे मिलने के लिए तयार हो गया। इसी समय राजकुमार ने महल के द्वार पर आकर राजा को अपने आने की सूचना दी। राजकुमार के आने की सूचना पाकर राजा-रानी प्रसन्न हो गये। उन्होने कुलाचार के अनुसार पहले अपनी बहू को महल मे बुलाया। महल मे आकर बहू ने सास के पैर छुए। सास ने आशीर्वाद दिया। कुछ दिनो के बाद उस राज-कन्या के गभ से एक अति सुन्दर बा[illegible] हुआ। इसी बीच राजा-रानी की दष्टि भी ठीक हो गइ। इस प्रकार जिस परिवार मे अधकार छाया था उस परिवार मे आसमाइ की कृपा से आनन्द की वर्षा होने लगी। कहते ह उसी समय से लोक मे आसमाईं की पूजा का रिवाज़ चला।

१९. नृसिह चतुर्दशी

वशाख शुक्ल चतुदशी को भगवान नसिह का ज म हुआ था। इसलिए इस तिथि को नृसिह चतुदशी कहते ह। इस दिन प्रदोष व्यापी व्रत करना चाहिए। यदि दैवयोग से किसी दिन पूव विद्धा मे शनि स्वाति सिद्ध और वणिज हो तो उसी दिन व्रत करना उत्तम होता ह। इसे सब वण के लोग कर सकते ह। व्रती को मध्याह्न होने पर स्वच्छ जल मे वदिक मत्रो से स्नान करना चाहिए। इसके पश्चात नृसिह का स्मरण करके गोबर से पथ्वी को शुद्ध करना चाहिए। फिर एक कलश मे ताँबा और रत्न डाल कर उस पर अष्ट दल कमल बनाना चाहिए। कलश पर चावलो से भरकर एक डलिया रखनी चाहिए और नसिह की स्वण–

मूर्ति को पचामृत म स्नान कराकर उस पर स्थापन एव पूजन करना चाहिए। ब्राह्मणो को पथ्वी, गाय तिल, स्वण और वस्त्रो सहित शैया दान मे देना चाहिए। जो मनुष्य इस प्रकार नसिह का व्रत करता ह उसके सपूण पाप नष्ट हो जाते ह।

कथा—नसिह भगवान शक्ति और पराक्रम के प्रतीक ह। विजयनगर के परम पराक्रमी राजाओ ने नसिह की मूर्ति को ही अपना राज्य चिह्न बनाया था। कहते ह, प्राचीन काल मे कश्यप नाम के एक राजा थे। उनकी पत्नी का नाम था दिति। दिति के दो पुत्र हुए—एक हिरण्याक्ष और दूसरा हिरण्यकशिपु। दोनो बडे पराक्रमी थे। हिराण्याक्ष को वाराह अवतार धारण कर भगवान विष्णु ने मारा था। इससे क्रुद्ध होकर भाइ की मत्यु का बदला लेने के लिए हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा और महादेव की पूजा की। उसकी पूजा से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उसे अजेय होने का वरदान दिया। ऐसा वरदान पाकर वह अत्याचार करने लगा। काला-तर मे उसकी पत्नी, जम्भासुर की कन्या कायुध, के गभ से अनुह्लाद सह्लाद प्रह्लाद नामक छ पुत्र हुए। प्रह्लाद भगवान का भक्त था। उसने अपने पिता का कहना नही माना। अपने पिता के अत्याचारो से दु खी होकर उसने अपनी रक्षा के लिए भगवान् से प्राथना की। नसिह के रूप मे भगवान ने उसके पिता हिरण्यकशिपु का वध किया। पिता की मत्यु के पश्चात् प्रह्लाद ने भगवान से प्राथना की और पूछा कि मेरी प्रीति आप मे कसे हुइ? नसिंह भगवान न कहा कि प्राचीन काल मे तुम वासुदेव नाम के ब्राह्मण थे और एक वेश्या से प्रेम करते थे। वह वेश्या चतुदशी का व्रत करती थी। अत उसी की सगति मे तुमने भी मेरा व्रत किया और इसी कारण तुम्हारी प्रीति मुझमे हुइ। जो मनुष्य मेरे व्रत को करते ह वे पाप मुक्त होकर वकुण्ठ-वास के अधिकारी हो जाते ह।

२०. वट-सावित्री-व्रत

ज्येष्ठ कृष्ण तेरस को प्रात काल स्वच्छ दातून स द त-धावन कर उसी दिन दोपहर के बाद नदी या तालाब के विमल जल मे तिल और आमले के कल्क से केशो को शुद्ध करके स्नान करे और जल से वट के मूल का सेवन करे। सूत रोगिणी और ऋतु मती स्त्री ब्राह्मण के द्वारा भी समग्र व्रत का यथाविधि कराने से उसी फल को प्राप्त होती है। यह व्रत त्रयोदशी से पूर्णिमा अथवा अमावस्या तक करना चाहिए।

वट के समीप जाकर जल का आचमन लेकर कहे—"ज्येष्ठ मात्र कृष्ण पक्ष त्रयोदशी अमुक बार मे मेरे पुत्र और पति की आरोग्यता के लिए एव ज म ज मा तर मे भी विधवा न होऊँ इसलिए सावित्री का व्रत करती हूँ। वट के मूल मे ब्रह्मा, मध्य मे जनादन अग्रभाग मे शिव और समग्र मे सावित्री ह। हे वट ! अमत के समान जल से मै तुमको सीचती हूँ।" ऐसा कहकर भक्तिपूवक एक सूत के डोरे से वट को बाधे और ग ध, पुष्प तथा अक्षत से पूजन करके वट एव सावित्री को नमस्कार कर प्रद-क्षिणा करें और घर पर आकर हल्दी तथा च दन से घर की भीत पर वट का वक्ष लिखे। हस्तलिखित वट के समीप बैठकर पूजन करे और सकल्पपूवक प्राथना करे—'तीन रात्रि तक लघन करके, चौथे दिन च द्रमा को अघ देकर तथा सावित्री का पूजन कर, यथाशक्ति मिष्ठान्न से म ब्राह्मणो को भोजन करा कर पुन भोजन करूँगी। अत हे सावित्री ! तू मेरे इस नियम को निर्विघ्न समाप्त कर।

वट तथा सावित्री का पूजन करने के बाद सि दूर, कुमकुम और ताम्बूल आदि से प्रतिदिन सुवासिनी स्त्री का भी पूजन करे। पूजा के समाप्त हो जाने पर व्रत की सिद्धि के लिए ब्राह्मण को

फल, वस्त्र और सौभाग्य द्रव्यो को बास के पात्र मे रख कर दे और प्राथना करे।

कथा—मद्रदेश में अश्वपति नामक एक ज्ञानी राजा था। समग्र वैभव होने पर भी राजा सतानहीन था। इस कारण दम्पति ने पुत्र के लिए सावित्री का जप किया। उस जप यज्ञ के प्रभाव से स्वय सावित्री ने शरीर धारण कर राजा और रानी को दशन दिया और आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम्हारे भाग्य मे पुत्र तो नही है, पर दोनो कुलो की कीर्ति पताका फहराने वाली एक कया अवश्य होगी। उसका नाम मेरे नाम पर रखना। यह कह कर सावित्री अतर्द्धान हो गइ।

कुछ काल के उपरात रानी के गभ से साक्षात सावित्री का जन्म हुआ और नाम भी उसका सावित्री ही रखा गया। जब सावित्री युवती हुइ, तब राजा ने सावित्री से कहा कि अब तुम विवाह के योग्य हो गइ हो। अपने योग्य वर तुम स्वय खोज लो। म तुम्हारे साथ अपने वद्ध सचिव को भेजता हूँ। जब सावित्री वद्ध सचिव के साथ वर खोजने गइ हुइ थी, तब एक दिन मद्राधिपति से मिलने अकस्मात नारदजी आये। इतने मे ही वर पसन्द करके सावित्री भी आ गइ और नारदजी को देखकर प्रणाम करने लगी। कया को देखकर नारदजी ने राजा से पूछा कि सावित्री के लिए अभी तक आपने वर ढूँढा या नही ?

राजा ने कहा कि वर के लिए मने स्वय सावित्री को भेजा था और वह वर को पसद करके ही आई है। यह सुनकर नारदजी ने सावित्री से पूछा कि तुमने किस वर से विवाह करना निश्चय किया ह ?

सावित्री हाथ जोडकर अति नम्रता से बोली कि द्युमत्सेन का राज्य रुक्मी ने हरण कर लिया है, और वह अधा होकर रानी के साथ वन मे रहता ह। उसके इकलौते पुत्र सत्यवान ही को मने अपना पति स्वीकार किया ह।

सावित्री के वचन सुनकर अश्वपति से नारदजी ने कहा कि आपकी कन्या ने बडा परिश्रम किया है। सत्यवान वास्तव मे बडा गुणवान और धर्मात्मा ह। वह स्वय सत्य बोलने वाला ह और उसके माता पिता भी सत्य ही बोलते ह। इसी कारण उसका नाम सत्यवान रक्खा गया ह। सत्यवान रूपवान, धनवान गुणवान और सब शास्त्रो म विशारद ह। विशेष क्या कहूँ, उसके तुल्य ससार मे दूसरा कोइ मनुष्य नही ह। जिस प्रकार रत्नाकर रत्नो का कोष ह, उसी प्रकार सत्यवान सदगुणो का कोष है। परन्तु दुःख से कहना पडता ह कि उसमे एक दोष भी बडा भारी है। अर्थात वह एक वर्ष की समाप्ति पर मर जायगा।

सत्यवान अल्पाय ह, यह सुनते ही अश्वपति के सब विचार बालू की भीत की तरह नष्ट हो गए। उन्होने सावित्री से कहा कि ऐसी दशा मे तुमको और वर ढूढना चाहिए। क्षीणायु के साथ विवाह करना कदापि श्रेयस्कर नही ह।

पिता के इस कथन को सुनकर सावित्री ने कहा कि अब मैं शारीरिक सम्बन्ध के लिए तो क्या, मन से भी अन्य पति की अभिलाषा नही करती। जिसको मने मन से स्वीकार कर लिया है, वही मेरा पति होगा, अन्य नही। कोइ भी सकल्प प्रथम मन मे आता ह और फिर वाणी म। वाणी के पश्चात् करना ही शेष रहता है—चाहे वह शुभ हो या अशुभ। इसलिए अब म दूसरे को कसे वरण कर सकती हूँ? राजा एक ही बार कहता है पण्डित एक ही बार प्रतिज्ञा करते ह, और कन्या तुमको दी, यह भी एक ही बार कहा जाता ह। इसलिए चाहे वह दीर्घायु हो, चाहे अल्पायु, वही मेरा पति है। अब म अन्य पुरुष को तो क्या, तैंतीस कोटि देवताओ के अधिपति इन्द्र को भी अगीकार न करूँगी। सावित्री के इस निश्चय को सुनकर नारदजी ने अश्वपति से कहा कि अब तुमको सावित्री का विवाह सत्यवान

के ही साथ कर देना चाहिए। इतना कहकर नारदजी अपने स्थान को चले गये।

राजा अश्वपति विवाह का समस्त सामान तथा कन्या को लेकर वृद्ध सचिव समेत उसी वन मे गये, जहाँ राजश्री से नष्ट, अपनी रानी और राजकुमार समेत एक वृक्ष के नीचे राजा द्युमत्सेन निवास करते थ। सावित्री सहित अश्वपति ने राजा द्युमत्सेन के चरणो को छूकर अपना नाम बताया। द्युमत्सेन ने आगमन का कारण पूछा। तब अश्वपति बोले कि मेरी पुत्री सावित्री का आपके राजकुमार सत्यवान के साथ विवाह करने का विचार ह। इसमे मेरी भी सम्मति ह। इस कारण विवाहोचित सम्पूण सामग्री लेकर म आपकी सेवा मे आया हूँ। राजा की बात सुनकर द्युमत्सेन कुछ उदास हो गये। उन्होने कहा कि आप तो राज्यासीन राजा ह और म राज्य भ्रष्ट हूँ। तिसपर भी रानी और हम दोनो अधे ह वन मे रहते ह, और सवथा निधन भी है। आपकी कया वनवास के दुखो को न जानकर ही ऐसा कहती ह।

अश्वपति ने कहा कि मेरी कन्या ने इन सब बातो पर विचार कर लिया ह। वह स्पष्ट कहती ह कि जहाँ मेरे श्वसुर और पतिदेव निवास करते है, वही मेरे लिए वैकुण्ठ है।

सावित्री का इस प्रकार दढ प्रण सुनकर द्युमत्सेन ने विवाह स्वीकार कर लिया। शास्त्र-विहित विधि से सावित्री का विवाह करके अश्वपति तो अपनी राजधानी को चले गये और उधर सावित्री सत्यवान को पाकर सुखपूवक श्वसुर गह मे रहने लगी।

नारदजी ने जो भविष्य कहा था सावित्री उससे बेखबर नही थी। वह एक एक दिन गिनती जाती थी। उसने जब पति का मरणकाल समीप आते देखा, तब तीन दिन प्रथम ही से वह उपवास करने लगी। तीसरे दिन उसने पितदेवो का पूजन किया। वही दिन नारदजी का बतलाया हुआ दिन था। उस दिन जब

सत्यवान नियमानुसार कुल्हाडी और टोकरी हाथ मे लेकर वन को जाने के लिए तैयार हुआ, तब सावित्री भी अपने सास-ससुर की आज्ञा लेकर उनके साथ वन को चली गइ।

वन मे जाकर सत्यवान ने फल तोडे। इसके बाद वह लकडी काटने के लिए एक वक्ष पर चढ गया। वक्ष के ऊपर ही सत्यवान के मस्तक मे पीडा होने लगी। वह वक्ष से उतरकर और सावित्री की जाघ पर अपना सिर रखकर लेट गया। थोडी देर के बाद सावित्री ने देखा कि अनेक दूतो के साथ हाथ मे पाश लिए हुए यमराज सामने खडे ह। प्रथम तो यमराज ने सावित्री को इश्वरीय नियम यथावत् कहकर सुनाया। तदनन्तर वह सत्यवान के अगुष्ठ प्रमाण जीव को लेकर दक्षिण दिशा की ओर चले गये। सावित्री भी यमराज के पीछे चली। यमराज के पीछे पीछे जब सावित्री बहुत दूर तक चली गइ तब यमराज ने उससे कहा—"हे पति-परायणे! जहा तक मनुष्य मनुष्य का साथ दे सकता ह, वहाँ तक तुमने पति का साथ दिया। अब मनुष्य के कत्तव्य से आगे की बात ह। अत तुमको घर लौट जाना चाहिए।"

यह सुनकर सावित्री बोली—"यमराज! जहा मेरा पति जायगा, वही मुझे भी जाना चाहिए। यही सनातन धम ह। पतिव्रत के प्रभाव के कारण आपके अनुग्रह से कोइ भी मेरी गति को रोग नही सकता।'

सावित्री की धम और उपदेशमयी वाणी सुनकर यमराज ने उससे वर मागने के लिए कहा।

यमराज की बात सुनकर सावित्री ने कहा कि मेरे श्वसुर वन मे रहते ह और वे अध ह। अत आपकी कृपा से उनको दिखाइ देने लगे, यह वरदान चाहती हूँ। यमराज ने 'तथास्तु' कहकर उसे लौट जाने की सलाह दी।

यमराज के इस कृपापूण आशय को समझकर सावित्री बोली—'भगवान! जहा मेरे पतिदेव जाते हो, वहा उनके पीछे-

पीछे चलने मे मुझको कोइ कष्ट या श्रम नही हो सकता। एक तो पति-परायण होना मेरा कत्तव्य ह। दूसरे आप धमराज हैं परम सज्जन ह अत सत्पुरुषो का समागम भी थोडे पुण्य का फल नही है।"

सावित्री के ऐसे धम तथा श्रद्धा-युक्त वचन सुनकर यमराज ने पुन कहा—'सावित्री! तुम्हारे वचनो को सुनकर मुझको बडी प्रसन्नता हुइ। इसलिए तुम चाहो तो एक वरदान मुझसे और भी माग सकती हो।"

यह सुनकर सावित्री बोली—"बुद्धिमान द्युमत्सेन का राज्य चला गया है। वह उनको पुन मिल जाय और उनको सदैव धम मे प्रीति रहे। यही मेरी प्राथना ह।"

यमराज ने 'तथास्तु' कहकर लौट जाने के लिए उससे प्राथना की पर वह न मानी और उनके पीछे ही चलती रही। अन्त मे उन्होने उसे तीसरा वर देने की इच्छा प्रकट की। उस समय सावित्री ने पित कुल की भलाइ को लक्ष्य मे रखत हुए सौ भाइ होने का वरदान मागा। यमराज ने इस पर भी तथास्तु कहकर सावित्री को समझाया, परन्तु सावित्री अडिग रही।

सावित्री की पति भक्ति और निष्ठा देखकर यमराज द्रवीभूत होकर बोले—"हे पतिव्रते! तुम ज्यो ज्यो मनोनुकूल धमयुक्त अच्छे पदो से अल्कृत और गभीर युक्तिपूण भाषण करती हो त्यो-त्यो तुममे मेरी उत्तम प्रीति बढती जाती ह। अत तुम सत्यवान के जीवन को छोडकर एक वर और भी मुझसे माग सकती हो।

श्वसुर कुल और पित कुल का कल्याण हो चुकने के बाद अब अपनी भलाइ का प्रश्न शेष था। परन्तु पति-परायण स्त्री को अपने पति की आयु-वद्धि के अतिरिक्त और क्या मागने की इच्छा हो सकती है, यह सोचकर सावित्री ने सत्यवान से सो पुत्रो का वरदान म.गा। इस अन्तिम वरदान को देते हुए

यमराज ने सत्यवान को अपन पाश से मुक्त करके सावित्री स कहा कि सत्यवान से तुमको अवश्य सौ पुत्र होगे।

वरदान देकर यमराज अदश्य हो गये। सावित्री वट-वृक्ष के पास आइ। वट वक्ष के नीचे सत्यवान के मत शरीर मे जीव का सचार हुआ और वह उठकर बठ गये। सावित्री ने उसे सम्पूण वत्तान्त सुनाया और फिर वे दोनो आश्रम की ओर चले गये। सत्यवान क माता पिता की आखे खुल गयी थी और वे पुत्र वियोग से दुखी हो रहे थे। इतने मे सावित्री और सत्यवान भी आ पहुँचे। समस्त देश मे सावित्री के अनुपम व्रत की बात फैल गइ। राज्य के लोगो ने महाराज द्युमत्सेन को ले जाकर गजमिहामन पर बिठाया। सावित्री के पिता राजा अश्वपति को भी यमराज के वरदान के अनुसार सौ पुत्र प्राप्त हुए। सावित्री और सत्यवान ने शत पुत्र युक्त होकर वर्षो तक राज किया और तब वे बकुण्ठ वासी हुए।

प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री को यह व्रत अवश्य करना चाहिए।

२१ गंगा-दशहरा

ज्यष्ठ शुक्ल दशमी को गगा दशहरा कहते ह। इस व्रत का विधान स्कन्द पुराण मे और गङ्गावतरण की कथा वाल्मीकि रामायण मे लिखी ह।

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी सम्वत्सर का मुख ह। इसमे स्नान और दान करना चाहिए। प्रथम तो गङ्गा स्नान ही का माहात्म्य विशेष ह। यह न हो सके तो किसी भी नदी मे तिलोदक देने का विधान है। ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को यदि सोमवार हो और हस्त नक्षत्र हो तो यह तिथि सब पापो को हरण करणे वाली होती है। इस तिथि पर बुधवार के दिन हस्त नक्षत्र मे गङ्गाजी भूतल पर अवतीण हुइ थी। इसी कारण यह तिथि महान पुण्य पव

मानी गइ ह। इसम म्नान, दान और तपण करने से दश पापो का हरण होता ह। इसी कारण इसको दशहरा कहते ह।

कथ—अयोध्या के महाराज सगर क दो रानिया थी। एक का नाम था केशिनी और दूसरी का सुमति। केशिनी के असमजस नामक एक पुत्र और अशुमान नामक एक पौत्र था। परन्तु सुमति के साठ हजार पुत्र थे। साठ हजार भाइ गजा सगर के अश्वमेध यज्ञ के घोडे को ढूढने गये और कपिलदेवजी की शक्ति से वे मब भस्म हो गये। जब अशुमान कपिलदेवजी के आश्रम पर गया, तब महात्मा गरुडजी ने कहा कि तुम्हारे साठ हजार चचा अपने पापाचरण के कारण कपिलदेवजी के शाप से भस्म हो गये ह। यदि तुम उनकी मुक्ति चाहते हो तो स्वग से गङ्गाजी को यहा लाओ। लौकिक जल इनको तरण-तारण नही कर सकता। अत हिमवान पवत की बडी कया गङ्गा के जल ही से इनकी क्रिया करनी चाहिए। इस समय तो घोडे को ले जाकर पितामह के यज्ञ को समाप्त करो। तदनन्तर गङ्गाजी को इस लोक मे लाने का प्रयत्न करो। अशुमान घोडे को लेकर सगर के यज्ञ-स्थान मे पहुचा और उसने पितामह से सारा समाचार कह सुनाया।

महाराज सगर का देहावसान होने पर मत्रियो ने अशुमान को अयोध्या की गद्दी पर बिठाया। राज पाकर अशुमान ने अच्छा यश प्राप्त किया और इश्वर की कृपा से इनका पुत्र दिलीप भी बडा प्रतापी हुआ। राजा अशुमान पवत पर ही तप करने लगा। वह उसी स्थान पर पचत्व को प्राप्त हुआ, परन्तु गङ्गा को न ला सका। कालान्तर मे दिलीप भी अपने पुत्र को राज देकर स्वय गङ्गाजी को लाने के उद्योग मे तत्पर हुआ। किन्तु वह भी अपने उद्योग मे विफल मनोरथ हुआ।

दिलीप का पुत्र भगीरथ बडा ही प्रतापी और धर्मात्मा राजा था। वह चाहता था कि एक सन्तान हो जाय, तो मैं भी

गङ्गाजी को लाने का प्रयत्न करू। किन्तु जब प्रौढावस्था प्राप्त होने तक कोइ स तान न हुइ तब मन्त्रियो को राज का भार सौपकर वह गङ्गाजी को लाने के लिए गोकण तीथ म तपस्या करने लगा। इन्द्रियो को जीतकर पचाग्नि ताप से तपना, ऊ ब-बाहु रहना और मास म एक बार आहार करना—इस प्रकार की घोर तपस्या करत हुए जब बहुत वष बीत गये, तब सब देवताओ को साथ लेकर प्रजा के स्वामी ब्रह्माजी राजा भगीरथ के पास जाकर बोले कि हे राजन! तुमने अभतपूव तप किया ह। इसलिए प्रसन्न होकर म तुमको वरदान देने आया हू। तुम इच्छानुकल वर माग सकते हो।

राजा भगीरथ ने हाथ जोडकर कहा कि हे नाथ! यदि आप प्रसन्न ह तो महाराज सगर के साठ हजार पुत्रो के उद्धार के लिए गङ्गाजी को दीजिए। बिना गङ्गाजी के उनकी मुक्ति होनी असम्भव है। इसक अतिरिक्त इक्ष्वाकुवश से आजतक कोइ राजा अपुत्रक नही रहा। इसलिए मुझको एक स तान का भी वरदान दीजिये।

राजा की यह प्राथना सुनकर ब्रह्माजी ने उन्हे वरदान देते हुए कहा कि तुम्हारे कुल को उज्जवल करनेवाला एक पुत्र तुमको प्राप्त होगा और सगरात्मजो का उद्धार करनेवाली गङ्गाजी भी निस्स देह पथ्वी पर आयेगी। परन्तु महान वेगवती गङ्गा को धारण करने की शक्ति शिवजी के सिवा और किसी म नही ह। इसलिये तुम शिवजी को प्रसन्न करो। इतना कहकर देवताओ समेत ब्रह्माजी अपने लोक को चल गये और जाते समय गङ्गाजी को आज्ञा दे गये कि सगर की स तान को मुक्ति प्रदान करने के लिये तुमको भलोक मे जाना होगा।

ब्रह्मा की आज्ञा मानकर राजा भगीरथ पर के एक अगूठे पर खडे होकर महादेवजी का आराधन करने लगे। एक वष

व्यतीत हो जाने पर महादेवजी ने वरदान दिया कि म अवश्य ही गगा को शीश पर धारण करूगा।

अस्तु ज्यो ही गङ्गा की धारा ब्रह्मलोक से भूतल पर आइ, त्योही वह महादेवजी की जटाओ म विलीन हो गइ। पुराणो का मत ह कि जब भगवान न वामन रूप धरकर राजा बलि के यहा भिक्षा मागी थी और तीन पग स सारी पथ्वी को माप लिया था उस समय ब्रह्माजी न भगवान का चरणोदक अपन कमण्डल मे भर लिया था। उसी का नाम गङ्गा था। इसी कारण गङ्गा को विष्णुपान्ट्या भी कहते ह।

ब्रह्मलोक से आते समय गङ्गा ने मन मे अहकार किया कि म महादेवजी की जटाओ को भेदन करके पताल लोक मे चली जाऊँगी। इससे महादेवजी ने अपने जटा जट को ऐसा फैलाया कि कितने ही वष बीत जाने पर भी गङ्गा को जटाओ स बाहर निकलने का माग न मिला। जब राजा भगीरथ न पुन शिवजी की आराधना की तब शिवजी ने प्रसन्न होकर हिमालय मे ब्रह्मा के बनाये विदुसर तालाब मे गङ्गा को छोड दिया। उस समय गङ्गा की सात धाराए हो गइ। उनमे स ह्लादिनी पावनी और नलिनी य तीन धाराए तो विदुसर स पूव दिशा की ओर बहीं और सुचक्षु सीता तथा सिधु ये तीन नदिया पश्चिम दिशा को बही। सातवी धारा राजा भगीरथ के पीछे पीछे चली। महाराज भगीरथ दिव्य रथ पर चढकर आग आगे चले जात थे और गङ्गा उनके रथ के पीछे पीछे।

पुराणो मे यह भी लिखा ह कि गङ्गा न राजा भगीरथ से कहा कि तुम रथ पर बैठकर जिस ओर चलोगे उसी ओर म भी तुम्हारे पीछे पीछे चलूगी। इस प्रकार जब गङ्गा प वी तल पर आइ तब बडा कोलाहल हुआ। जहा जहा से गगाजी निकलती जाती थी, वहा वहा की भूमि अपूव शोभामयी होती जाती थी। महात्मा जह्नु गगा के माग मे तपस्या कर रहे थे। जब गगा

उनके पास से निकली तब वह समची गगा को पान कर गये। देवताओ ने यह दश्य देखकर जहु की बडी प्रशसा की और उनसे कहा कि कृपा करके लोक कल्याण के लिये आप गगा को छोड दीजिये। आज स यह आपकी कया कहलायेगी। जन्हु ने गगा की धारा को अपने कान से निकाल दिया। तभी से गगा का नाम जाह्वी पड गया।

इम प्रकार गगा अनेक स्थानो को पवित्र करती हुइ उस स्थान पर पहुची, जहा सगर के साठ हजार पुत्रो की भस्म का ढेर लगा हुआ था। गगा के जल का स्पश होते ही वे सब मुक्ति को प्राप्त हो गये। उसी समय स्वगलोक के अधिपति ब्रह्माजी भी वहा प्रकट हुय। ब्रह्माजी अति प्रसन्न होकर भगीरथ से बोले कि हे राजन ! तुम्हारे द्वारा सगर के साठ हजार पुत्रो का उद्धार हो गया। इसके लिए तुमने अपूव तप किया ह, इसलिए तुम्हारा नाम अमर हो गया। तुम्हारे नाम पर गगा का एक नाम भगीरथ भी होगा जो सदव तुम्हारा स्मरण कराता रहेगा। अब तुम अयोध्या मे जाकर धम और नीतिपूवक प्रजा का पालन करो। यह कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को सिधारे और राजा भगीरथ अयोध्या चले गये।

२२. निर्जला एकादशी

हिंदू जाति मे कदाचित सबसे अधिक प्रचलित एकादशी-व्रत माना जाता ह। प्रत्येक पक्ष की एकादशी को यह व्रत रखा जाता ह। इस प्रकार साल मे चौबीस दिन यह व्रत आता ह। इन चौबीसो एकादशियो मे ज्येष्ठ के शुक्ल पक्ष की एकादशी सवश्रेष्ठ फलदायक समझी जाती ह क्योकि इस एक एकादशी का व्रत रखने से साल-भर की एकादशी के व्रत का फल प्राप्त होता है। कहा जाता ह कि एक बार विशालकाय भीमसैन ने

व्यासजी के मुह से प्रत्येक एकादशी को निराहार रहने का नियम सुनकर विनम्रभाव मे कहा कि महाराज ! मेरे भाइ अजुन आदि तो सब एकादशियो का व्रत रखते ह पर मुझसे भूखा नही रहा जाता इसलिए मुझे तो कृपाकर एक एसा व्रत बता दीजिए, जिससे म एक ही दिन मे पूरा फल पाऊ। व्यासजी ने कहा कि तुम ज्येष्ठ के शक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत रखा। इससे तुम्हारा सब एकादशियो को अन्न खाने का पाप दूर हो जायगा और साथ ही पूरे वष की एकादशियो के व्रत का पुण्य लाभ होगा। भीम ने इसी व्रत को किया। इसलिए इस एकादशी को भीमसेनी एकादशी भी कहते ह। एकादशी के सर्योदय से द्वादशी के सर्योदय पयन्त जल तक ग्रहण करने की मनाही होने के कारण इसे निजला एकादशी भी कहते ह।

निजला एकादशी का व्रत अत्यन्त सयम साध्य है। जेष्ठ के महीने म दिन बहुत बडे होते ह और प्यास बहुत लगती है। ऐसी दशा मे इस व्रत को निजल रखना सचमच बडी साधना का काम है। बडे कष्ट तथा सहनशक्ति से ही यह व्रत पूरा होता ह। नियम पूवक व्रत करने के पश्चात सामर्थ्य के अनुसार स्वण और जलयक्त कलश के दान का विधान ह।

२३ रथ यात्रा

आषाढ शुक्ल द्वितीया को रथ-यात्रा का उत्सव मनाया जाता ह। इस दिन पुण्य नक्षत्र मे सभद्रा सहित भगवान के रथ की सवारी निकलती ह। यो तो भारतवष मे सवत्र यह उत्सव मनाया जाता ह पर इस दिन जगन्नाथपुरी मे विशेष धमधाम रहती ह। इसका जगन्नाथपुरी से विशेष सबध है।

जगन्नाथपुरी उडीसा प्रान्त मे समद्र के किनारे स्थित है। यह स्थान भारतवष के प्रधान चार धामो मे से एक धाम समझा

जाता ह। यहा शकराचाय द्वारा स्थापित गोवधन पीठ भी ह। यहा के सवस्व जगन्नाथजी ह ओर उन्ही क कारण इसका महत्त्व ह। जगन्नाथजी के मदिर के अतिरिक्त यहा अनेक सम्प्रदायो के मठ भी ह। वष्णव शव और शाक्त सभी यहा रहत ह। रथ यात्रा के दिन यहा बहुत भीड होती ह। बडी बडी दूर से लोग जगन्नाथजी का दशन करने आत ह और अपना जन्म सफल करत ह। जगन्नाथजी का रथ ४५ फुट ऊँचा ३५ फट लबा ओर उतना ही चौडा ह। उसम ७ फुट व्यास के १६ पहिये लग रहते ह। बलभद्रजी का रथ ४४ फट ऊँचा ह और उसमे १४ पहिय रहत ह। सुभद्राजी का रथ ४३ फट ऊचा ह और उसम १२ पहिए ह। य रथ प्रतिवष नए बनाए जाते ह। सिहद्वार पर भगवान रथो मे बठकर जनकपुर की ओर जाते ह। उनके रथो को खीचने के लिए ४२०० मनुष्य रहते ह। इनके अतिरिक्त भक्त नर नारी भी रथ खीचत ह। जनकपुर म भगवान तीन दिन रहते ह। वहा लक्ष्मीजी से उनकी भेट होती ह। इसके पश्चात वहा से लौटकर भगवान अपने स्थान पर आसीन होते ह।

२४. हरिशयनी एकादशी

आषाढ शुक्ल एकादशी को हरिशयनी एकादशी होती ह। इसी दिन भगवान विष्णु क्षीर सागर मे शयन करते ह। पुराणो म यह भी लिखा ह कि इस दिन से विष्णु भगवान चार मास तक बलि के द्वार पर पाताल मे रहते है और कार्तिक शुक्ल एकादशी को पीछे पधारत ह। इसलिए इस एकादशी को हरि-शयनी ओर कार्तिक वाली एकादशी को प्रबोधनी एकादशी कहते ह। चूकि इन चार महीनो मे भगवान विष्णु क्षीर सागर मे शयन करते ह इसलिए बिवाह आदि कोइ शुभ काय इन

महीनो मे नही किया जाता। आषाढ से कार्तिक तक के चार मास चातुर्मास्य कहलाते ह। इन दिनो साध एक ही स्थान पर रहकर तपस्या करते ह।

ब्रह्मवैवत पुराण मे हरिशयनी एकादशी का माहात्म्य लिखा ह। जिसमे ज्ञात होता ह कि इस व्रत के करने से पाप नष्ट होते ह और हृषीकेश भगवान प्रसन्न होते ह। यह व्रत इच्छित वस्तु का दाता ह। इसे पद्मा एकादशी भी कहते ह। इसकी कथा इस प्रकार है —

कथा—एक बार नारदजी ने ब्रह्मा से हरिशयनी एकादशी का माहात्म्य पूछा। ब्रह्माजी ने कहा कि प्राचीन काल मे मान्धाता नाम का एक चक्रवर्ती राजा था। उसके राज्य मे सब प्रजा आनन्द से रहती थी। एक बार लगातार तीन वष तक वर्षा नही हुइ जिससे भयकर अकाल पड गया। प्रजा व्याकुल हो उठी। उसने राजा से अपना कष्ट कहा। राजा अगिरा ऋषि के पास गये। अगिरा ऋषि ने कहा कि इस सतयुग मे थोडे से पाप का भी बडा भारी फल होता ह। तुम्हारे राज्य मे एक वृषल तपस्या कर रहा है। यदि वह न मारा गया तो दुर्भिक्ष शान्त नही होगा। राजा ने उस तपस्वी को मारना उचित न समझकर ऋषि से अन्य उपाय पूछा। ऋषि ने कहा कि पद्मा नाम की एकादशी का व्रत करो। यह सुनकर राजा अपने राज्य मे लौट आया और समस्त प्रजा के साथ उसने यह व्रत किया। व्रत के करने से जल वृष्टि हुइ और सबका कष्ट दूर हो गया।

२५. व्यास पूर्णिमा

आषाढ मास की पूर्णिमा व्यास पूर्णिमा के नाम से प्रसिद्ध ह। इस दिन व्यास अर्थात गुरु की पूजा की जाती है। इसलिए इसे 'गुरु पूजा' भी कहते ह। प्राचीनकाल मे विद्यार्थियो से

शुल्क नहीं लिया जाता था। वे वष म इसी तिथि पर अपने गुरु की पूजा करते थे और उन्हे यथाशक्ति दक्षिणा दते थे। यह पूजा केवल गुरु तक ही सीमित नहीं थी वरन पिता माता भाइ आदि सब की पूजा की जाती थी।

गुरु पूजा के दिन प्रात काल स्नान, पूजादि करक गुरु क पास जाना चाहिए और उ हे उच्चासन पर बठाकर पुष्पो की माला पहनाना चाहिए। इसके पश्चात फल, फूल तथा द्रव्य उनके चरणो पर रखना चाहिए। फिर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार पूजा करने से विद्यार्थी को विद्या आती ह और उसका हृदय शुद्ध तथा उसका जीवन कल्याणकारी होता ह।

२६. नाग-पञ्चमी

श्रावण शुक्ला पचमी को नाग पूजा होती ह। इसलिए इस तिथि को नाग-पचमी कहते ह। इस दिन घर के दरवाजे के दोनो ओर गोबर से नाग की मूर्ति लिखी जाती ह। इसके व्रत मे चतुर्थी को केवल एक बार भोजन करे और पचमी को दिन भर उपवास करके शाम को भोजन करे। चादी, सोना, काठ अथवा मिट्टी की कलम से हल्दी तथा च दन की स्याही बनाकर पाच फन वाले पाच नाग लिखे। पचमी के दिन खीर, पचामत और कमल के पुष्प तथा धूप, दीप, नवेद्य आदि से विधिवत् नागो का पूजन करे। पूजन के पश्चात् ब्राह्मणो को लड्डू या खीर का भोजन कराए। नागो मे अनन्त, वासुकी, शेष, पद्म, कवल, कर्कोट्क, अस्वतर, धतराष्ट शङ्खपाल, कालिया, तक्षक और पिंगल बारह नाग प्रसिद्ध ह। इनमे से एक एक नाग की एक-एक मास मे पूजा करनी चाहिए। पूजा करानेवाले व्यास (पडित) को नागपचमी के दिन स्वण और गौ का दान देना चाहिए।

प्रारम्भ मे शरीर की शुद्धि के लिये दूध दही घी गोबर और गोमूत्र इन पाचो का पचगय बनाकर पान करे फिर शास्त्र विधि से तयार की हुइ वेदी म हविषान्न (खीर घी, शक्कर जौ आदि) का विधिवत हवन कर। इसी को उपाकम कहत ह। तदनतर जल प्रवाह क सामन जल म खड होकर तथा हाथ जोडकर सूय भगवान का ध्यान और स्तुति करे। फिर अरुधती समेत सप्त ऋषियो का पूजन करके दधि तथा सत्तू की आहुतिया दे। इसको उत्सजन कहते ह।

कथा—एक समय देवता और दत्यो मे लगातार बारह वष तक घोर युद्ध होता रहा जिसमे दत्यो ने सम्पूण देवताओ समेत इन्द्र को विजय कर लिया। दत्यो से पराजित इद्र ने अपने गुरु बहस्पति से कहा कि इस समय न तो म यहा ठहरन मे समथ हू और न मुझको भागने का अवसर ह। अत मुझ लडकर प्राण देना अनिवाय हो गया ह। एसी बाते सुनकर इद्राणी बीच ही म बोल उठी— पतिदव! आप निभय रह। म एक एसा उपाय करती हू जिससे अवश्य ही आपकी विजय होगी।"

प्रात काल ही श्रावणी पूर्णिमा थी। इद्राणी न ब्राह्मणो के द्वारा स्वस्ति वाचन कराकर इद्र के दाहिने हाथ मे रक्षा की पोटली बाध दी। रक्षा बधन से सुरक्षित इद्र ने जब दत्यो पर चढाइ की तब दयो को वह काल के समान देख पडे, जिससे भयभीत होकर वे आप ही भाग गये।

बुद्धिमान् मनुष्य श्रावण शुक्ला पूर्णिमा क दिन प्रथम तो स्नान करे फिर देवता पितर और सप्तऋषियो का तपण करे। दोपहर के बाद सूती और ऊनी वस्त्र लेकर उनमे चावल रखकर गाठ लगा दे और स्वण के रङ्ग के समान हल्दी या केशर मे रगकर उन्हे एक पात्र मे रख दे। इसके पश्चात घर को गोबर से लिपवा-कर और चावलो का चौक पुरवाकर उस पर घट की स्थापना करे। घट मे अन्न भरा होना चाहिए। पीले वस्त्र मे सत के लच्छे

से लिपटी हुइ एक या अनक चावल की पोटलिया रख दे। यजमान स्वय पाटा अथवा चौकी पर बठे और शास्त्रोक्त विधि से पुरोहित द्वारा घट का पूजन कराये। पूजन के पश्चात उस पोटली को यजमान के हाथ मे बाधे तथा परिवार के और लोगो के हाथ मे भी बाधे। रक्षा-बन्धन के समय ब्राह्मण मत्र बोले। इस तिथि पर नया यज्ञोपवीत धारण करे। बहिन द्वारा भइ के हाथो मे राखी बाधने की प्रथा भी इस तिथि पर प्रचलित है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस प्रथा की पुष्टि होती ह।

श्रावणी का पव हमारे लिए विशेष महत्त्वपूण ह। प्राचीन ग्रथो के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय ऋषि महर्षि श्रावणी पूर्णिमा के दिन उपाकम कराकर पढाना आरभ करते थे और माघ कृष्ण मे उत्सजन होकर पढाइ बन्द कर दते थे। बाद के शेष महीनो मे अभ्यासित ज्ञान को अनुभव और क्रिया रूप मे परिणत किया जाता था। इस प्रकार श्रावणी का दिन पढाइ का प्रथम दिन था।

२८ कजरी की नवमी

कजरी का त्योहार हिदू मात्र म एक प्रसिद्ध त्योहार ह। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को कजरी पूर्णिमा कहते ह। इसी को श्रावणी पूर्णिमा भी कहते ह। इसी दिन श्रावणी-कम होता ह और रक्षा-बधन भी होता ह। किन्तु बुदेलखण्ड की श्रावणी पूर्णिमा मे कुछ विशेषता ह और वह यह कि वहा श्रावणी पूर्णिमा को सध्या के समय कजरी का जुलूस निकलता ह। पूर्णिमा से एक सप्ताह पूव यानी श्रावण शुक्ल नवमी को कजरी बोइ जाती ह। सात दिन तक बराबर सन्ध्या को धूप और आरती हुआ करती ह। गेहू या जौ पानी मे फुलाकर दोनो मे बो देते ह और उनको ऐसी जगह रखते ह जहा हवा न लगने पाय। हवा न लगन से कजरी

का रग पीला रहता ह। कजरी के रग का सगुन असगुन भी माना जाता ह। जिस नवमी को कजरी बोइ जाती ह, उसे कजरी की नवमी कहते ह।

कजरी की नवमी को जिनके यहा कजरी बोइ जाती ह लडके वाली स्त्री व्रत रहती ह। उसी दिन गाव की स्त्रिया किसी नियत स्थान पर कजरी बोन की मिट्टी लेने जाती ह। वहा भी एक छोटा सा मेला ज्सा हो जाता ह। मिट्टी को घर मे लाकर दोनो या खप्परो मे भरती ह। फिर जिस कोठे मे कजरी को रखना होता ह, उस कोठे मे दीवार पर भगवती की प्रतिमा सचक एक पुतली लिखी जाती ह। उसी के समीप मढी या मकान लडके समेत एक पलना, एक नेवले का बच्चा, एक स्त्री की आकृति हल्दी से लिखी जाती ह। इसी अनगन चित्रकारी को नवमी कहते ह। इसी नवमी की पूजा करके स्त्रिया कजरी बोती ह। तब फिर नवमी के व्रत के सम्बध की कथा कहती ह। कथा के बाद कजरी बोने का गीत गाया जाता ह।

कथा—एक स्त्री जम बध्या थी। उसने एक ऐसे नवले के बच्चे को पाला, जिसकी मा मर गइ थी। स्त्री को बाल बच्चा कुछ तो था ही नही इसलिए वह नेवले का लडके की तरह पालन-पोषण करती थी। दवयोग से उस स्त्री को गभ रह गया और नौ महीने बाद एक सुदर बालक पदा हुआ। स्त्री नेवले को अपने पुत्र का बडा भाइ करके मानती थी।

श्रावण शुक्ल नवमी की बात ह। स्त्री लडके को पलने म लिटा कर जल भरने चली गयी। चलते समय उसने नेवले को भाइ की रक्षा के लिए छोड दिया। नेवला लडके के पलने के चारो ओर फेरा लगाता हुआ पहरा देने लगा। उसी समय एक सप पलने की ओर झपटा। नेवले ने उसे काटकर टुकड टुकडे कर दिया।

सप को मार कर नेवला माता को अपनी कृतज्ञता या बहादुरी दिखलाने के लिए बाहर दौडा गया। उधर मे मा सिर पर भरे

हुए घडे रक्खे चली आ रही थी। उसने नेवले के मुख मे रक्त लगा देखकर समझा कि यह लडक को मारकर भागा जा रहा ह। इसलिए क्रोध मे आकर उसने नेवले के ऊपर घडा पटक दिया। नेवला तत्क्षण मर गया।

स्त्री दौडी हुइ घर के भीतर गइ, तो देखती क्या ह कि लडका पालने मे पडा खेल रहा ह और उसके समीप एक बडा भयानक सप टुकडे-टुकडे पडा ह। यह देखकर वह अपनी मूखता पर पछताने लगी। वह सारे दिन रोती रही। दोपहर बाद पडौस की स्त्रिया उसे नवमी की मिट्टी लाने के लिए बलाने आइ। उसको रोते देखकर और उसका काय कारण समझ कर उन्होने कहा कि बीती बात पर पश्चात्ताप करने से कोइ लाभ नही ह। तने अब तक खाना नही खाया। यह तेरा नवमी का व्रत हो गया। अब चल कर मिट्टी लाओ और जहा नवमी लिखी जाय वहा इस घटना का चित्र लिखकर पूजा करो। हमलोग भी इस नेवले की कृतज्ञता को चिर स्मरण रखने के लिए प्रति नवमी को इसकी पूजा किया करगी। निदान उस स्त्री ने सब पडोसियो के साथ साथ नवमी का पूजन किया कहा जाता ह। उसी दिन मे नवमी के व्रत की परिपाटी चली ह। अब भी केवल पुत्रवती स्त्रिया नवमी का व्रत करती ह। नवमी को भगवती की आराधना और पूजा भी होती ह।

दूसरी कथा—एक स्त्री का नाम बारीबहू था। कजरियो की नवमी को उसने पडोसियो से पूछा कि आज क्या करना चाहिए। उन्होने कहा कि आज व्रत रहना चाहिय शाम को नवमी की पूजा करनी चाहिए और यथाशक्ति दान पुण्य करना चाहिए। यह सुनकर वह घर आइ और चादर ओढकर लेट रही। दोपहर को जब उसका पति आया और उसने पूछा कि आज रसोइ क्यो नही बनाइ तब वह बोली कि आज तो मने व्रत रखा है। उसके पति ने उससे भोजन आदि बनाने का आग्रह किया पर वह टस-से मस नही हुइ। अन्त मे पतिदेव स्त्री की नजर बचाकर कोठिला

के भीतर छिप गये। अपने पति को गया हुआ जानकर स्त्री उठी और बाजार से दो गन्ने लाकर उनको चूस गइ। फिर उसने रोटिया बनाइ और घी लगाकर खाइ। थोडी देर बाद उसने सिमइ बनाइ और घी शक्कर के साथ उसे भी खाइ। इतने पर भी जब उसे सतोष न हुआ तब उसने खिचडी पकाइ और घी डालकर उसे भी खाइ।

पेट पूजा से निवत्ति होकर उसने नवमीकी पूजा की तैयारी की। वह फूहड तो थी ही नवमी लिखना जानती नही थी। इसलिए गोबर घोलकर उसने दीवार पर पोत दिया। इसके बाद स्नान करके उसने नवमी की बिढइ बनाइ और तब पूजा करने बैठी। जसी नवमी बनाइ थी वसी ही मनमानी पूजा करके वह बोली—"नवमी बाइ बिढइ खायगी'?

पुरुष ने कोठिला मे से उत्तर दिया—"हू।'

उमे इस पर आश्चय हुआ कि मेरी नवमी बोलती क्यो है? फिर उसने कहा—"नौ बासी नौ ताती नौ के चरे खायगी"?

कोठिला मे से आवाज आइ—"हू।"

तब तो उसने गाव मे जाकर स्त्रियो से कहा कि मेरी पूजा से प्रसन्न होकर मेरी नवमी बोलती ह। यह सुनकर सब स्त्रियो को आश्चय हुआ। उन्होने पूछा कि तुमने कसी नवमी लिखी ह, जो बोलती ह?

उसने उत्तर दिया कि म नवमी लिखना तो जानती ही नही थी। इसलिए मने गोबर से पोत दिया था।

गाव की स्त्रियो ने फूहड के कथनानुसार नवमी से वही प्रश्न किया— नवमी बाइ नौ बिढइ खायगी"? पुरुष ने इस बार भी पहले जसा उत्तर दिया। इस पर स्त्रियो को बडी इर्ष्या हुइ कि हम लोग इतनी श्रद्धा भक्ति से व्रत और पूजन करती है फिर भी हमारी नवमी कभी बोलती ही नही और इस फूहड की नवमी बोलती ह। यह बडे आश्चय की बात ह।

स्त्रियो के चल जाने पर फूहड न बिढइ भी खाइ। फिर वह चारपाइ पर बिछौना बिछाकर लेट रही। सध्या को पुरुष कोठिला से निकल कर खासता खखारता बाहर से घर मे आया। उसने स्त्री को पुकार कर कहा— अरी ! किवाड तो खोल दे।

उसने करवट बदलते हुए कहा— मेरा तो जी अच्छा नहीं ह। उठे तो कौन उठे।

करवट बदलने मे चारपाइ चरचराइ तो वह बोली— देखो मेरी पसलिया चरचरा रही ह म उठ नही सकती।

तब पुरुष किसी तरह किवाड खोलकर भीतर आया। स्त्री ने पूछा— तुम जिस गाव को जाने के लिये कहते थे वहा तक गये ही नही क्या ?

उसने कहा— हा ऐसी ही बात ह। रास्ते मे एक बडा सप मिल गया इसी से लौट आया हू।

स्त्री ने पूछा— सप कितना बडा था ?

पुरुष ने कहा—'जितना बडा गन्ना होता है।

वह सरकता कसे था ?

जसे खिचडी मे घी सरकता ह।

यह कहकर उसने उसका झोटा पकड कर उसे पीटना शुरू किया और उसे यहा तक ठोका कि वह बेहोश हो गइ। उसकी पुकार सुनकर पडोस की स्त्रिया दौड आइ। पुरुष निकल कर बाहर चला गया। स्त्रियो ने पूछा— 'अरी' ! हुआ क्या ?

वह बोली— क्या बताऊ क्या हुआ ? नवमी की पूजा हुइ और क्या हुआ ?'

२६ हल-षष्ठी या हरछट

भाद्र कृष्ण षष्ठी को यह व्रत होता ह। इसी दिन कृष्ण के बडे भाइ बलराम का जम हुआ था। उनका प्रधान आयुध हल

और मूसल था। इसलिए इस हल षष्ठी कहत ह। पूर्वी जिलो मे इसे 'ललइ छठ कहते है। यह पुत्र की कामना के लिए होता ह। व्रत रहने वाली स्त्रिया उस दिन महुआ की दातौन करती ह। अधिकतर पुत्रवती स्त्रिया ही यह व्रत करती ह। हरछट के उपवास मे हल द्वारा जोता बोया हुआ अन्न या कोई फल नही खाया जाता। गाय का दूध दही भी मना ह। सिफ भस का दूध, दही या घी स्त्रिया काम मे लाती ह। प्रात काल स्नान करके स्त्रिया भूमि लीपकर एक छोटा तालाब बनाती ह जिसमे झरबेरी काश तथा पलास की एक एक डठल बाधने से बनी हुइ हरछट को गाडकर उसका पूजन करती ह। पूजा मे सतनजा (गेहूँ चना, जुआर अरहर धान, मूग और मक्का) चढाकर सूखी धूलि, हरी कजरिया होली की राख या चने का होरहा और होली की भुनी गेहू की बाल भी चढाती ह। इसके अतिरिक्त कुछ गहना हल्दी से रगा हुआ कपडा आदि वस्तुओ को भी हरछट के आसपास रख देती ह। पूजा क अन्त म भस के मक्खन का होम किया जाता है। तब कथा कही जाती ह। यह श्रावण मास का अंतिम त्योहार ह।

कथा—एक ग्वालिन गभवती थी। एक ओर तो उसका पेट दद कर रहा था दूसरी ओर उसका दही दूध बेचने को रक्खा था। उसने अपन मन मे सोचा कि यदि बच्चा हो जायगा तो फिर दही-दूध न बिक सकेगा। इसलिए वह दही दूध की मटकिया अपने सर पर रखकर घर से बाहर निकल गयी। चलते चलते वह एक खेत के पास पहुची। उसी जगह स्त्री क पेट म अधिक पीडा होने लगी। वह झरबेरी के झाडो की आड मे बठ गइ और लडका पदा हो गया। उसने लडके को कपडे मे लपेट कर उसी जगह रख दिया और फिर दही-दूध बेचने चली गइ। उस दिन हरछट भी थी। उसका दूध गाय भस का मिला हुआ था, परन्तु ग्वालिन ने अपने दही दूध को केवल गाय का बतला कर गाव मे बेच दिया।

जिस खेत की झाडी म ग्वालिन न बच्चा छिपाया था उसमे एक किसान हल जोत रहा था। सहसा उसक बल बिदक कर खेत की मेड पर चढ गय। दवात हल की नोक लडके क पेट मे लग गइ, उसका पेट फट गया और वह मर गया। हलवाले को इस घटना पर बहुत दु ख हुआ पर लाचारी थी। उसने झरबेरी के काटो स लडक के पेट मे टाके लगा दिय और उस यथास्थान पडा रहने दिया। इतने म ग्वालिन दूध दही बचकर वहा पहुँच गयी। उसने जो देखा तो अपन बालक को मरा पडा पाया। वह समझ गइ कि यह मेरे पाप का परिणाम ह। मने दूध दही बेचने के लिए झूठी वात कहकर सब व्रतवालियो का धम नष्ट किया यह उसी की सजा ह। अब मुझे जाकर अपना पाप प्रकट कर देना चहिए। आग भगवान की जो मरजी हागी सो होगा। यह निश्चय करके वह उसी गाव को फिर वापस चली गइ जहा से दूध बेचकर आइ थी। उसने वहा गली गली घूम कर कहना शुरू किया कि मेरा दही दूध गाय भस का मिला हुआ था।

यह सुनकर स्त्रियो ने उसे आशीर्वाद दन शुरू किये। अनेक स्त्रियो का आशीर्वाद लेकर जब वह फिर उस खेत पर गइ तब उसने देखा कि लडका पलास की छाया मे पडा खल रहा ह। उसी समय से उसने प्रण किया कि अब अपना पाप छिपाने के लिए झूठ कभी न बोलूगी।

दूसरी कथा—देवरानी जठानी दो स्त्रिया थी। दवरानी का नाम था सलोनी और जेठानी का नाम था तारा। सलोनी जसी सुन्दरी थी वसी ही सदाचारिणी सशीला और दयावान भी थी। परन्तु तारा ठीक उसके प्रतिकूल पूण दुष्टा और दयाहीन थी

एक बार दोनो ने हरछट का व्रत किया। सन्ध्या को दोनो भोजन बनाकर ठण्डा होने के लिये थालिया परोस आइ और आगन म बठकर एक दूसरी के सिर की ज दखन लगी। उस दिन

देवरानी ने खीर बनाइ थी और जिठानी ने महेरी। दवात दोनो के घरो मे कुत्ते घुस पडे और परोसी हुइ थालिया खाने लगे। घरो के भीतर 'चप चप शब्द सुनकर वे अपने अपने घरो म दौडी गइ। सलोनी ने देखा कि कुत्ता खीर खा रहा ह। वह कुछ न बोली बल्कि जो कुछ खीर बची बँचाइ बनाने के बरतन मे लगी थी उस भी उसने थाली म परोम कर कहा कि यह सब भोजन तेर हिस्से का ह अच्छी तरह खा ले। मुझे जो कुछ इश्वर देगा सो देखा जायगा। उधर तारा ने घर मे कुत्ते को देखकर हाथ म मूसल उठाया और कुत्ते को घर के भीतर छेककर इतना मारा कि उसकी कमर टट गइ। कुत्ता अधमरा होकर किसी तरह जान लेकर भागा।

कुछ देर के बाद दोनो कुत्ते आपस म मिले। तब एक ने दूसरे से पूछा—'कहो, क्या हाल ह ?'

दूसरे ने कहा—"पहले तुम्हीं कहो। मेरा तो जो हाल ह, वह देखते हो।'

तब पहला बोला—'भाइ! बडी नेक स्त्री थी। उसने मुझे खीर खाते देखकर कुछ नही कहा। मने भर पेट भोजन किया और आराम से चला आया। मेरी आत्मा उसे आशीर्वाद देती ह। म तो भगवान से बार बार यही मनाता हू कि अब जो मरू, तो उसी का पुत्र होकर आज म उसी की सेवा करू और जसे उसने आज मरी आत्मा तप्त की ह, वसे म भी ज म भर उसकी आत्मा को सन्तोष देता रहू।'

तब दूसरा बोला—'मेरी तो बुरी दशा हुइ। पहले तो थाली म मुह डालते दात गोठले हो गये। परन्तु भूख के मारे फिर दो-चार निवाले चाटकर म भागने ही वाला था कि इतने मे वह आ गइ। उसने तो मार मारकर मेरी कमर ही तोड़ दी। अब म इश्वर से यह मनाता हूँ कि अब की बार मर कर म उसका पुत्र होऊँ तो उससे अपना पूरा बदला लू। उसने मूसलो से मेरी कमर

तोडी है, परन्तु म भीतरी मार से उसका दिल और कमर दोनो तोड दूगा।

दवात् दूसरा कुत्ता उसी दु ख मे मर गया और उसी स्त्री का पुत्र होकर ज मा। दूसरी हरछट को जब घर घर पूजा होती थी, तब वह लडका मर गया। तारा को इसस बहुत दु ख हुआ। परन्तु मरने जीने पर किसी का कुछ वश नही चलता यह सोच कर उसने सन्तोष कर लिया। पर आगे तो यह नियम-सा हो गया कि हर साल उसके लडका होता था और हर साल ठीक हरछट के दिन मर जाता था। ऐसी दशा मे उसे शका हुइ कि इसका कोइ विशेष कारण अवश्य है। इसी विचार मे वह सो गइ।

स्वप्न मे उसी कुत्ते ने सामने आकर उससे कहा कि म ही तेरा पुत्र होकर मर मर जाता हूँ। तूने जो मेरे प्रति दुष्टता की थी अब मै उसी का बदला तुझसे ले रहा हूँ।

स्त्री ने उससे पूछा कि अब जिससे तू राजी हो सो कह। मै वही करूगी।

कुत्ते ने उत्तर दिया कि अब से हरछट के व्रत मे हल का जोता बोया अन्न या फल न खाना। गाय का दूध मठा न खाना। यदि तू होली की भूनी बाल, होली की धूलि इत्यादि वस्तुए हरछट की पूजा मे चढायेगी तो म तेरे यहा रहूगा अ यथा नही। तेरी पूजा के समय तारागण छिटके, तब तू समझना कि अब रहूगा। तारा ने ऐसा ही किया और तब से उसके लडके जीने लगे।

३० जन्माष्टमी

भाद्र कृष्ण अष्टमीको श्रीकृष्ण ज माष्टमी कहते ह। यह दिन श्रीकृष्ण भगवान का ज म दिवस माना जाता ह। इस तिथि की रात्रि मे रोहिणी नक्षत्र हो तो कृष्ण-जय ती होती है। यदि रोहिणी नक्षत्र का अभाव हो, तो केवल ज माष्टमी व्रत का ही

योग होता ह। अष्टमी के दिन रात्रि मे गीत तथा बाजो के निर्घोष से जागरण कर और भगवान श्रीकृष्ण की जन्म सम्बन्धिनी कथा सुन तथा सनाव। तदनन्तर नवमी को पारण करने के पूव ब्राह्मणो को भोजन तथा दक्षिणा स सतुष्ट कर। यहा श्रीकृष्ण जन्म की वह कथा दी जाती ह जो लोक मे प्रसिद्ध ह—

कथा—सत्युग मे केदार नाम का एक राजा बडा तेजस्वी हो गया ह। वह आयु के तीसरे भाग म अपने पुत्र को राज देकर तपावन मे चला गया। इसी राजा की वन्दा नाम की एक कन्या थी जिसने आजन्म अविवाहिता रहकर यमुना के पवित्र घाट पर घोर तपश्चया करनी आरम्भ की। जब उसकी तपश्चर्या परकाष्ठा को पहुची तब भगवान ने प्रकट होकर कहा— 'वर माग।"

कन्या ने हाथ जोडकर प्राथना की कि यदि आप मेरी सेवा से प्रसन्न हुए ह तो कृपया मेरा पति होना स्वीकार करे।

भगवान ने उसकी प्राथना स्वीकार की और उसे वे अपने साथ ही ले गये। ब्रज के जिस वन मे राजकुमारी ने तप किया था, उसका नाम वन्दावन पड गया।

मधु नामक एक दत्य ने यमुना के दक्षिण तट पर एक नगर बसाया था जिसका नाम मधुपुरी था। इसी मधुपुरी को आजकल मथुरा कहते ह। श्रीरामावतार के समय शत्रुघ्नजी ने इसी मधु दत्य को परास्त करके मधुपुरी (मथुरा) पर अधिकार प्राप्त किया था। यह मधुपुरी द्वापर युग मे शूरसेन देश की राजधानी हो गइ और इसमे क्रमश यादव अन्धक भोज आदि अनेक वशो ने राज किया।

द्वापर युग के अन्त म मथुरा म भोजवशीय राजा उग्रसेन राज करता था। उसके पुत्र का नाम था कस। कस ने उसे गददी स उतार राज काज अपने हाथ मे ले लिया था। उसकी एक बहन

थी, जिसका नाम देवकी था। देवकी का विवाह वसुदेव नामक एक यादव-वंशी सरदार के साथ हुआ था।

एक दिन जब कस अपनी बहन देवकी को उसके ससुराल पहुचाने के लिए ले जा रहा था, तब अनायास मार्ग मे यह आकाश-वाणी हुइ कि जिस देवकी को त बडे प्रेम से ले जा रहा ह, उसी म तेरा काल बसता ह। उसके गभ से उत्पन्न हुआ बालक तुझको मारेगा।

यह सुनते ही देवकी के ससुराल पहुचा कर कस ने म्यान से तलवार निकाली और वसुदेव को मारने पर उद्यत हुआ। उस समय देवकी ने उससे विनीत भाव से प्राथना की और कहा कि मेरे गभ से जो सतान उत्पन्न होगी, उसे म तुम्हारे सामन ला रखूगी। उसके साथ तुम चाहे जसा व्यवहार कर सकत हो। इसके लिए बहनोइ को मारना व्यथ ह।

कस देवकी की बात मानकर मथुरा लौट गया और उसने वसुदेव देवकी दोनो को कठिन कारागार मे कद कर दिया।

जब देवकी के गभ से प्रथम बालक जन्मा और वह कस के सामन लाकर रक्खा गया तब उसने आठवे गभ की बात विचार कर उस बालक को क्षमा कर दिया। पर उसी समय नारदजी न कस के पास आकर कहा कि यह तुम बडी भल कर रहे हो। क्या जाने यही वह आठवा गभ तुम्हारा नाश करने वाला हो।

नारदजी ने पथ्वी पर आठ लकीरे खींच कर उनको पहले एक सिरे से दूसर सिरे तक गिना और फिर उस सिरे से पहले सिरे तक गिनकर प्रमाणित किया कि प्रथम या अष्टम कोइ भी अष्टम सख्या का वाचक हो सकता ह। अत शत्रु के अकुर को तुरन्त ही खोट दना चाहिए। ऐसा न हो कि वह बडा होकर प्रवल हो जाय।

नारदजी की बात मानकर कस ने फौरन उस बालक को मरवा डाला। उसके बाद देवकी के गभ से जितने बालक हुए कस सब को मरवाता गया। देवकी की सात सन्ताने मारे जाने

के बाद जब आठवे गभ की बात कस को मालूम हुइ, तब उसने देवकी-वसुदेव दोनो को एक कारागार मे कद किया और पहरा भी लगा दिया।

जिस दिन श्रीकृष्ण भगवान का ज म हुआ, उस दिन भादो के कृष्ण पक्ष की अष्टमी थी। रोहिर्णी नक्षत्र था। पथ्वी मण्डल पर सवत्र घोर अ धकार छाया हुआ था और मूसलाधार पानी बरस रहा था। जिस कोठरी मे देवकी वसदेव दोनो कद थे, उसम सहसा एक बडा भारी प्रकाश हुआ। उसी प्रकाश मे देवकी-वसुदेव दोनो ने देखा कि शङ्ख, चक्र, गदा, पद्मयुक्त चतुभुज भगवान उनके सामने खडे ह। प्रभु की ऐसी कृपा देखकर देवकी-वसुदेव उनके चरणो पर गिर पडे। तब श्रीकृष्ण भगवान ने उनसे कहा कि अब म नवजात बालक का स्वरूप धारण कर लेता हू परन्तु हे वसुदेव! तुम इसी समय मुझे अपने मित्र नन्दजी के घर व दावन मे भेज दो और उनके यहा जो क या ज मी है उसे लाकर कस को अपण कर दो। यद्यपि इस समय प्रकृति ने बडा भयानक रूप धारण कर रक्खा ह, तथापि तुम किसी की चि ता न करो। मेरी कृपा से जागते हुए पहरे वाले सब सो जायगे। ब दीखाने के फाटक आप ही आप खुल जायगे और माग म पडने वाली अथाह यमुना नदी भी तुमको माग दे देगी।

नवजात शिशु रूप श्रीकृष्ण भगवान को सूप मे रखकर वसुदेव उसी समय ब दीगह से निकल पडे और अथाह यमुना को पारकर अपन मित्र न द क घर जा पहुचे। मित्र ने भी मित्र का कत्तव्य पालन किया। उन्होने श्रीकृष्ण को अपनी स्त्री यशोदा के साथ सुला दिया और यशोदा के गभ से ज मी हुइ पुत्री चण्डिका को वसुदेव क सूप मे रख दिया। उसे लेकर वसुदेव उसी समय मथुरा लौट आये और ब दीगह मे अपने स्थान पर दाखिल हो गये। बदीखाने के सब किवाड ज्यो के त्यो बद हो गये और उनम

ताले भी पड गये। पहरे वाले मोह निद्रा मे जागकर मावधानी से चौकसी करने लगे।

प्रात काल जब कस ने सुना कि मेरी बहन के गभ से अब की बार क या ज मी ह तब उसने उसी ममय क या को मगाकर एक धोबी को हुक्म त्यिा कि वह उसे पत्थर पर पटक कर मार डाले। अत धोबी ज्योही चण्डिका क पर पकड कर उमे पछाडने लगा त्योही वह धोबी के दोनो हाथ लती हुइ आकाश मे उड गइ। वहा से उसने कहा कि मुझको मारने से कोइ लाभ नही। कस को मारने वाला तो व दावन मे जा पहुचा ह। यह कौतुक देखकर कस अवाक रह गया।

कस कृष्ण को व दावन मे सुरक्षित जानकर बडा ही उद्विग्न हुआ और वह उनको मारने के लिए अनेक उपाय करने लगा। उसने उनका नाश करने के लिए समय समय पर अनेक दैत्य और दानवियो को भेजा। उन सबने आसुरी माया विस्तार कर कृष्ण भगवान् को मारना चाहा, परन्तु परिणाम उलटा हुआ। वे सभी मारे गये और कृष्णजी सकुशल गोकुल मे रहकर रास विलास करने लगे।

बडे होने पर श्रीकृष्ण भगवान ने मथुरा जाकर कस को मारा वसुदेव और देवकी को कद से छुडाया और फिर गोपी ग्वालो को विरह विह्वल छोडकर वह गोकुल से द्वारका मे जा बसे।

भगवान ने भाद्र कृष्ण अष्टमी को ज म धारण करके दुष्टो का सहार किया था और भक्तो की रक्षा की थी। इसी से उस दिन श्रीकृष्ण ज म का उत्सव मनाया जाता ह।

३१ गाजबीज की पूजा

भाद्र शुक्ल द्वितीया को अधिकाश गहस्थो के घर बापू की पूजा होती ह। यह बापू की पूजा वास्तव मे कुल दवता की पूजा है। इस पूजा मे कच्ची रसोइ बनाकर बापू देव को भोग लगाया जाता ह। फिर सब उसी प्रसाद को पाते ह। यह प्रसाद प्राय उन्ही लोगो को दिया जाता ह जो एक कुल गोत्र के होते ह।

दोपहर को बापू की पूजा के बाद (खासकर कायस्थ लोगो मे) लडके की मा दीवार मे गाजबीज की रचना करती ह। एक मढी बनाकर उसमे एक बालक बिठाया जाता ह और एक दूसरा बालक वक्ष क नीचे खडा दिखलाया जाता ह। मढी के ऊपर गाज का गिरना और वक्ष का गाज से बचना भी दिखाया जाता ह। इसको गाजबीज की पूजा कहते ह। पूजा के बाद कथा होती ह। कथा इस प्रकार ह—

कथा—एक समय बरसात क दिनो मे भाद्र शुक्ल द्वितीया को एक राजा का लडका शिकार खेलने जगल मे गया। उसी जगल मे एक गरीब ग्वालिन का लडका गाये चराता था। दवात बडे जोर से पानी बरसने लगा। तब राजा का लडका हाथी से उतर कर जगल की एक मढी मे चला गया। उसी समय मढी पर गाज गिरी जिससे मढी तो फट गइ, पर राजा का लडका बिलकुल लापता हो गया।

जो गरीब लडका गाये चराता था, उसकी माता नित्य एक रोटी गाय या बछिया को खिलाती थी या किसी भूखी कुमारी कन्या को दिया करती थी। वह लडका जिस पेड के नीचे खडा था, उस पर गाज अवश्य गिरती परन्तु माता की दी हुइ रोटी उस पर इस तरह छा जाती थी कि गाज वक्ष तक पहुच ही नही सकती थी। कुछ देर म वर्षा बन्द हुइ और लडका आनन्द से अपने घर चला गया।

राजा के सिपाही कुँवर को खोजते हुए उसी जगल मे आय जहा यह घटना हुइ थी। वहा जिन लोगो न यह सब हाल आखो देखा, उन्होन कह सुनाया कि गरीब का लडका तो बच गया परतु राजा का लडका मारा गया ह। यह समाचार पाकर राजा के मन मे बडा दु ख हुआ कि म इतना पुण्य धम करता हू फिर भी मेरा लडका मर गया और जो गरीब स्त्री एक रोटी रोजाना देती ह, उसका लडका केवल रोटी की बदौलत बच गया। इस चिता मे जब राजा मलिन मन हो रहा था तब राजा क गुरू ने आकर समझाया कि आप जो पुण्य धम करते ह वह अभिमान पूवक करते ह। इसीलिए वह क्षय होता जाता ह। परन्तु गरीब स्त्री जो कुछ करती ह, श्रद्धापूवक करती ह।

राजा ने गुरु के चरणो मे दडवत करके सतोष किया और आगे के लिए अमूल्य शिक्षा लाभ की। उसने उसी समय आज्ञा दी कि अब से आज के दिन व्रत रहकर गाजवीज की पूजा की जाया करे। राजा रानी ने खुद व्रत किया और पूजन किया। तभी से यह गाजबीज की पूजा चली है।

३२ हरतालिका व्रत

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तीज हस्त नक्षत्र युक्त होती ह। उस दिन व्रत करने से सम्पूण फलो की प्राप्ति होती ह। एक बार महादेवजी ने पावती से उनक पूव जीवन की याद दिलाते हुए इस व्रत के माहात्म्य की जो कथा कही थी वह इस प्रकार ह——

कथा——उत्तर दिशा मे हिमालय नाम का पवत ह। वहा गङ्गाजी के किनारे बाल्यावस्था मे तुमने बडी कठिन तपस्या की थी। बारह वष पयत अद्ध मुखी (उलटे) टगकर केवल धूम्रपान पर रही। चोबीस वष तक सूखे पत्ते खाकर रही। माघ के महीने

म जल मे वास किया और वशाख मास मे पचधूनी तपी। श्रावण के महीने मे निराहार रहकर बाहर वास किया। इस प्रकार तुमको कष्ट सहते देखकर तुम्हारे पिता को बडा दु ख हुआ। उसी समय नारद मुनि तुम्हारे दशन के लिए वहा गये। तुम्हारे पिता हिमालय न अघ्यपाद्यादि द्वारा विधिवत पूजन करके नारद से हाथ जोडकर प्राथना की—– ह मुनिवर ! किस प्रयोजन से आपका शुभागमन हुआ ह कृपाकर आज्ञा कीजिए ?"

तब नारदजी बोले—–"हे हिमवान ! म श्रीविष्णु भगवान का भेजा हुआ आया ह्। वह आपकी कया के साथ विवाह करना चाहते ह।

यह सुनकर हिमालय ने नम्रतापूवक उत्तर दिया—–' यदि विष्णु भगवान स्वय मेरी कया के साथ विवाह करना चाहते ह, तो इसमे मुझे कोइ आपत्ति नही ह।

यह सुनकर नारदजी विष्णु लोक मे गये और विष्णु भगवान से बोल कि मन हिमालय की पुत्री पावती क साथ आपका विवाह निश्चय किया ह। आशा ह कि आप उसे स्वीकार करेंगे।

इधर नारदजी के चल जाने पर हिमालय ने तुमसे कहा कि मन श्रीविष्णु भगवान क साथ तुम्हारा विवाह निश्चय किया है।

तुमको पिता का यह वचन बाण के समान लगा। उस समय तो तुम चुप रही परन्तु पिता के पीठ फेरते ही अति दुखी होकर तुम विलाप करने लगी। तुमको अत्यन्त व्याकुल और विलाप करते हुए देखकर एक सखी ने तुमसे तुम्हारे दु ख का कारण पूछा।

तुमने कहा कि मेर पिता ने विष्णु के साथ मेरा विवाह करना निश्चय किया ह परन्तु म महादेवजी के साथ विवाह करना चाहती हू इसलिए अब मैं प्राण त्यागने के लिए उद्यत हू। तू कोइ उचित सहायता दे।

तब सखी बोली कि प्राण त्यागने की कोइ आवश्यकता

नहीं है। म तुमको ऐसे गहन वन मे ले चलती हू जहा तुम्हारे पिताजी को नुम्हारा पता भी न मिलेगा।

ऐसी सलाह करके सखी तुमको घोर सघन वन मे लिवा ले गइ। जब हिमालय ने तुमको घर मे न पाया तब वह इधर-उधर खोज करने लगे पर कही कुछ पता न चला। इससे हिमालय को बडी चिता हो गइ कि नारदजी से म इस लडकी के विवाह का वचन दे चुका हू। यदि विष्णु भगवान व्याहने आ गय तो म क्या जवाब दूगा। इसी चिन्ता और दुख से व्याकुल होकर वह मूर्छित हो भूमि पर गिर पडे। अपने राजा की यह दशा देखकर सब पवनो ने कारण पूछा। तब हिमालय राजा ने कहा कि मेरी कन्या को न जाने कौन चुरा ले गया ह।

यह सुनते ही समस्त पवतगण जहा-तहा जगलो मे तुम्हारी खोज करने लगे।

इधर तुम सखी समेत नदी-किनारे एक गुफा मे प्रवेश करके मेरा भजन पूजन करने लगी। भादो सुदी तीज को हस्त नक्षत्र मे तुमने बालू (रेत) का शिवलिग स्थापित करके निरा हार व्रत करते हुए पूजन आरम्भ किया था और रात्रि को गीत वाद्य सहित जागरण किया था। ह प्रिये! तुम्हारे व्रत के प्रभाव से मेरा आसन डिग उठा। जिस जगह तुम व्रत पूजन कर रही थीं, उसी जगह म गया और मने तुमसे कहा कि म प्रसन्न हू वरदान मागो।

तब तुमने कहा कि यदि आप प्रसन्न ह तो मुझे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनाना स्वीकार करे।

इस पर म तुम्ह वरदान देकर कलाश चला गया।

सबेरा होते ही तुमने पूजन की सामग्री नदी मे विसजन की, स्नान किया और सखी समेन पारण किया। हिमालय स्वय तुमको खोजते हुए उस जगह आ पहुचे। उन्होने नदी के किनारे दो सुदर बालिकाओ को देखा और तुम्हारे पास जाकर

रुदन करते हुए पूछा कि तुम इस घोर वन मे कसे आ पहुँची ?

तब तुमन उत्तर दिया कि आपने मुझको विष्णु के साथ विवाहने की बात कही थी इसी कारण म घर मे भागकर यहा चली आइ। यदि आप शिवजी के साथ मेरा विवाह करने का बचन दे तो म घर को चल अयथा म इसी जगह रहूगी।

इस पर हिमालय तुमको सब प्रकार मे सन्तुष्ट करके घर लिवा लाये और फिर कालान्तर म उन्होने विधिपूवक तुम्हारा विवाह मेरे साथ कर दिया। जिस व्रत के करने से तुमको यह सौभाग्य प्राप्त हुआ ह उसकी यही कथा ह। अब यह भी जान लो कि इस व्रत को हरतालिका क्यो कहते ह । तुमको सखी हरण करके वन मे लिवा ले गइ, तब तुमने व्रत किया था। इस लिए इसका (हरत आलिका) हरतालिका नाम पडा। सौभाग्य चाहने वाली स्त्री को ही यह व्रत करना चाहिए। इसकी विधि यह ह कि प्रथम घर को लीप पोतकर स्वच्छ कर सुगन्धि छिडके, केले क वक्ष पत्रादि के खम्भ आरोपित करके तोरण पताकाओ स मण्डप को सजाये मण्डप की छत म सुन्दर वस्त्र लगाये। शङ्ख भेरी मदङ्ग आदि बाजे बजाये और सुन्दर मङ्गल गीत गाये। उक्त मण्डप मे पावती समेत बालुका (रेत) का शिव लिग स्थापित करे। उसका पोडशोपचार से पूजन करे। चदन, अक्षत धूप दीप स पूजन करक ऋतु के अनुकूल फलमूल का नवेद्य अपण करे। रात्रि भर जागरण करे। पूजा करके और कथा सनकर यथाशक्ति ब्राह्मणो को दक्षिणा दे। वस्त्र, स्वण, गौ, जो कुछ बन पडे दान कर। यदि हो सके तो सौभाग्य सूचक वस्तुएँ भी दान करे। इस विधि से किया हुआ यह व्रत स्त्रियो को सौभाग्य देने और उसकी रक्षा करने वाला ह । परन्तु जो स्त्री व्रत रखकर फिर मोह के वश हो भोजन कर लेती ह वह सात जन्म पयन्त बाझ रहती ह और जन्म जन्मान्तर विधवा

होती रहती ह। जो स्त्री उपवास नही करती कुछ दिन व्रत रहकर छोड देती ह, वह घोर नक मे पडती ह। पूजन क बाद सोने चादी के बतन मे उत्तम भोजन पदाथ रखकर ब्रह्मणो को दान करे तब आप पारण कर। जो स्त्री इस विधी मे तीज का व्रत करती ह वह तुम्हारे समान अचल सौभाग्य और सम्पूण सुखो को प्राप्त कर अत मे मोक्ष पद लाभ करती ह। यदि न कर सके तो इस कथा के सुनने स ही अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता ह

३३ गणेश चतुर्थी

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणश चतुर्थी कहते ह। प्रात काल स्नानादि नित्य कम करके पूजन के समय प्रथम सोने ताबे मिट्टी अथवा गौ के गोबर की गणश प्रतिमा बना ले। फिर कोरे घट मे जल भरे और उसके मुख पर नवीन वस्त्र बिछा कर उस पर गणेशजी की प्रतिमा स्थापित कर। तब षोडशो-पचार से विधिवत पूजन करे। पूजन के पूव गणेशजी का ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात आवाहन आसन पाद्य, अघ आचमन स्नान वस्त्र गन्ध और पुष्प आदि स पूजन करके पुन अङ्ग पूजा करनी चाहिए। अङ्ग पूजा मे पाद जघा उरु कटि नाभि उदर, स्तन, हृदय कठ स्कध हाथ मख ललाट सिर और सर्वाङ्ग इत्यादि अङ्गो का पूजन करे तथा धूप दीप नवेद्य आचमन ताबूल और दक्षिणा के पश्चात आरती करे और नमस्कार कर। इस पूजा मे इक्कीस लडडू भी रखना चाहिए। उनमे से पाच तो गणेश प्रतिमा क आगे और शेष ब्राह्मणो को देने के लिए रखे। जो ब्राह्मणो को देन क ह दक्षिणा सहित श्रद्धापूवक ब्राह्मणो को दे। यह क्रिया चतुर्थी के मध्याह्न मे करने की है। रात्रि मे जब चन्द्रमा उदय हो जाय तब चद्रमा का

यथा विधि पूजन करके अघ प्रदान करे। तदनतर ब्राह्मणो को भोजन कराकर मौन होकर स्वय लडडओ का भोजन करे। फिर वस्त्र से आच्छादित घट और दक्षिणा सहित गणेश मूर्ति को आचाय को देते हुए गणेशजी का विसजन करे।

कथा—एक समय महादेवजी स्नान करने के लिए कलाश पवत से भोगावती पुरी को पधारे। पीछे से अभ्यग स्नान करते हुए पावनी ने अपने शरीर के मल मे एक पुतला बनाया और जल मे डालकर उसको सजीव किया। मल से बने हुए उस पुत्र को पावती ने आज्ञा दी कि तुम मुदगर लेकर द्वार पर बठ जाओ। और कोइ भी पुरुष भीतर न आने दो।

जब भोगावती से स्नान करके शिवजी वापस आये और पावती के पास भीतर जाने लगे, तब उक्त बालक ने उनको रोक दिया। इससे कुपित होकर महादेवजी ने बालक का सिर काट डाला और आप भीतर चले गये। पावती ने महादेव को कुपित देखकर विचार किया कि कदाचित भोजन मे विलम्ब हो जाने के कारण ही उन्हे क्रोध आ गया ह। इसलिए उन्होने तुरत भोजन तयार करके दो थालो मे परोस दिया और शिवजी को भोजन करने के लिए बुलाया। दो पात्रो मे भोजन परोसा देखकर शिवजी ने पूछा कि यह दूसरा पात्र किसके लिए ह? पावजी ने गणेश का नाम बताया। यह सुनकर महादेवजी ने कहा कि मैने तो उस बालक का सिर काट डाला ह। महादेवजी की बात से पावतीजी अत्यन्त व्याकुल हो गयी। उन्होने शिवजी से उसे जिलाने की प्राथना की। पावती को प्रसन्न करने के लिए शिवजी ने एक हाथी के बच्चे का सिर काटकर बालक के धड से जोड दिया और उसे सजीव कर दिया। इस प्रकार पावती अपने पुत्र गणेश को पाकर अत्यत प्रसन्न हुई। उन्होने पति और पुत्र दोनो को भोजन कराकर पीछे आप भी भोजन किया। यह घटना भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को हुइ थी।

दूसरी कथा—एक समय शकरजी कलाश छोडकर पावती सहित नमदा के किनारे पहुचे। वहा एक अत्यत रमणीक स्थान देखकर पावती ने शिवजी स कहा कि यहा आपके साथ चौपड खेलने की मेरी इच्छा ह।

शिवजी ने कहा कि हम तुम तो खेलनेवाले हुए परतु हार जीत का साक्षी भी तो कोइ होना चाहिए।

पावती ने पास मे पडे घास के तिनको से मनुष्य का आकृति का बनाकर उसे सजीव कर दिया और उसस कहा—'बेटा! हम दोनो पासा खेलते ह। तुम हमारी जय पराजय के साक्षी होकर खेल क अत मे बतलाना कि हम दोनो मे से किसकी जीत हुइ?

खेल मे पावती की तीन बार विजय हुइ और शकर तीनो बार हारे। परन्तु अत मे जब बालक से पूछा गया तब उसने शिवजी की जीत और पावती की हार बताइ। उसकी इस दुष्टता पर कुपित होकर पावतीजी ने उसे शाप दिया कि तूने सत्य बात के कहने मे प्रमाद किया। इस कारण तू एक पर से लगडा होगा और सदव यहा इस कीच मे पडा रहकर दु ख पाता रहग।।

माता के शाप को सुनकर बालक ने प्राथना की कि मन कुटिलता से ऐसा नही किया। केवल बालकपन से ऐसा किया ह! अत म सवथा क्षतय हू। तब पावती ने दयालु होकर कहा कि जब इस नदी तट पर नाग कयाए गणेश पूजन करने आयेगी, तब तू उनके उपदेश से गणेश व्रत करके मुझको प्राप्त करेगा। यह कहकर पावतीजी हिमालय की ओर चली गइ।

एक वष व्यतीत होने पर नाग कयाये गणेशजी का पूजन करने के लिए नमदा तट पर गइ। उस समय श्रावण का महीना था। नाग कयाओ ने स्वय गणेश व्रत किया और उस बालक को भी पूजा की विधि बताइ। नाग कयाओ के चले जाने पर जब उस बालक ने इक्कीस दिन पयत गणेश व्रत किया, तब गणेशजी

न प्रगट होकर कहा कि म तुम्हार व्रत से अत्यन्त सतुष्ट हुआ हू। जन जो इच्छा हो सो वर मागो। यह सुनकर बालक ने कहा कि मेर पाव म शक्ति आ जाय जिसस म कलाश पर चला जाऊँ और वहा माना पिता मुझ पर प्रसन्न हो जाय। बस यही वरदान मागता ह।

गणेशजी बालक की प्राथना सुनकर ओर 'तथास्तु' कहकर अन्तर्द्धान हो गये। बालक शीघ्र ही कलाश पर पहुचकर शिवजी के चरणो पर जा गिरा। महादेवजी ने पूछा कि त्रिलोचन! तून ऐसा क्या उपाय किया जिससे तू पावती के शाप से मक्त होकर यहा तक आ पहुचा? यदि इस प्रकार का कोइ व्रत हो नो मुझे भी बतला जिसे करके म भी पावती को प्राप्त करू। क्योंकि पावती उस दिन क्रुद्ध होकर चली गइ। तब स आज तक मेरे समीप नही आइ।

त्रिलोचन की बताइ विधि से महादवजी ने इक्कीस दिन तक गणेश व्रत किया जिससे पावती के अन्त करण मे आपही शिवजी से मिलने की उत्कठा हुइ। अत वे अपने पिता हिमालय से विमान का प्रबध कराकर शीघ्र ही शिवजी से आ मिली। उन्होंने शिवजी से पूछा कि आपने क्या ऐसा उपाय किया, जिससे मुझको आपसे मिलने की प्रेरणा उत्पन्न हुइ? तब शिवजी ने त्रिलोचन के कहे हुए व्रत को बतलाया।

अपने पुत्र षडानन (स्वामिकार्तिक) से मिलने के लिए जब पावनी न २१ दिन तक प्रतिदिन २१ दूर्वा, २१ पुष्प और २१ लडडुओ से गणेश पूजन किया, तब इक्कीसव दिन स्वामि कार्तिक आप ही पावती से आ मिल। स्वामिकार्तिक ने भी जब माता के मुख से सुनकर यह व्रत किया तब उन्होंने समस्त सेनानियो की प्रमुखता का महत्वपूण पद पाया। यही व्रत स्वामि कार्तिक ने अपन मित्र विश्वामित्र को भी बताया। विश्वामित्र ने जब यह व्रत किया तब गणेशजी प्रकट हुए और बोले कि वर

मागा। विश्वामित्र ने यह वर मागा कि म इसी जन्म में इसी शरीर से ब्रह्मर्षि हो जाऊँ। गणेशजी ने वरदान देकर उनकी इच्छा भी पूर्ण की।

३४ सिद्धि विनायक व्रत

सिद्ध विनायक व्रत गणेश चतुर्थी को किया जाता है। पूजन के आरम्भ मे सकल्प करने के बाद गणेशजी की स्थापना प्रतिष्ठा और ध्यान करना चाहिए। ध्यान के पश्चात आवाहन आसन, अर्घ, पाद्य, मधुपर्क आचमन पचामृत स्नान शुद्धोदक स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत सिदूर भूषण और चदन आदि से पूजन कर पुन अङ्ग पूजन करे। तत्पश्चात् गूगल धूप दीप नैवेद्य आचमन, फूल ताम्बूल भूषण और दूर्वा आदि अर्पण करके नमस्कार करे और २१ पुआ बनाकर गणेश प्रतिमा के पास रक्खे। उनमे से १० पुआ ब्राह्मण को दे। एक गणेश प्रतिमा के पास रहने दे और १० आप भोजन करे।

वैसे तो प्रत्येक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को गणेश व्रत होता है परन्तु माघ श्रावण, मार्गशीर्ष और भाद्रपद मे गणेश व्रत करने का विशेष माहात्म्य है। उस दिन प्रातःकाल सफेद तिलो के उबटन से स्नान करके मध्याह्न मे गणेश पूजन करना चाहिए। पहले एकदन्त, शूर्पकर्ण गजमुख चतुर्भुज पाशाकुश धारण करने वाले गणेशजी का ध्यान करे। तदनन्तर पचामृत गन्ध आवाहन और पाद्यादि करके दो लाल वस्त्रो का दान करना चाहिए। पुन ताम्बूल पर्यन्त पूजन समाप्त करके २१ दूर्वाओ को हाथ मे लेकर दो दो दल दूर्वाओ मे गणेश के एक-एक नाम का उच्चारण करे। पूजा के समय घी के बने हुए २१ मोदक गणेशजी के पास रखे। पूजन की समाप्ति पर १०

मोदक ब्राह्मण को दे, १० अपने लिए रक्खे और एक प्रतिमा के पास रहने दे। गणेश प्रतिमा को दक्षिणा समेत ब्राह्मणो को दान करे। नमित्तिक पूजन करने के बाद नित्य पूजन भी करे और तत्पश्चात ब्राह्मण को भोजन कराकर आप भोजन करे।

भादो मास की शुक्ल चतुर्थी म च द्र दशन का निषेध ह। लोक प्रसिद्ध ह कि चौथ का चाद देखने से झूठा कलक लगता ह । यदि दवात चौथ का चाद देख ले तो सिद्ध विनायक व्रत करने से दोष का परिहार होता ह। इसकी कथा इस प्रकार ह —

कथा—एक समय सनत्कुमारो से न िदकेश्वर ने कहा—किसी समय चौथ के च द्रमा के दशन करने से भगवान श्रीकृष्ण पर जो लाछन लग गया था वह इसी गणेश व्रत के करने से नष्ट हुआ।

नन्दिकेश्वर के ऐसे वचन सुनकर सनत्कुमारो ने अत्यन्त आश्चय मे होकर पूछा कि पूण ब्रह्म पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण को कब और कसे कलक लगा ? कृपया इस इतिहास का वणन कर हमारा स देह दूर कीजिए।

यह सुनकर नन्दिकेश्वर ने कहा कि राजा जरास ध के डर से श्रीकृष्ण भगवान समुद्र के बीच मे पुरी बसाकर रहने लगे। इसी पुरी का नाम द्वारकापुरी ह। द्वारकापुरी के निवासी सत्राजित यादव ने श्री सूय भगवान की आराधना की जिससे प्रसन्न होकर सूय भगवान ने उसको नित्य आठ भार स्वण देने-वाली स्याम तक नाम की एक मणि अपने गले से उतारकर दे दी। उस मणि को पाकर जब सत्राजित यादव समाज मे गया तब भगवान श्रीकृष्ण ने उस मणि को प्राप्त करने की इच्छा की। परन्तु सत्राजित ने उस मणि को उ हे न देकर उसे अपने भाइ प्रसेनजित को दे दिया।

एक दिन प्रसेनजित घोडे पर सवार होकर वन मे शिकार

खेलने चला गया। वहा एक सिह ने उसे मारकर वह मणि उससे छीन ली परन्तु जाम्बवान् नामक रीछराज ने उस सिह को मारकर वह मणि छीन ली और मणि को लेकर वह अपने विवर मे घुस गया।

जब कइ दिन तक प्रसेनजित शिकार से वापस नही आया तब सत्राजित को बडा दुख हुआ। उसने सम्पूण द्वारकापुरी मे यह बात प्रसिद्ध कर दी कि श्रीकृष्ण ने मेरे भाइ को मारकर मणि ले ली ह। इस लोकापवाद को मिटाने के लिए श्रीकृष्ण बहुत-से आदमियो सहित वन मे जाकर प्रसेनजित को खोजने लगे। उनको वन मे इस घटना के स्पष्ट चिह्न मिले कि प्रसेनजित को एक सिह ने मारा ह और सिह को एक रीछ ने मार डाला ह। रीछ के पद चिह्नो का अनुसरण करते हुए श्रीकृष्ण एक गुफा के द्वार पर जा पहुँचे। उस गुफा को रीछ के रहने का घर समझकर वह उसमे पठ गये। गुफा के भीतर जाकर उन्होने देखा कि जाम्बवान् का एक पुत्र और कया उस मणि से खेल रहे ह।

श्रीकृष्ण को देखते ही जाम्बवान ताल ठोककर उठ खडा हुआ। श्रीकृष्ण ने भी उसको युद्ध के लिए ललकारा। दोनो मे घोर युद्ध होने लगा। इधर श्रीकृष्ण के साथियो ने सात दिन तक उनकी राह देखी। जब वह न लौटे तब वे उनको मारा गया समझकर अत्यत पश्चात्ताप करते हुए द्वारकापुरी को लौट आये।

इक्कीस दिन तक युद्ध करने के पश्चात जब जाम्बवान् श्रीकृष्ण को परास्त न कर सका तब उसके मन मे यह धारणा उत्पन्न हुइ कि यही वह अवतार ह जिसक लिए मुझको श्रीराम-चन्द्रजी का वरदान हुआ था। ऐसा निश्चय करके जाम्बवान ने अपनी कया जाम्बवती श्रीकृष्ण को ब्याह दी और वह मणि भी दहेज मे दे दी। श्रीकृष्ण भगवान ने द्वारका मे आकर स्यामतक

मणि सत्राजित को दे दी जिससे लज्जित होकर सत्राजित ने अपनी पुत्री सत्यभामा श्रीकृष्ण को व्याह दी और जब वह मणि भी श्रीकृष्ण को देने लगा तब उन्होंने उसके लेने से इंकार कर दिया।

कालान्तर में किसी आवश्यक कार्यवश जब श्रीकृष्ण इन्द्र-प्रस्थ चले गये तब अक्रूर तथा ऋतुवर्मा की सलाह से शतधन्वा नामक यादव ने सत्राजित को मारकर स्यामन्तक मणि ले ली। सत्राजित के मारे जाने का समाचार पाकर श्रीकृष्ण तुरन्त इन्द्रप्रस्थ से द्वारका आये और शतधन्वा को मारकर उससे मणि छीन लेने को तयार हुए। उनके इस कार्य में बलरामजी भी योग देने पर सन्नद्ध हुए। यह समाचार पाकर शतधन्वा अक्रूर को मणि देकर द्वारका से भागा, परन्तु थोडी ही दूर पर कृष्ण ने उसको पकड कर मार डाला। फिर भी मणि उनके हाथ न लगी। इतने में बलरामजी भी वहां पहुँच गये। श्रीकृष्ण ने उनसे कहा कि मणि तो उसके पास नहीं मिली। परन्तु बलरामजी को विश्वास नहीं हुआ और वह रुष्ट होकर विदर्भ चले गये। द्वारका लौटकर आने पर लोगों ने श्रीकृष्ण का बडा अपमान किया। सर्वसाधारण में यह अफवाह फैल गई कि श्रीकृष्ण ने लालच वश अपने भाई को भी त्याग दिया।

श्रीकृष्ण एक दिन इसी चिन्ता में व्यस्त थे कि दैवात् नारदजी वहां आ गये और वह श्रीकृष्ण से बोले कि आपने भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी के चन्द्रमा के दर्शन किये थे। इसी कारण यह लाञ्छन आपको लगा है।

श्रीकृष्ण ने उनसे पूछा कि चौथ के चन्द्रमा को ऐसा क्या हो गया? जिसके कारण उसके दर्शन मात्र से मनुष्य को कलंक लगता है।

नारदजी ने कहा कि एक समय ब्रह्मा ने चौथ को गणेश का व्रत किया था, जिससे गणेशजी प्रगट हो गये। ब्रह्मा ने गणेशजी

से यह वरदान मागा कि मुझको सष्टि की रचना करने म मोह न हो। जब गणेशजी 'एवमस्तु' कहकर जाने लगे, तब उनके विकट रूप को देखकर चद्रमा उनका उपहास करने लगा। इससे अप्रसन्न होकर गणशजी ने चद्रमा को शाप दिया कि आज से तुम्हारे मुख को कोइ कभी नही दखेगा। यह कहकर गणेशजी तो अपने धाम को चले गये और शाप के कारण चद्रमा मान-सरोवर की कुमुदिनियो मे जाकर छिप गया। चद्रमा के बिना लोगो को कष्ट मे देखकर तथा ब्रह्मा की आना पाकर सब देवनाआ ने चद्रमा के निमित्त गणेशजी का व्रत किया। देवताओ के व्रत से प्रसन्न होकर गणेशजी ने वरदान दिया कि अब चद्रमा शाप मुक्त हो जायगा परन्तु फिर भी वष म एक दिन भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को जो कोइ भी मनप्य चद्रमा का दशन करेगा उसका चोरी आदि का झठा कलक अवश्य लगेगा। इसके विरद्ध जो मनुष्य प्रत्येक द्वितीया के चद्रमा का दशन करता रहेगा उसको लाछन नही लगेगा। कदाचित नियमित दशन न करने वाला पुरष चौथ के चद्रमा को दख भी ले, तो उसको मरा चतुर्थी का सिद्धि-विनायक व्रत करना चाहिए। उससे उसके दोष की निवत्ति हो जायगी।

यह सुनकर सब देवता अपने अपने स्थान को चले गये और चद्रमा भी मानसरोवर से चद्रलोक मे आ गया। अत इसी चद्रमा के दशन के कारण आप पर यह व्यथ आराप हुआ है।

३५ कपर्दि विनायक व्रत

श्रावण मास की शुक्ल चतुर्थी स लगाकर भाद्रपद की शुक्ल चतुर्थी तक जो मनुष्य एक बार भोजन करके एक मास पयत कर्पादि गणेश का व्रत करता ह, उसके सब काम सिद्ध होते ह। पूजा की विधि प्रथम कहे हुए व्रतो के अनुसार है। इसमे

विशेषता केवल इतनी ह कि पूजन के पश्चात २८ मुटठी चावल और कुछ मिठाइ ब्रह्मचारी को दान करना चाहिए।

कथा—एक समय श्री महादेवजी पावती के साथ चौपड खेल रहे थे जिसमे पावतीजी ने शिवजी के आयुधादि सम्पूण पदार्थों को जीत लिया। प्रसन्नचित्त महादेव ने जीते हुए पदार्थों मे से केवल गजचम वापस मागा, परन्तु पावती ने नही दिया। महादेव के बहुत हास्यपूण अनुनय विनय पर भी जब पावती ने ध्यान नही दिया तब वह क्रोध के आवेश मे बोले—"पावती! अब म इक्कीस दिन तक तुमसे नही बोलगा।"

ऐसा कहकर शिवजी किसी अन्य स्थान को चले गये। पावती महादेवजी को खोजती हुइ किसी घने वन मे चली गइ। वहा उन्हाने कुछ स्त्रियो को व्रत और पूजन करते देखा। पार्वती क पूछने पर उन्होने बताया कि यह कपर्दि विनायक का व्रत है। जिस प्रकार वे स्त्रिया व्रत कर रही थीं, उसी प्रकार पावती ने भी व्रत करना आरम्भ किया। उन्होने केवल एक ही दिन व्रत किया था कि महादेवजी उसी स्थान पर आ गये। शिवजी ने पावती से पूछा—"प्रिय! तुमन ऐसा कोन सा व्रत किया जिसके कारण मुझ जसे उदासीन का सकल्प भग हो गया?"

इस पर पावती ने शिवजी को कपर्दि व्रत की विधि बताइ। पुन महादव ने विष्णु को और विष्णु ने ब्रह्मा को, ब्रह्मा ने इन्द्र को और इन्द्र ने राजा विक्रमाक को यह व्रत बताया। राजा विक्रमाक इस व्रत के प्रभाव को सुनकर जब घर गया, तब उसने अपनी रानी से कपर्दि व्रत के अप्रतिभ प्रभाव का वणन किया। भावी दुख के कारण रानी ने राजा के इस कथन पर विश्वास नही किया वरन व्रत की बहुत कुछ निंदा की जिससे रानी के समस्त शरीर म कोढ हो गया। राजा ने उसी समय रानी से कहा तुम शीघ्र ही यहा से चली जाओ, नही तो मेरा सपूण राज भ्रष्ट हो जायगा।

तब रानी राजमहल से निकल कर जगल मे ऋषि मुनियो के आश्रम मे चली गइ और वहा ऋषि मुनियो की सेवा करने लगी। जब सेवा करते करते रानी को बहुत दिन हो गय तब सब कहने लगे— रानी! तुमने कर्पर्दि विनायक का अपमान किया ह। अत जब तक गणेशजी की पूजा न करोगी तब तक तुम्हारा आरोग्य होना कठिन ह।

महर्षियो के ऐसे वचन सुनकर रानी न गणेश-व्रत करना आरभ किया और व्रत को एक मास पूरा होते होते रानी का शरीर दिव्य कचन के समान नीरोग हो गया। रानी बहुत दिनो तक उसी आश्रम मे रही।

एक समय पावती सहित महादेवजी नादिया पर चढ़कर वन माग से चले जा रहे थे। माग मे एक अति दुखी ब्राह्मण को देखकर पावती ने उससे पूछा— हे विप्र! आप किस कारण मे ऐसा विलाप कर रहे ह?'

ब्राह्मण बोला— देवि! वह सब दारिद्र्य की कृपा का फल ह। तब कृपालु देवी पावती ने ब्राह्मण स कहा कि तुम राजा विक्रमाक के राज मे चले जाओ। वहा एक वश्य पूजन की सामग्री देता ह। उससे कर्पर्दि विनायक गणेश का व्रत और पूजन करना। उसीसे तुम्हारी दरिद्रता नष्ट हो जायगी और साथ ही तुम राजा विक्रमाक के राजमत्री हो जाओगे।

पावती की आज्ञा मानकर उक्त ब्राह्मण राजा विक्रमाक के राज्य मे चला गया और विधिवत विनायक का पूजन करने से थाडे ही दिनो मे उस राजा का मत्री हो गया।

किसी समय राजा विक्रमाक वन यात्रा करता हुआ उसी ऋषि आश्रम मे जा पहुचा जहा उसकी रानी रहती थी। रानी को नीरोग ओर उसकी दिव्य देह देखकर उस बडा आनन्द हुआ। वह रानी को साथ लेकर महल को चला आया।

कर्पर्दि विनायक का व्रत करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि

वह व्रत काल के एक मास मे इस कथा को पाच बार श्रवण कर।

३६ ऋषि पञ्चमी

भाद्रपद शुक्ल पचमी को ऋषि पचमी कहते ह। यह व्रत प्राय स्त्रियो का ह। किसी किसी दशा मे पुरुष भी अपनी स्त्री के लिए इस व्रत को कर सकता ह।

व्रत करने वाली स्त्री को चाहिए कि वह भाद्रपद शुक्ल पचमी को मध्याह्न के समय स्वच्छ जलवाली नदी या ताल पर जाकर प्रथम १०८ अथवा ८ अपामाग की दातुन करे और फिर मत्तिका-स्नान क पश्चात पचगव्य पान कर। पुरुष हो तो हवन करके पचग य पान करे। स्त्री हो तो केशव आदि विष्णु के नामो को जपकर पचगव्य ले। तत्पश्चात स्नान करके प्रथम अपना नित्य-कम कर। इस विधि से स्नान करके, घर पर आकर उपवास करनेवाली स्वय अपने हाथ से पूजा के स्थान को गोबर से चौकोर लीप। फिर उसी पर अनेक रगो से सवतोभद्र मडल बनाकर मिट्टी अथवा ताब का घडा उस पर रक्खे और उसको गले तक कपडे से ढक दे। घट के ऊपर ताबे अथवा बास के पात्र मे जौ भरकर और उसमे पचरत्न फूल ग ध और अक्षत रखकर वस्त्र से ढक दे। उसी स्थान पर अष्टदल कमल लिखकर सप्त ऋषियो की पूजा करे। आवाहन से लेकर ताम्बूल पयन्त षोडशोपचार स पूजन करने के अन तर पूजा का पक्वान्न ब्राह्मण को दान कर और आप ऋषि अन्न का भोजन करे।

पहली कथा—विदभ देश मे उत्तङ्क नामक एक ब्राह्मण रहता था। पतिव्रतधम मे अग्रगण्या उसकी स्त्री का नाम सुशीला था। उस ब्राह्मण के घर मे केवल दो सताने थी—एक कया और एक पुत्र। पुत्र परम्परागत सस्कारो के कारण थोडी ही

उम्र मे सम्पूण वद गास्त्रा का ज्ञाता हा गया था। यद्यपि उसकी बहन भी बहुत सशीला थी और अच्छ कुल मे ब्याही थी तथापि किसी पूव पाप के कारण वह विधवा हो गइ थी। उसी दुख से सतप्त वह ब्राह्मण अपनी स्त्री और कया सहित गगा के किनारे वास करने लगा और वहा धम चर्चा करते हुए काल बिताने लगा। कया अपने पिता की सेवा-सुश्रषा करती थी और पिता अनेक ब्रह्मचारियो को वेद पढाता था। एक दिन सोती हुइ कया के शरीर म अकस्मात कीडे पड गये। कया न अपनी दशा देख-कर माता से कहा। माता न कया के इस दुख से दुखी होकर बहुत पश्चाताप किया और उसने पति को सब वत्तात सुनाकर इसका कारण पूछा।

उत्तङ्क ने समाधिस्थ होकर इस घटना के कारण पर विचार किया और स्त्री को उत्तर दिया कि पूव जम मे यह कया ब्राह्मणी थी। इसने रजस्वला अवस्था मे अपने बरतनो का स्पश किया था। इसी पाप के कारण इसके शरीर मे कीडे पड गये ह। धमशास्त्र मे लिखा ह कि रजस्वला स्त्री प्रथम दिन चाण्डालिनी के समान दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी के समान और तीसरे दिन धोबिन के समान अपवित्र रहती ह। चौथे दिन स्नान करक शुद्ध होती ह। इसके अतिरिक्त इस कया ने इसी जम मे एक और भी अपराध किया ह। वह यह कि इसने स्त्रियो को ऋषि-पचमी का व्रत करते देखकर उनकी अवहेलना की ह। अत इसके शरीर मे कीडे पडने का एक यह भी कारण ह। उक्त व्रत की विधि को देखने के कारण ही इसने ब्राह्मण कुल मे जम पाया ह अयथा यह चाण्डाल के घर मे जम लेती। ऋषि-पचमी का व्रत सब व्रतो मे प्रधान ह क्योकि इसी के प्रभाव से स्त्री सौभाग्य सम्पन्न रहती ह और रजस्वला होने की अवस्था मे अज्ञानपूवक होनेवाले स्पर्शादि से मुक्त हो जाती ह।

दूसरी कथा—सययुग मे विदभ देश मे प्रसेनजित नामक

एक राजर्षि राज करता था। उसके राज्य मे वेद वेदाङ्ग का ज्ञाना सुमित्र नाम का एक ब्राह्मण रहता था। वह खेती करके अपना निर्वाह करता था। जयश्री नाम की उसकी स्त्री भी खेती के काम मे उसकी सहायक रहती थी। किसी समय वह स्त्री भी रजोवती होकर अज्ञात अवस्था मे गहकाय करती रही और ब्राह्मणो को भी स्पश करती रही। समय पाकर दवयोग से उन दोनो का एक साथ ही प्राणान्त हुआ। दूसरे जन्म मे स्त्री ने कुत्ती का जन्म पाया और ब्राह्मण ने बल का। ब्राह्मण के पुत्र का नाम सुमति था। वह भी अपने पिता की तरह वेद वेदाङ्ग का ज्ञाता तथा ब्राह्मण और अतिथि का पूजक था। उसके माता पिता, कुत्ती और बल योनि मे उसी के घर मे रहते थे। एक समय सुमति ने अपने माता पिता का श्राद्ध किया। सुमति की स्त्री ने ब्राह्मणो क भोजन के लिए जो खीर बनाइ थी, उसमे अकस्मात एक सप विष उगल गया। इस घटना को कुत्ती ने स्वय देखा था। अत उसने यह विचार कर कि इस खीर के खाने वाले ब्राह्मण मर जायगे, खीर को छ लिया। इससे क्रुद्ध होकर सुमति की स्त्री ने कुत्ती को जलती हुइ लकडी से मारा और उसने सब बरतन पुन माज कर फिर से खीर बनाइ। जब सब ब्राह्मण भोजन कर चुके, तब उनका जो जठन बचा, उसे सुमति की स्त्री ने पथ्वी मे गाड दिया। इस कारण कुत्ती उस दिन भखी ही रही। बल को समति ने हल मे जोता था और उसका मुह भी बाध दिया था जिससे वह भी तण नही चर सका। इन दोनो के भखे रहने के कारण सुमति का श्राद्ध करना व्यय ही हुआ। सुमति पशु पक्षियो की भाषा समझता था। अस्तु, वह अपने माता पिता की स्थिति को जानकर ऋषि मनियो के आश्रमो मे गया और उसने उनसे अपने माता पिता के पशु-योनि मे जन्म पाने का कारण पूछा। ऋषियो ने उन दोनो क पूव जन्म के पापो का हाल कह सुनाया और यह भी समझाया कि यदि तुम स्त्री-पुरुष दोनो ऋषि पचमी

का व्रत करके विधिपूवक उद्यापन करोगे और उस दिन बल की कमाइ की कोइ वस्तु न खाओगे तो अवश्य ही तुम्हारे माता पिता की मक्ति होगी। ऋषि पचमी के व्रत मे कश्यप अत्रि भारद्वाज विश्वामित्र गौतम जमदग्नि और सपत्नीक वशिष्ठ इन सात ऋषियो की पूजा करने का विधान है।

सुमति ने माता पिता की मक्ति के लिए ऋषि पचमी का व्रत किया। अत ऋषि पचमी के व्रत के कारण सुमति के माता पिता मुक्ति का प्राप्त हो गय।

३७ सन्तान-सप्तमी-व्रत

भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को यह व्रत किया जाता है। इस मुक्ताभरण व्रत भी कहते है। यह व्रत मध्याह्न तक होता है। मध्याह्न को चौक पूरकर शिव पावती की स्थापना करे और—हे देव! जन्म जमान्तर के पाप से मोक्ष पाने तथा खण्डित सन्तान पुत्र पौत्रादि की वद्धि के हेतु म मुक्ताभरण व्रत करके आपका पूजन करती हू कहकर सकल्प करे। पूजन के लिए चन्दन, अक्षत धूप दीप नवेद्य पुङ्गीफल नारियल आदि सम्पूण सामग्री प्रस्तुत रखे। नवद्य भोग के लिए खीर पूडी ओर खास कर गुड डाले हुए पुवे बनाकर तयार रखे। रक्षा बधन के लिए डोरा भी हो। कोइ कोइ डोरे के स्थान पर सोने चादी की चूडिया रखती है या दूब का डोरा कल्पित कर लती है।

स्त्रियो को चाहिए कि वे यह सकल्प करे—हे देव! म जो यह पूजा आपकी भेट करती हू, उसे स्वीकार कीजिए। इसी प्रकार शिवजी के सामने रक्षा का डोरा या चूडी रखकर और ऊपर कहे हुए क्रम से आवाहन से लेकर फूल-समपण तक पूजा अपण करके नीराजन पुष्पाजलि और प्रदक्षिणा करे और नमस्कार करके यह प्राथना करे—हे देव! मेरी दी हुइ पूजा को स्वीकार

करते हुए मेरी बनी बिगडी भल चक क्षमा कीजिए। नदनतर डोरे को शिवजी को समपण करके निवेदन करे—हे प्रभ ! इस पुत्र-पौत्र वृद्धनकारी डोरे को ग्रहण कीजिए। उस डोरे को प्राथना पूवक शिवजी से वरदान क रूप मे लेकर आप धारण करे। फिर कथा सुने।

कथा—श्रीकृष्ण भगवान राजा युधिष्ठिर से कथा प्रसग वणन करते है कि मेरे ज म लेने से पहले एक बार मथुरा मे लोमश ऋषि आये थे। मेरे पिता माता वसुदेव देवकी ने उनकी विधिवत पूजा की। तब ऋषि वर ने उनको अनेक कथाए सुनाइ। फिर वह बोले— 'हे देवकी ! कस ने तुम्हारे कइ पुत्रो को ज मते ही मरवा डाला ह इस कारण तुम पुत्र-शोक से दु खी हो। इस दु ख से मुक्ति पाने के लिए तुम मक्ताभरण व्रत करो। जैसे राजा नहुष की रानी च द्रमुखी न यह व्रत किया और उसके पुत्र नहीं मरे, वसे ही यह व्रत पुत्र शोक से तुम्हे मुक्त करेगा। इसके प्रभाव से तुम पुत्र सुख को प्राप्त होगी इसमे सशय नहीं।"

तब देवकी ने पूछा— हे ब्राह्मण ! जो राजा नहुष की रानी च द्रमुखी थी, वह कौन थी और उसने कौन सा व्रत किया था ? उस व्रत को कृपाकर विधिपूवक कहिए।"

तब लोमशजी ने यह कथा कही—

अयोध्यापुरी म नहुष नाम का एक प्रतापी राजा हो गया ह। उसकी अति सु दरी रानी का नाम च द्रमुखी था। उसी नगर मे वि णुगुप्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसकी सवगणसपन्ना स्त्री का नाम रूपवती था। उक्त दोनो स्त्रियो मे परस्पर बडी प्रीति थी। एक दिन दोनो सरयजी मे स्नान करने गइ। वहाँ उन्होने और भी बहुत-सी स्त्रियो को स्नान करते देखा। स्नान करने के बाद वे मण्डल बाधकर बठ गइ। फिर उन्होने पावती-समेत शिवजी को लिखकर ग ध अक्षत, पुष्प आदि से उनकी पूजा की। जब वे पूजन करके घर को चलने लगी तब उन दोनो

(रानी ओर ब्राह्मणी) ने उनक पास जाकर पूछा कि तुम किसका और क्यो पूजन कर रही थी ?

उन्होंने उत्तर दिया कि हम गौरी समेत शिवजी का पूजन कर रही थी। उनका डोरा बाधकर हमन अपनी आत्मा उन्ही का अपण कर दी ह। तात्पय यह ह कि हम लोगो ने यह मकल्प किया ह कि जब तक जियेगी, यह व्रत करती रहगी। यह मख मतान बढाने वाला मुक्ताभरण व्रत सप्तमी को होता है। इम सुख-सौभाग्यदाता व्रत को हम लाग करती ह।

स्त्रियो की बाते सुनकर रानी और उसकी सखी दोनो ने आजन्म सप्तमी का व्रत करने का सकल्प करके शिवजी के नाम का डोरा बाध लिया। परन्तु घर पहुच कर उन्होने अपने किये हुए सकल्प को भुला दिया। परिणाम यह हुआ कि जब वे मरी तब रानी बानरी हुइ और ब्राह्मणी मर्गी हुइ। कुछ समय बाद पशु शरीर त्याग कर वे पुन मनुष्य योनि मे जन्मी। रानी चन्द्रमुखी तो मथुरा के राजा पथ्वीनाथ की प्यारी रानी हुइ और ब्राह्मणी एक ब्राह्मण के घर मे जन्मी। इस जन्म मे रानी का नाम इश्वरी हुआ और ब्राह्मणी भूषणा नाम से प्रसिद्ध हुइ। भूषणा राज पुरोहित अग्निमुखी को ब्याही गइ। इस जन्म मे भी रानी और पुरोहितनी दोनो मे परस्पर प्रीति और सरय भाव था। व्रत को भूल जाने के कारण यहा भी रानी अपुत्रा रही। मध्य वयस म उसको एक बहरा और गूगा पुत्र जन्मा, परतु वह भी नौ वष का होकर मर गया। परतु व्रत को याद रखने और नियम पूवक व्रत करने के कारण भूषणा के गभ से सुदर और नीरोग आठ पुत्र उत्पन्न हुए।

रानी को पुत्र शोक से दुखी जानकर पुरोहितानी उससे मिलने गइ। उसे देखते ही रानी को इर्ष्या उत्पन्न हुइ। तब उसने पुरोहितानी को विदा करके उसके पुत्रो को भोजन के लिए बुलाया और उनको भोजन मे विप खिलाया। परन्तु व्रत के प्रभाव

से वे नही मरे। इससे रानी को बहुत क्रोध आया। तब उसने नौकरो को आज्ञा दी कि वे पुरोहितानी के पुत्रो को पूजाके बहाने यमुना के किनारे ले जाकर गहरे जल मे ढकेल दे।

रानी के दूतो ने वैसा ही किया। परन्तु व्रत के प्रभाव से यमुनाजी उथली हो गयी और ब्राह्मण बालक बाल बाल बच गए। तब तो रानी ने जल्लादो को आज्ञा दी कि वे ब्राह्मण बालको को वध स्थान म ले जाकर मार डाले। परन्तु जल्लाद आघात करने पर भी ब्राह्मण बालको को न मार सके। यह समाचार सुनकर रानी को बडा आश्चय हुआ। तब उसने पुरोहितानी को बुलाकर पूछा कि ऐसा तूने कौन सा पुण्य किया ह कि तेरे बालक मारने से भी नही मरते ?

इस प्रश्न के उत्तर मे पुरोहितानी बोली कि आपको तो पूवजम की बात याद नही ह परतु मुझे जो मालूम ह सो कहती हू। पहले जम मे तुम अयोध्या के राजा की रानी थी और म तुम्हारी सखी थी। हम तुम दोनो ने सरयू किनारे श्रीशिव-पावती के पूजन का डोरा बाधकर आजम सप्तमी का व्रत करने का सकल्प किया था। परन्तु फिर व्रत करना भूल गयी। मुझे अतिम समय मे व्रत का ध्यान आ गया, इस कारण म मर कर बहु सतानवाली कुक्कुटी हुइ और तुम बानरी हुयी। पक्षि योनि मे व्रत कर नही सकती थी परन्तु व्रत का स्मरण मात्र रखने से म इस जम मे नीरोग और बहु सतानवाली हू। म अब भी व्रत करती हू। उसी के प्रभाव से मेरी सताने स्वस्थ और दीर्घायु ह।

पुरोहितानी के कहने से रानी को भी अपने पूव जम का हाल स्मरण आ गया और वह उसी समय से नियमपूवक व्रत करन लगी। तब उसके कइ पुत्र पौत्रादि हुए और अत मे उन दोनो ने शिव लोक का वास पाया।

लोमशजी बोले कि हे देवकी! जिस प्रकार रानी चद्रमुखी

एक वक्त अलोना (विशेषत सिमइ-युक्त) भोजन किया जाता ह।

अन तदव के सम्ब ध म एक कथा लोक म प्रचलित ह कि जिस समय युधिष्ठिर अपना सब राज पाट हारकर वनवास कर रहे थे तब भगवान कृष्ण उनस मिलने आये। उनकी कष्ट कथा सुनकर श्रीकृष्ण ने उ ह अन त व्रत करने की राय दी, जिसे करके वे अ त मे कष्ट मुक्त हो गए।

३६. जीवत्पुत्रिका-व्रत

आश्विन कृष्ण अष्टमी को यह व्रत होता ह। यह व्रत वही स्त्रिया करती ह जो पुत्रवती ह। इस व्रत को करने से पुत्रवती स्त्रियो को पुत्र शोक नहीं होता। स्त्रिया म इस व्रत का अच्छा प्रचार और आदर ह। वे इस व्रत को नि जला रहकर करती ह। दिन रात के उपवास के बाद दूसरे दिन पारण किया जाता ह। इस व्रत के सम्ब ध मे जो किम्वद ती प्रचलित ह वह इस प्रकार ह—

कथा—प्राचीनकाल मे जीमूतवाहन नाम के एक बडे धर्मात्मा और दयालु राजा हो गए ह। एक बार वह पवत विहार के लिए गये हुए थे। सयोगवश उसी पहाड पर मलयवती नाम की एक राज क या देव पूजा के लिए गइ हुइ थी। दोनो ने एक दूसरे को देखा। राज क या के पिता और भाइ इस क या का विवाह उसी राजा से करना चाहते थे। राज क या का भाइ भी उस समय पवत पर आया हुआ था। उसने दोनो का परस्पर दशन देख लिया। फिर राजकुमारी वहा से चली गइ।

जीमूतवाहन ने पवत पर भ्रमण करते करते किसी के रोने का शब्द सुना। पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि शखचूण सप की माता इसलिए रो रही ह कि उसका इकलौता पुत्र आज गरुड के आहार के लिए जा रहा ह।

गरुड के आहार के लिए जो स्थान नियत था, उस दिन राजा वहा जाकर स्वय साप की भाति लेट गया। गरुड ने आकर जीमूतवाहन पर चोच मारी। राजा चुपचाप पडे रहे। गरुड को आश्चय हुआ। सोचने लगा कि आखिर यह है कौन ? राजा ने कहा—'आपने भोजन क्यो बन्द कर दिया ?"

गरुड ने पहचान कर पश्चात्ताप किया। मन मे सोचा कि एक यह है जो दूसरे का प्राण बचाने के लिए अपनी जान दे रहा ह और एक म हू जो अपनी भूख बुझाने के लिए दूसरे का प्राण ले रहा हू। इस अनुताप के बाद गरुड ने राजा से वर मागने को कहा। राजा ने कहा कि आजतक आपने जितने साप मारे ह सब को फिर से जिला दीजिए और अब से सप न मारने की प्रतिज्ञा कीजिए। गरुड 'एवमस्तु' कहकर चले गए।

इसी बीच राजकुमारी के पिता जीमूतवाहन को ढूढते हुए वहा पहुँचे। उस दिन आश्विन शुक्ल अष्टमी थी। राजा ने उन्हे ले जाकर उनके साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। इसी घटना के उपलक्ष मे स्त्रिया यह व्रत रखती ओर ब्राह्मण को दक्षिणा देती ह।

४०. महालक्ष्मी-पूजन

महालक्ष्मी के पूजन का अनुष्ठान भादो सुदी अष्टमी से आरम्भ होकर आश्विन कृष्णा अष्टमी को पूण होता ह। कोइ कोइ स्त्री पण्डित को कच्चा सूत देती ह। पडित गण्डा बनाता ह। कोइ अपना गण्डा आप बना लेती है। गण्डा के सूत के सोलह तागे होते ह और उसमे सोलह गाठे लगाइ जाती है। भादो की अष्टमी को जिस दिन लक्ष्मी पूजन का अनुष्ठान आरभ होता है, स्त्रिया नदी या तालाब मे स्नान करने जाती ह। वहा सधवा स्त्रिया चालीस लोटे जल अपने सिर पर डालती ह और उतनी ही

अजुलि जल सूय को अघ देती ह। परन्तु विधवा स्त्रिया केवल सोलह लोटे जल सिर पर डालती ह और दूब सहित अजुलि से सोलह अजुलि जल सय को अघ देती ह। इस प्रकार स्नान के बाद घर आकर शुद्ध जगह मे पटा रख उस पर गण्डा रखकर लक्ष्मीजी का आह्वान करती ह, गण्डे का पूजन करती ह, होम करती ह और सोलह दिन तक नित्य सोलह बोल की कहानी कहा करती ह। कहानी इस प्रकार ह —

अमोती दमोती रानी, पोला परपाटन गाव मगरसेन गजा बभन बरुआ, कहे कहानी, सुनो हो महा[illegible] रानी हमसे कहते तुमसे सुनते सोलह बोल की कहानी।

इस कहानी को सोलह बार कहकर अक्षत छोडे जाते ह।

कुवार बदी अष्टमी को जब महालक्ष्मी का पूजन होता ह तब सोलह प्रकार का पकवान बनाया जाता ह। मिट्टी का हाथी पूजा जाता ह और उसी के पास वह गण्डा भी रख दिया जाता ह। अधिकाश पण्डित इस पूजन को विधिवत करवाते ह और लक्ष्मीजी की पौराणिक कथा कहते ह। जहा पडित नही पहुँच सकते वहा स्त्रिया नीचे लिखी कथा पूजन के अत मे कहती ह —

हाथी की [illegible] [illegible] के दो रानिया थी। एक के सिफ एक ही लडका था और दूसरी के बहुत से लडके थे। महालक्ष्मी-पूजन की तिथि आइ। छोटी रानी के बहुत-से लडको ने एक एक लोदा मिट्टी का हाथी बनाया तो बडा भारी हाथी बन गया। रानी ने उस हाथी की विधिवत पूजा की। परन्तु दूसरी रानी जिसका एक ही लडका था, चुपचाप सिर नीचा किये बठी थी। लडके के पूछने पर उसकी मा ने कहा कि तुम थोडी-सी मिट्टी लाओ, तो म एक हाथी बनाकर पूजा कर लू। देखो, तुम्हारे भाइयो ने कितना बडा हाथी बनाया है। यह सुनकर लडके ने कहा कि तुम पूजन की सामग्री इकट्ठी करो, म तुम्हारी पूजा के लिए सजीव हाथी ले आता हू।

निदान वह राजा इन्द्र के यहा गया और वहा से वह अपनी माता के पूजन के लिए इन्द्र का ऐरावत हाथी ले आया। माता ने बडे प्रेम से पूजन किया और कहा—

क्या करे किसी के सौ साठ।
मेरा एक पुत्र पुजावे आस॥

४१. महालया

आश्विन मास मे कृष्ण-पक्ष की अमावस्या को महालया कहते है। यह हमारा परम पुनीत दिन है। यह हमे पितरो को तिलाजलि के साथ ही श्रद्धाजलि अपण करने का अवसर प्रदान करता ह। इस दिन तिलाजलि तथा पिण्ड दान देने से पितरो को शाति मिलती है। आश्विन मास मे पितरो को यह आशा लगी रहती है कि उन्हे पिण्डदान मिलेगा तथा पीने के लिए जल की प्राप्ति होगी। ऐसी दशा मे उन्हे पिण्डदान न मिलने पर बडी निराशा होती ह और वे शाप देते ह। ब्रह्म पुराण मे लिखा ह कि आश्विन मास के कृष्ण पक्ष मे यमराज यमालय से पितरो को स्वतत्र कर देते ह और वे अपनी सतानो से पिण्ड दान लेने के लिए भू लोक मे आ जाते ह। जब सूय कन्या राशि मे आते ह तब वे यहा आते ह और अमावस्या के दिन तक घर के द्वार पर ठहर कर श्राद्ध न करनेवाली सतान को शाप देकर चले जाते ह। कन्या राशि मे सूय के जाने के कारण ही आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को कनागत अर्थात कन्या + गत कहते ह। देहातो मे यह पक्ष पितर पख' कहा जाता है। शिक्षित लोग पितपक्ष' कहते ह। इस पक्ष मे माता पिता हीन सतान को प्रात काल उठकर किसी नदी मे स्नान करना चाहिए और फिर तिल, अक्षत तथा कुश को हाथ मे लेकर वैदिक मत्रो द्वारा पितरो को सूय के सामने खडे होकर जलाजलि देनी चाहिए। तिलाजलि देने का काय

कृष्ण पक्ष मे प्रति दिन होना चाहिए। पितरो की मत्यु तिथि के दिन श्राद्ध करना चाहिए और ब्राह्मणो को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए। इस पक्ष मे गयाजी श्राद्ध करने का विशेष महत्त्व ह।

४२ नवरात्रि

दुर्गा सप्तशती द्वारा जो भगवती का माहात्म्य प्रकट किया गया ह उसका सक्षिप्त साराश यह ह कि शुम्भ निशुम्भ तथा महिष सुरादि तामसिक वति वाले असरो की वद्धि होने से जब देवता अत्यन्त दुखी हुए, तब सबने मिलकर चिन शक्ति महा-माया की स्तुति और उपासना की, जिससे प्रसन्न होकर देवी ने देवताओ को वरदान दिया और आश्विन शक्ल प्रतिपदा से दशमी तक नौ दिन देवी पूजा और व्रत करने का आदेश दिया। उस दिन से ही देवी नवरात्रि महोत्मव का प्रचार ससार मे हुआ ह।

प्रतिपदा को जो घट स्थापित किया जाता ह, उसकी विधि के सबध मे लिखा ह कि प्रात काल तलाभ्यग स्नान और नवरात्रि व्रत का सकल्प करे तथा गणपति पूजन पुण्याहवाचन नान्दी श्राद्ध, मातका पूजन और ऋत्विक वरण करने की प्रतिज्ञा करे। तत्पश्चात् पथ्वी स्पर्शापूवक पूजन करके घट मे हरे पत्ते डालकर जल भरे और चन्दन लगाकर सव औषधि सस्कार करे तथा दूर्वा, पचरत्न, पचपल्लव घट मे डाल कर उस पर सूत या वस्त्र लपेटे। तदनन्तर गेहू या जौ से भरा हुआ पूण पात्र घट के मुख पर रखकर वरुण का पूजन करे और तब भगवती का आवाहन करे। भगवती का आवाहन करके आसन, पाद्य, अघ, आचमन, पचामत, स्नान, वस्त्र अलकार, गन्ध अक्षत, पुष्प और परिमल आदि

द्रव्यो से पूजन करके अग-पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् धूप, दीप, नवेद्य आचमन, ताम्बूल फल, दक्षिणा, आरती और पुष्पाजलि कर के प्रदक्षिणा करें और ऋत्विक वरण करके कुमारी पूजन करना चाहिए। एक वर्ष की आयु से १० वष तक की कन्या का पूजन करना उचित है।

प्रतिपदा से लगाकर दशमी पयन्त कन्या का पूजन करना चाहिए। देवी नवरात्रि के पूजन का सब मनुष्यो को अधिकार है। विधिमात्र भिन्न ह। ब्राह्मणादि सात्विक लोगो की पूजा-मास रहित होती ह। शूद्रादि तामसी लोगो की पूजा मास-सहित होती है। प्रतिपदा को घट स्थापन करने के बाद दशमी पयन्त नित्य सप्तशती का पाठ देवी भागवत श्रवण अखण्ड दीप, पुष्पमाला समपण और उपोषण करना या एक भुक्त रहना चाहिए। घट के पास नौ धान्यो को बोना चाहिए और अन्त मे उनके पेडो की प्रसादी लेकर मस्तक पर चढाना चाहिए। पचमी के दिन उद्याङ्ग ललिता व्रत करना चाहिए। मूल नक्षत्र मे सरस्वती का आवाहन करके पर्वाषाढ मे पूजन करना चाहिए। उत्तराषाढ मे बलिदान और श्रवण मे विसजन करना चाहिए। अष्टमी और नवमी को महातिथि कहते ह।

कथा—प्राचीनकाल मे सुरथ नाम का एक राजा था। राज काज का भार मन्त्रिया को सौपकर वह सुख से रहता था। यह देखकर उसके शत्रुओ ने उस पर चढाइ कर दी। मत्री भी राजा को धोका देकर शत्रुओ से मिल गये। परिणाम यह हुआ कि राज्यपर शत्रुओ का अधिकार हो गया और राजा तपस्वी के वेश मे वनवास करने लगा।

एक दिन राजा को एक मोह ग्रस्त वैश्य मिला। उसकी मोह कथा सुनकर राजा उसके साथ मेघ ऋषि के पास गये। ऋषि ने दोनो के आने का कारण पूछा।

कि म राजा हू, और मेरा साथी वश्य ह।

हम दोनो को गोत्र भाइयो ने घर से निकाल दिया ह। फिर भी हम उनके मोह को नही त्याग सकते। हमारी समझ मे नही आता कि मोह क्या वस्तु ह और मन के भीतर कौन बठा हुआ ह ?

ऋषि ने उपदेश देते हुए कहा कि मन शक्ति के अधीन होता ह। उस आदि शक्ति भगवती के दो स्वरूप ह—एक विद्या और दूसरा अविद्या। विद्या ज्ञान स्वरूप ह और अविद्या अज्ञान स्वरूप। इसी अविद्या के कारण मोह का आविर्भाव होता ह। इसलिए जो पुरुष भगवती को ससार का आदि कारण जानकर उनकी भक्ति करते ह उन्हे वह विद्या स्वरूप से प्राप्त होकर उनको जीव मुक्त कर देती ह। इसके पश्चात उन्होने यह कथा सुनाइ—

कथा—महाप्रलय के समय जब श्रीलक्ष्मीनारायण शेष की शय्या पर क्षीर समुद्र मे शयन कर रहे थे और उनका प्रताप उनके शरीर मे व्याप्त हो रहा था तब उसी दशा मे उनकी नाभि से ब्रह्मा और दोनो कानो से मधु और कटभ नाम के दो दत्य उत्पन्न हुए। उन दोनो का भयानक वेश देखकर ब्रह्मा ने विचार किया कि इस समय श्रीहरि के सिवा और कोइ मेरा सहायक नही ह। परतु वह सुषुप्त अवस्था मे ह। उनको किसी तरह जगाना चाहिए। यह विचार कर ब्रह्मा ने समस्त जग की प्रेरक आदि-शक्ति का ध्यान करते हुए उसकी स्तुति की। तब सर्वेश्वरी शक्ति ने अपनी वह मोहक शक्ति खीच ली, जिसके कारण विष्णु भगवान सो रहे थे। विष्णु ने जागकर उक्त ।।। ।।।। से युद्ध करना आरम्भ किया। पाच हजार वष तक घोर युद्ध होता रहा, परन्तु उन खलो का बल कुछ भी कम नही हुआ। देवताओ ने घबरा कर शक्ति की आराधना की। शक्ति प्रकट हुइ। उसने असुरो को प्रेरित किया। असुरो ने स्वय अपने विनाश के लिए विष्णु भगवान से प्राथना की। विष्णु-

भगवान् ने वैसा ही किया। उन्होंने उनको पछाड़ कर उनका सिर चक्र से काट डाला।

यह एक प्रसंग हुआ। अब जिस तरह इन्द्रादि देवताओं के लिए शक्ति प्रकट हुई, उसका हाल सुनो—

एक समय महिषासुर नाम का एक असुर ऐसा प्रबल हुआ कि उसने स्वर्ग के सब देव-दल को परास्त कर इन्द्र के निवास-स्थान को जा घेरा। इन्द्र उसके डर से भागकर त्रिदेवों के पास गये। इन्द्र-समेत त्रिदेवों ने आदि-शक्ति भगवती का ध्यान किया। उसी क्षण सब देवताओं के अंगों में से एक तेज-पुंज ज्वाला-सी निकल कर अग्नि-ज्वाला की तरह पृथ्वी पर आच्छादित हो गई। उस तेज से संतप्त होकर देवताओं ने शक्ति की स्तुति करते हुए प्रार्थना की कि हम लोग आपका तेज सहन नहीं कर सकते। इस कारण कृपा करके आप मूर्तिमान् स्वरूप धारण कर लीजिए।

यह सुनते ही एक सुन्दर किशोर-वय मूर्ति प्रगट हो गई। उस मूर्ति के तीन नेत्र तथा आठ भुजाएँ थीं। तब सब देवताओं ने उस मूर्ति की पूजा की। विष्णु भगवान ने अपना चक्र, ब्रह्मा ने अपना पवित्र कमण्डल, शिवजी ने त्रिशूल, इन्द्र ने अपना वज्र, वरुण ने शक्ति-आयुध, यमराज ने अपना खड्ग और यम-फांस, अग्निदेव ने अपना अपना धनुष-बाण, लक्ष्मी ने अपना सब श्रृङ्गार उसको दिया और हिमालय ने उसकी सवारी के लिए सिंह भेंट किया। इस प्रकार सुसज्जित होकर इधर से शक्ति चली और उधर से महिषासुर दैत्य अग्रसर हुआ। शक्ति के साथ में जो देवताओं का दल था, उसको पीछे छोड़कर भवानी आगे बढ़ गईं और उन्होंने महिषासुर के दैत्य-दल पर भीषण रूप से आक्रमण कर उसका नाश कर डाला। महिषासुर अकेला रह गया। वह अनेक आसुरी माया करते हुए युद्ध में प्रवृत्त हुआ। परन्तु शक्ति ने संपूर्ण माया-जाल को छिन्न-भिन्न कर महिषासुर को काल-पाश में लपेट कर पृथ्वी

पर पटक दिया और उसकी गदन पर पर रखकर खडग से उसका सिर काट डाला। इस प्रकार भगवती ने महिषासुर का सहार किया। अब आगे जिस तरह उन्होने शुम्भ निशुम्भादि दत्यो को मारा, उसकी कथा इस प्रकार ह —

श्री सूय्य भगवान की अदिति नामकी रानी के गभ से शुम्भ और निशुम्भ नाम के दो दत्य उत्पन्न हुए। ज्येष्ठ भाइ शुम्भ राज छत्र धारण कर दैत्य समाज का शासन करता था और उसका छोटा भाइ निशुम्भ भी समान रूप से बलवान और सामथ्यवान था। जीवधारी की कौन कहे पचतत्त्व भी उनके भय से सशक रहते थे। उनका प्रधान कमचारी रक्तबिदु और सेनापति धूम्रलोचन दोनो बडे न्याय कु[illegible]ल और [illegible] के थे। सेनापति के सहकारी चड और मुड नाम के दत्य बडे विकट-स्वरूप और अजेय योद्धा थे। इन लोगो के आतक से समस्त देवदल छिन्न भिन्न हो गया था। इस आपत्ति से अकुला कर त्रिदेवो समेत सम्पूण देवता हिमालय पवत पर पावतीजी की स्तुति और वदना करने लगे। इसी बीच पावतीजी स्नान करने क लिए निकली। देवताओ को इकटठा देखकर उनके मुख से एक अनुपम शक्ति निकली। उसके निकलते ही गौराङ्गी पावती का स्वरूप श्याम वण हो गया। उस शक्ति ने पावतीजी के सम्मुख स्थित होकर कहा कि देवता असुरो के भय से नि[illegible] होकर [illegible] स्तुति कर रहे ह। इसी कारण म स्वय सिद्ध प्रकट हुइ हू।

देवता उस स्वय सिद्ध शक्ति का अनुपमस्वरूप देखकर चकित हो गए और वे किक्तव्य विमूढ होकर उसके चरणो पर गिर पडे। भगवती ने उनको पवत की गुफाओ मे छिप जाने का आदेश दिया। देवताओ के छिप रहने पर वह आदि कुमारी अदभुत स्वरूप धारण कर सुमेरु शिखर के राज सिहासन पर आसीन हुइ और असुर दल के अनुचरो को मार मारकर बाहर

निकालने लगी। यह समाचार पाकर असुरराज शुम्भ निशुम्भ आश्चय मे पड गये। उन्होंने वास्तविक स्थिति जानने के लिये जो गुप्तचर भेजे, वे भी आदि शक्ति का दिव्य स्वरूप देखकर मोहित हो गए। लौटकर उन्होंने अपने राजा से तपस्विनी के रूप-गुण का खूब बखान किया। इस पर दत्यराज ने भगवती के पास एक राजदूत द्वारा विवाह का प्रस्ताव भेजा। कहा दवी भगवती और कहा वह राक्षस! देवी ने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया और युद्ध स्वयवर का प्रस्ताव किया। दूत ने जगज्जननी के आदेशानुसार सब बाते शुभ से कह सुनाइ जिन्हे सुनते ही शुभ ने धूम्रलोचन को दल बल सहित कैलाश पर जाकर भगवती को पकड लाने की आज्ञा दी। शुभ की आज्ञा पाकर धूम्रलोचन सुमेरु शिखर पर चढकर भगवती के सम्मुख जा पहुँचा। भगवती उसके आने का आशय समझ गयी। अत उन्होंने आप ही आप एक हुकार शब्द किया। उसकी दाह शक्ति से धूम्रलोचन उसी जगह जल कर भस्म हो गया। धूम्रलोचन का भस्मीभूत होना सुनकर उसके साथ वाले दानव शिखर पर चढ दौडे। यह देखकर शक्ति ने उनके ऊपर सिह को ललकार दिया और सिह ने उन सब का सवनाश कर दिया।

सिह का ग्रास होने से जो बचे वे शुभ के दरबार मे गये। उनसे आदि शक्ति के प्रभुत्व एव वभव का समाचार सुनकर शुभ ने सहायक सेना नायक चड मुड को शक्ति को पकड लाने की आज्ञा दी। चड-मुड एक बडी भारी दत्य-सेना लेकर हिमाचल की ओर चले। उनके दल के आतक से सारे देश मे हाहाकार मच गया। भगवती ने भी एक ओर भयकर दत्य दल और एक ओर अकेले सिह को देखकर क्रोधपूवक जो भौहे चढाइ तो क्रोध स्वरूप, कराल कृत्यशक्ति काली अपने आप उत्पन्न हो गइ। काली ने आदिशक्ति को प्रणाम कर अपनी प्रेत, पिशाच और योगिनी सेना समेत दानव दल पर आक्रमण कर दिया।

भगवती काली की भयानक मूर्ति देखकर दत्य दल तो सशक होकर किकतव्य विमूढ हो गया, परतु चड मुड ने साहस कर कालिका का सामना किया। उसने काली पर जो जो अस्त्र शस्त्र चलाये सब व्यथ हुए। अत मे काली ने अपने विकराल खडग से चड मुड के शरीर के खड खड कर दिये और वह उनका रुधिर पान करने लगी।

भूत प्रेत वेतालादि से बचे हुए दत्य काली के हाथो चड मुड का परिणाम देखकर राजा के समीप दौडे गये। चड मुड का मरना सुनकर शुभ अपने अमात्य रक्तबिदु को सपूण दत्य दल समेत शक्ति का सहार करने के लिए सुमेरु शिखर पर भेजा। आज्ञा शिरोधाय कर रक्तबिदु असरय सेना समेत सुमेरु शिखर के उपकठ मे जा पहुँचा। दत्य दल को देखकर शक्ति भगवती ने विचार किया कि अकेली काली सब का सामना नही कर सकती। चित्त मे ऐसा विचार आते ही भगवती के मुख से जाज्वल्यमान ज्वाला स्वरूप शक्ति की उत्पत्ति हुइ। उस आदि शक्ति की प्रबल शक्ति से हसवाहिनी ब्रह्मशक्ति, गरुडारूढ विष्णशक्ति नदीवाहिनी शिवशक्ति और गजारूढ इद्र शक्ति आदि सपण देवताओ की भिन्न भिन्न शक्तिया आप से आप प्रकट हो गइ। उन्होने आदि शक्ति को सिर नवाकर आज्ञा मागी। शक्ति ने शत्रु-सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी।

जगज्जननी की आज्ञा पाकर सपूण देवो की दिव्य शक्तियो न दत्य दल का सहार करना आरभ किया। विभिन्न देव शक्तियो की सयक्त मार से घबरा कर जब दानव दल भाग खडा हुआ, तब रक्तबिदु ने क्रुद्ध हो अति उद्धत योद्धाओ समेत ताजी फौज को रणक्षेत्र मे भेजा। खास तौर से हाथियो की फौज आगे करके उसने विकट व्यूह बद्ध हो आक्रमण किया। उस समय भगवती ने अपने वज्रायुध से समस्त दानव सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। कवल इने गिने सरदार खेत मे खडे रह गए। ऐसी दशा मे रक्त-

बिन्दु स्वय अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्रो से सजकर युद्ध क्षेत्र मे पहुँचा। उसमे खास गुण यह था कि जहा कही उसके रुधिर का एक बूद गिर पडता था, वहा एक नवीन रक्तबिन्दु (दानव) उत्पन्न हो जाता था। उसकी इस अलौकिक करामात के सामने समस्त देवशक्तिया स्वय परास्त हो गइ। तब सब देवताओ ने व्याकुल होकर अन्य शक्ति की आराधना की। उसी समय उनकी इच्छा से कालिका शक्ति अपनी योगिनी सेना समेत अग्रसर हुइ। उसने अपने खडग से उस दानव का सिर काट डाला और योगिनियो ने उसका रुधिर पीना आरम्भ किया। इससे रक्तबिन्द के किसी अश का एक भी बिन्दु धरती मे गिरने ही न पाया। अत मे भगवती की काली शक्ति ने असली रक्तबिन्दु को भी मार डाला।

रक्तबिन्दु का मरना सुनकर शुभ को अति क्षोभ हुआ। अपने बडे भाइ को मन मलीन देखकर निशुभ ने महाशक्ति का सामना करने का बीडा उठाया और वह सपूण चतुरङ्गिनी सेना सहित सुमेरु शिखर की ओर चढ दौडा। उसके मुकाबले मे सम्पूण देव शक्तियो ने अतुल पराक्रम दिखाया भगवती ने उस प्रबल दत्य को भी मौत के घाट उतार दिया। भाइ का रण मे मरण सुनकर शुम्भ स्वय आदि शक्ति से युद्ध करने के लिए रण क्षेत्र मे आया। उसने **भी** अपने प्रबल पराक्रम से देव-सेना को व्याकुल कर दिया परतु अत मे उसकी भी वही गति हुइ, जो सब दानवो की हो चकी थी।

यह कथा कहकर ऋषि ने राजा और उसके साथी वश्य को भगवती की आराधना करने की विधि बताइ जिसे सुनकर दोनो एक नदी के तट पर बठकर तप मे लीन हो गये। तीन वष के पश्चात भगवती ने उन्हे दशन देकर वरदान दिया।

वश्य को तो उसी समय ज्ञान प्राप्त हो गया और वह ससारी मोह से निवत्त होकर आत्म चिन्तन मे प्रवत्त हो गया। राजा ने

राज सिहासन पर बैठकर अपने राज मे यह ढिढोरा पिटवाया कि आश्विन मास तथा चैत्र मास के शुक्ल पक्ष मे प्रत्येक मनुष्य घट स्थापनपूवक आदि शक्ति की उपासना तथा आराधना किया करे। उसी समय से ससार मे नवरात्रि की पूजा की प्रथा चली ह।

४३ विजया दशमी

ि ाा ा ी को 'दशहरा' भी कहते ह । यह आश्विन शुक्ल दशमी को मनाया जाता ह। भगवान राम ने इसी दिन लका पर चढाइ की थी और उस पर विजय प्राप्त की थी। इसी लिये यह तिथि 'विजया दशमी कहलाती ह। यह तिथि शत्रु को परास्त करने के लिए पुण्य तिथि मानी जाती ह। 'ज्योतिर्निबन्ध मे लिखा ह कि आश्विन की शुक्ल पक्ष की दशमी को तारा उदय होने के समय 'विजय नामक काल होता ह। वह सब काय की सिद्धि को देने वाला होता ह। आश्विन शुक्ल दशमी पूर्व विद्धा निषिद्ध मानी गयी ह। पर विद्धा शुद्ध ह। श्रवण युक्त सूर्योदय व्यापिनी तिथि सवश्रेष्ठ ह।

विजयादशमी हमारा राष्टीय पव ह । यह प्रधानतया क्षत्रियो का त्योहार ह। साधारण जनता इस पव को रामलीला के रूप मे मनाती ह। शुक्ल पक्ष की नवमी तक रामलीला होती ह और दशमी को राम की सवारी बडे सजधज के साथ निकलती ह। इस दिन नीलकठ पक्षी का दशन करना शुभ माना जाता ह।

कथा—एक समय पावती ने महादेवजी से पूछा कि लोगो मे जो दशहरे (विजया दशमी) का त्योहार प्रचलित ह, इसका क्या फल ह? शिवजी ने कहा कि आश्विन शुक्ल दशमी को नक्षत्रो के उदय होने पर विजय नामक काल होता ह, जो सब कामनाओ को देनेवाला होता है। शत्रु को विजय करनेवाले राजा को इसी समय प्रस्थान करना चाहिए। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का

योग हो तो और भी अच्छा है, क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रजी ने इसी विजय-काल मे लका पर चढाइ की थी। इसीलिए यह दिन पवित्र माना गया ह और क्षत्रिय लोग इसको अपना मुख्य त्योहार मानते हं। यदि शत्रु से युद्ध करने का प्रसग न भी हो तो भी इस काल मे राजाओ को अपनी सीमा का उल्ल घन अवश्य करना चाहिए। सम्पूण दल बल सजाकर पूव दिशा मे जाकर शमी वक्ष का पूजन करना चाहिए। पूजन करने वाला शमी के सम्मुख खडा होकर इस प्रकार ध्यान करे—हे शमी! तू पापो का नाश करनेवाला ह और शत्रुओ को भी नष्ट करने वाला ह। तूने अजुन के धनुष को धारण किया और रामचन्द्रजी से कसी प्रिय वाणी कही।

यह सुनकर पावती बोली—"शमी ने अजुन का धनुष वाण कब और किस कारण धारण किया तथा उसने रामचन्द्रजी से कैसी प्रिय वाणी कही सो कृपाकर समझाइए।"

तब शिवजी बोले—'दुर्योधन ने पाडवो को इस शत पर वनवास दिया था कि वे बारह वष प्रकट रूप मे वन मे फिरे परन्तु एक वष सवथा अज्ञात अवस्था मे रहे। यदि इस वष मे उनको कोइ जान लेगा तो उनको बारह वष और भी वनवास भोगना पडेगा। उस अज्ञात वास के समय अजुन अपना धनुष-वाण एक शमी वक्ष पर रखकर राजा विराट् के यहा विहडल वेश मे रहे थे। विराट् के पुत्र उत्तरकुमार ने गौवो की रक्षा के लिए अजुन को अपने साथ लिया और अजुन ने शमी के वक्ष पर से अपने हथियार उठाकर शत्रुओ पर विजय प्राप्त की थी। शमी ने एक वष पयन्त देवता की तरह अर्जुन के हथियारो की रक्षा की थी और जब विजयादशमी के दिन श्रीरामचन्द्रजी ने लका पर चढाइ करने के लिए प्रस्थान किया तब भी शमी ने कहा था कि आपकी विजय होगी, इसी कारण विजय काल मे शमी का पूजन होता ह।"

राजा युधिष्ठिर के पूछने पर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र ने उनको समझाया था कि हे राजन् ! विजयादशमी के दिन राजा स्वयं अलंकृत होकर अपने दास लोगों का श्रृङ्गार करे और हाथी घोड़ों का श्रृङ्गार करे तथा गान-वाद्य-द्वारा मङ्गलाचार करे। अपने पुरोहित को साथ लेकर पूर्व दिशा में प्रस्थान करके अपनी सीमा के बाहर जाय और वहां वास्तु-पूजा करके अष्ट दिग्पालों एवं पार्थ देवता की वैदिक मन्त्रों से पूजा करे। तदनन्तर प्रधानतया शमी की पूजा करनी चाहिए। शत्रु की प्रतिकृति अर्थात् पुतला बनाकर उसके हृदय में बाण लगाये और पुरोहित लोग वेद-मन्त्रों का उच्चारण करें। पूज्य ब्राह्मणों का पूजन करे तथा हाथी, घोड़ा, अस्त्र-शस्त्रादि सबका निरीक्षण भी करे। यह सब क्रिया सीमान्त में करके बाजे-गाजे के साथ अपने महल को लौट आना चाहिए। जो राजा प्रति वर्ष इस विधि से विजया-पूजन करता है, वह सदैव अपने शत्रु पर विजय प्राप्त करता है।

४४. करवा-चतुर्थी व्रत

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को करवा-चौथ कहते हैं। इस व्रत के करने का अधिकार केवल स्त्रियों को ही है। व्रत रखने वाली स्त्री को चाहिए कि प्रातःकाल शौचादि नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर आचमन करके व्रत का संकल्प करे। व्रत का संकल्प करके चन्द्रमा की मूर्ति लिखे और उसके नीचे शिव, षण्मुख और गौरी की प्रतिमा लिखकर षोड़शोपचार से उनका पूजन करे।

पूजन के पश्चात् पुओं से भरे हुए तांबे या मिट्टी के कुल्हड़ ब्राह्मणों को दान करे। चन्द्रमा का उदय हो जाने पर अर्घ देकर नीचे लिखी कथा सुने :—

कथा—एक समय अर्जुन कील गिरि पर चले गये थे। उस समय द्रौपदी ने मन में विचार किया कि यहां अनेक प्रकार के

विघ्न उपस्थित होते ह और अर्जुन ह नही, अब म क्या करूँ। यह विचारकर द्रौपदी ने भगवान् कृष्णचद्र का ध्यान किया। भगवान के पधारने पर उसने हाथ जोडकर प्राथना की कि हे भगवन ! इस प्रकार के विघ्नो की शाति का यदि कोइ सुलभ उपाय हो तो बताइए।

यह सुनकर श्रीकृष्ण बोले कि एक समय पावती ने शिवजी से ऐसा प्रश्न किया था जिसके उत्तर मे शिवजी ने उनको मत्र जिन निनान कना चतुर्थी का व्रत बतलाया था। इस कारण हे द्रौपदी ! यदि तुम भी करवा चतुर्थी के व्रत को विधि-पूवक करोगी तो सव विघ्नो का नाश होगा।

सूतजी ने कहा कि जब द्रौपदी ने व्रत का आचरण किया तब कौरवो की पराजय होकर पाण्डवो की विजय हुइ। इस कारण पुत्र, सौभाग्य और धन धाय की वद्धि चाहनेवाली स्त्रियो को इस व्रत को अवश्य ही करना चाहिए।

४५. अहोई-आठें

कार्तिक कृष्ण-अष्टमी को लडके की मा व्रत रहती ह। सारे दिन का व्रत रखकर सब प्रकार की कच्ची रसोइ विधि पूवक बनाइ जाती ह। सध्या को दीवार मे आठ कोष्टक की एक पुतली लिखी जाती ह। उसी के समीप सेइ (साही) के बच्चो की और सेइ की आकृति बनाइ जाती है। जमीन मे चौक पूरकर कलश की स्थापना की जाती है। रसोई का थाल लगाकर भोग के लिए तयार रक्खा जाता ह। विधिवत कलश पूजन के बाद अष्टमी (दीवार मे लिखी हुइ चित्रकारी) का पूजन होता है। तब दूध भात का भोग लगाया जाता है और नीचे लिखी कथा कही जाती ह —

कथा—किसी स्त्री के सात लडके थे। कार्तिक के दिनो मे

दीवाली के पूव अपने मकान की लिपाइ पुताइ करने के लिए मिट्टी लाने वह बाहर गइ थी। वह जहा मिट्टी खोद रही थी, उसी के नीचे सेइ की माद थी। दवयोग से उस स्त्री की कुदाली सेइ के बच्चे को लग गइ, जिससे वह तुर त ही मर गया। यह देखकर स्त्री को बडी दया आइ। पर वह तो मर ही चुका था, अब क्या हो सकता था। इस कारण वह मिट्टी लेकर घर चली आइ।

कुछ दिनो के बाद उसका बडा लडका मर गया। इसके बाद दूसरा लडका भी मरा। यो ही साल भर के भीतर उसके सातो लडके मर गये। इस दु ख से वह अत्य त दु खी रहने लगी। एक दिन उसने वयोवद्ध स्त्रियो मे विलाप करते हुए कहा कि मने जानकर तो कोइ पाप कभी नही किया। एक बार मिट्टी खोदने मे धोखे से एक सेइ के बच्चे को कुदाली लग गइ थी। उसी दिन से अभी साल भर भी पूरा नही हुआ मेरे सातो लडके मर गये।

तब वे स्त्रिया बोली कि आधा पाप तो तुम्हारा अभी कम हो गया जो तुमने चार के कान मे बात डालकर पश्चात्ताप किया। अब जो रहा, उसका प्रायश्चित यही ह कि तुम उसी अष्टमी के दिन अष्टमी भगवती के समीप सेइ और सेइ के बच्चो के चित्र लिखकर उनकी पूजा किया करो। इश्वर चाहेगा तो तुम्हारा [illegible] होकर तुम्हे पुन पूववत् स तान की प्राप्ति होगी। यह सुनकर उस स्त्री ने आगामी कातिक कृष्ण अष्टमी को व्रत किया। फिर वह बराबर उसी तरह व्रत और पूजन करती रही। इश्वर की कृपा से पुन उसको सात लडके हुए। तभी से इस व्रत और पूजन की परिपाटी चली ह।

४६. बछवाछ-व्रत

कार्तिक कृष्ण द्वादशी को गोधूलि बेला मे जब गाय चर कर जङ्गल से वापस आती ह तब उन (गायो) की पूजा की जाती है। विशेषत लडके की माता सारे दिन निराहार रहती है। सध्या को घर के आगन मे लीपकर चौक पूरा जाता ह। उसी चौक मे गाय खडी करके च दन अक्षत धूप दीप नवेद्य आदि से उसकी विधिवत पूजा की जाती है। अधिकाश कुल का आचाय या कोइ पडित पूजा कराता ह। इस व्रत के पूजन मे धान का चावल वजनीय ह। काकुन के चावल से पूजा होती है। उसी से मत्राक्षत दिया जाता ह। कोदो का चावल और चने की दाल तथा काकुन के चावलो के भोजन का महत्त्व है। पूजा की अठवाइ बेसन की बनती ह। गेहू और धान के अतिरिक्त कोइ अन्न खाना व्रत वालो के लिए वजनीय नही है परन्तु पथ्वी का गडा हुआ कोइ भी अन्न वजनीय ह। गाय का दूध मट्ठा भी व्रतवालो को न खाना चाहिए।

यह व्रत सभी के यहा नही होता। किसी के यहा प्रति तीसरे महीने अर्थात कार्तिक माघ वशाख और श्रावण चारो महीनो की कृष्ण द्वादशी को होता ह परन्तु किसी किसी के यहा श्रावण मास मे चार बार पूजन होता ह।

बछवाछ या बछवास दोनो शब्द 'वत्सवश' के अपभ्रश मालूम होते ह। कार्तिक मे वत्सवश की पूजा का रिवाज सारे भारतवष मे ह। मालूम होता ह जिस किसी के यहा दीवाली के त्योहार मे कोइ खोट होने से पूजन नही हो सकता, उसके यहा धन-तेरस के पूव द्वादशी को पूजन हो जाता है——कथा की कल्पना भी इसी से मिलता जुलता आशय सूचित करती ह।

४७ धनतेरस

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को धनतेरस कहते ह। इसकी प्राचीनता का प्रमाण वदिक साहित्य मे भी पाया जाता ह। यमराज वदिक देवता ह। धन त्रयोदशी को यमराज का पूजन होता ह, जिसकी विधि इस प्रकार ह—हल जुती हुइ मिट्टी को दूध मे भिगो सेमर वक्ष की डाली मे लगाये और उसको तीन बार अपने शरीर पर फेरकर कुकुम का टीका लगाये। पुन र्गानित्र स्नान करे। प्रदोष के समय मठ मदिर, कुवा, बावली घाट कोट, बाग माग गोशाला, अश्वशाला और गजशाला आदि स्थानो मे तीन दिन पयन्त बराबर दीपक रखना चाहिए। यदि तुला राशि का सूय हो तो चतुदशी और अमावस्या की शाम को एक जली लकडी लेकर तथा उसको घुमाकर पितरो को भी माग दिखाने का विधान है। अमावस्या के दिन प्रात काल तलाभ्यग करना चाहिए। देव पूजा समाप्तकर पावण श्राद्ध करना और उत्का दशन तथा लक्ष्मी पूजन करने के उपरान्त भोजन करना चाहिए। धन-तेरस के सम्बध मे निम्नलिखित किम्वदती लोक मे प्रचलित ह —

कथा – एक दिन यमराज ने अपने दूतो से पूछा कि मेरी आज्ञानुसार जब तुम प्राणियो के प्राण हरण करते हो, तब तुमको किसी समय किसी के प्राण हरण करने मे दया भी आती है या नही ? यदि कभी तुमको दया आइ ह तो कब और कहा ? यमराज के ऐसे वचन सुनकर दूत बोले कि हस नाम का एक बडा भारी राजा था। वह किसी समय शिकार के लिए वन मे गया। दवात् राजा अपने साथियो से बिछुडकर और माग भूलकर हेम राजा के राज्य मे चला गया। हेम राजा ने महाराज हस का उचित स्वागत सत्कार किया। उसी समय हेम राजा के यहा पुत्र उत्पन्न हुआ। परन्तु छठी के पूजन मे देवी ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि

तुम्हारा यह लडका चार दिन बाद मर जायगा। जब राज हंस को यह ज्ञात हुआ तब उसने हेमराज के पुत्र को मृत्यु से बचाने के लिए उसे यमुनाजी के एक खोह मे छिपाकर रक्खा। परन्तु युवा होने पर जब उसका विवाह हुआ तब विवाह के ठीक चौथे दिन हम लोगो ने उसके प्राणो को हरण किया। हे नाथ! मांगलिक समारोह मे ऐसी शोक जनक घटना का होना वास्तव मे अत्यन्त घृणित कार्य था। परन्तु क्या हम लोग परतन्त्र थे। इसलिए आप कृपा करके ऐसी युक्ति बतलाए जिससे प्राणी इस प्रकार नायाम जाप्ति से उद्धार पा सके। यह वचन सुनकर यमराज ने विधिपूर्वक धन तेरस के पूजन और दीपदान का विधान बतलाकर कहा कि जो लोग धन तेरस के दिन मेरे लिए दीपदान और व्रत करेगे उनकी असामयिक मृत्यु कदापि न होगी।

४८ नरक चतुर्दशी

कार्तिक मास की कृष्णा चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी का व्रत होता है। इस तिथि पर प्रातःकाल दिन निकलने से प्रथम ही प्रत्यूष काल मे स्नान करना चाहिए। जो मनुष्य इस तिथि मे अरुणोदय के पश्चात स्नान करता है उसके वर्ष भर के शुभ कार्यो का नाश होता है। इस पर्व मे जो स्नान किया जाय वह तलाभ्यंग पूर्वक होना चाहिए और अपामार्ग का भी शरीर पर प्रोक्षण करना चाहिए।

अपामार्ग को शरीर पर स्पर्श कराकर सब बन्धुजनो के सहित स्नान करे। स्नान के पश्चात शुद्ध वस्त्र पहनकर तिलक लगा कार्तिक स्नानकर तथा यमराज को तर्पणकर तीन-तीन जलाजलि देनी चाहिए। जिसका पिता जीवित हो उसको भी यह तर्पण करना चाहिए। पुनः सायंकाल को दीपदान करना

भी उचित ह। दीपदान विधि को त्रयोदशी से अमावस्या-पयन्त तीन दिवस करना लिखा ह। इसका कारण यह ह कि वामन भगवान् ने क्रमश इन्ही तीन दिनो मे राजा बलि की पथ्वी को नापा था। पश्वी नापने के पश्चात वामन भगवान के ऐसे वचन सुनकर बलि ने प्राथना की कि मत् राज' मुझको तो किसी वर-दान की आकाक्षा नही परन्तु लोगो के कल्याण के निमित्त एक वरदान मागता ह---अर्थात कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी, चतुदशी और अमावस्या इन तीन दिना मे आपने मेरा राज्य नापा ह अत जो मनुष्य मेरे राज्य मे चतुदशी के दिन यमराज के हेतु दीपदान करे उसको यम यातना न होनी चाहिए और जो मनुष्य इन तीन दिनो मे ि।ा गी करे उसके घर को श्रीलक्ष्मीजी कभ' न छोडे। राजा बलि की प्राथना सुनकर भगवान ने कहा कि जो मनुष्य तीन दिना मे दीपोत्सव और महोत्सव करेगा, उसको छोडकर मेरी प्रिया लक्ष्मी कही अन्यत्र न जायगी।

४६ लक्ष्मी-पूजन-दीपावली

कार्तिक की अमावस्या को यह त्याहार होता ह। इस दिन लक्ष्मी पूजन का विधान ह। लक्ष्मी पूजन की विधि सनत्कुमार सहिता के आधार पर लिखी जाती ह।

कथा—एक समय ऋषियो ने सब मुनीश्वरो से कहा कि हे मुनीश्वरो! अमावस्या के दिन प्रात काल ही स्नानकर भक्तिपूवक पितदेव एव दवताओ का पूजन करे और दधि क्षीर तथा घी से पवण श्राद्ध करके यथा विधि ब्राह्मणा का भोजन कराये। रोगी और बालक के सिवा अन्य किसी व्यक्ति को दिन मे भोजन न करना चाहिए। सन्ध्या समय प्रदोष काल मे लक्ष्मीजी का पूजन करना चाहिए। नाना प्रकार के स्वच्छ और नवीन वस्त्रो से लक्ष्मीजी का मण्डप बनाकर

पत्र, पुष्प, तोरण ध्वजा और पताका आदि से उसको सुसज्जित करे तथा उसमे अनेक देवी-देवताओ के समेत भगवती लक्ष्मी का षोडशोपचारपूर्वक पूजन करे। पूजन के अन्त में परिक्रमा करनी चाहिए।

मुनीश्वरो ने पूछा कि हे सनत्कुमार! लक्ष्मी के साथ-साथ सब देवताओ के पूजन का क्या कारण है? तब सनत्कुमार ने उत्तर दिया कि राजा बलि के कारागार मे लक्ष्मी समस्त देवी देवताओ के समेत बन्धन मे थी। आज के दिन विष्णु भगवान ने उन सबको कैद से छुडाया था और देवता बन्धन-मुक्त होते ही श्री लक्ष्मीजी के साथ क्षीर-सागर मे जाकर सो गये थे। इस कारण अब हमको उनके शयन का अपने अपने घरो मे ऐसा प्रबन्ध कर देना चाहिए कि वे क्षीर-सागर की ओर न जाकर स्वच्छ स्थान और सुकोमल शय्या को पाकर यही सो रहे। अत रेशम से बुने हुए सुन्दर पलग पर कोमल गद्दा बिछाकर उस पर सफेद चादर बिछाये। नवीन तकिया और रजाइ लगाकर कमल-पुष्पो का मण्डप बनाये क्योकि लक्ष्मी का निवास-स्थान कमल-पुष्प ही है। हे मुनीश्वरो! जो लोग लक्ष्मी का इस प्रकार से स्वागत करते है उनको छोडकर वह अन्यत्र कही नही जाती। इसके विरुद्ध जो लोग आलस्य और निद्रा मे पडकर सो जाते है, श्रद्धापूर्वक लक्ष्मीजी का पूजन नही करते वे सदैव दरिद्रता के शिकार बने रहते है।

रात्रि के समय लक्ष्मी के पूजन मे उनका आवाहन करे और गाय के दूध का खोआ बनाकर उसमे मिश्री लवग इलायची कपूर आदि डालकर उसके लडडू बनाकर लक्ष्मी को भोग लगाये। इसके अतिरिक्त देश-कालानुसार भोज्य भक्ष्य पेय, चोष्य चारो प्रकार के पदार्थ तथा फूलादि लक्ष्मी को अर्पण करके तब दीप दान करे। कुछ दीपको को सर्वानिष्ट निवृत्ति के हेतु अपने मस्तक पर घुमाकर चौराहे वा श्मशान मे रखवा दे। नदी,

पवत, महल, वक्षमूल, गौवो के खिडक (खरका) या चबूतरा आदि स्थानो मे भी दीपक रखना चाहिए। यदि सम्भव हो तो घर के ऊपर भी दीपको का एक वक्ष बनाना चाहिए। ऊपर जो ब्राह्मण भोजन कराना लिखा ह, वह भी इसी [illegible]।

राजा को चाहिए कि दूसरे दिन प्रात काल गाव के सब बालको को डौडी पिटवाकर कहला दे कि आज गाव के सब बालक नाना प्रकार का खेल खेले। जब बालक क्रीडा करे तब इस बात की खबर रखनी चाहिए कि वे लोग क्या-क्या खेलते ह। यदि सब बालक या कुछ बालको का समूह आग जलाकर खेले ओर उस आग मे ज्वाला प्रकट न हो तो जानना चाहिए कि इस वष महामारी या घोर दुर्भिक्ष पडने की आशका ह। यदि बालक दु ख प्रकाश करे तो राजा को दु ख होगा। यदि सुख करे तो सुख होगा। यदि बालक आपस मे लडे तो राज-युद्ध होने की सम्भावना होती ह। और यदि बालक रोये तो अनावष्टि की आशका की जानी चाहिए। यदि बालक लकडी का घोडा बनाकर खेले तो जानना चाहिए कि अपनी किसी अन्य राज्य पर विजय होगी। यदि बालक लिग पकडकर क्रीडा करे तो जानना चाहिए कि व्यभिचार अधिकता से फैलेगा और यदि बालक अन्न या पानी चुराये तो अकाल पडने की आशका समभनी चाहिए। इस प्रकार शकुन देखना चाहिए। इस अवसर पर इन तीन दिनो मे जुआ खेलने का भी विधान है। परन्तु स्मरण रहे कि इन तीन दिनो मे नरक-स्वरूप दत्यराज बलि का राज माना जाता ह, जिसमे लक्ष्मी और सब देवी देवताओ को कष्ट सहन करना पडा था। अत अधर्मी राज मे अधम करना ही श्रेयस्कर माना गया है। अद्धरात्रि के समय राजा को भी नगर की शोभा देखने के लिए निकलना चाहिए।

५० अन्नकूट

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट का महोत्सव किया जाता है। यह महोत्सव जिस रूप मे आजकल होता है वह श्रीकृष्ण भगवान् के अवतार के पश्चात द्वापर युग से आरम्भ हुआ है। परन्तु वास्तव मे यह महोत्सव अति प्राचीन है। इसका सम्पूर्ण वृत्तान्त नीचे लिखी कथा म वर्णन किया जाता है —

कथा – एक समय एक महर्षि ने कहा कि हे ऋषियो, कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को अन्नकूट तथा गोवर्द्धन का पूजन करके श्रीविष्णु भगवान को प्रसन्न करना चाहिए। ऋषियो ने महर्षि की इस बात को सुनकर पूछा कि हे भगवान ! यह गोवर्द्धन कौन है और इसकी पूजा का क्या फल है उसे कृपाकर कहिए। तब महर्षि ने नीचे लिखी कथा सुनाई —

एक समय श्रीकृष्ण भगवान् अपने समस्त ग्वालबालो समेत गोओ को चराते हुए गोवर्द्धन पर्वत की तराई मे जा पहुँचे। वहा पहुँचकर सब ग्वालो ने अपनी अपनी पोटली खोलकर रोटिया खानी शुरू की। भोजन करने के उपरान्त सब ग्वालो ने वन मे से नाना प्रकार की लताओ का सग्रह करके एक मण्डप बनाना चाहा। श्रीकृष्ण भगवान के पूछने पर उन्होने बताया कि आज ब्रज मे बडा आनन्द होगा। घर घर पक्वान्न भोजन तैयार हो रहा होगा। इस पर कृष्ण भगवान ने कहा कि देव पूजा करनी है तो अच्छी बात परन्तु यदि देवता प्रत्यक्ष आकर पक्वान्न भोजन करता हो तो तुमको अवश्य यह उत्सव मनाना चाहिए। गोपो ने श्रीकृष्ण के ऐसे वचनो से दुखी होकर कहा कि आप को इस प्रकार देवता की निन्दा न करनी चाहिए। यह किसी सामान्य देवता का महोत्सव नही है किन्तु तैंतीस कोटि देवताओ के अधिपति वृत्रासुर जैसे भारी असुर के सहारकर्ता और मेघ मण्डल के अधिपति महाराज इन्द्र का इन्द्रोज नामक यज्ञ है।

जो मनुष्य श्रद्धापूवक इस इ द्र मख को करता ह, उसके दश मे अतिवष्टि और अनावष्टि न होकर प्रजा सुख भोगती ह । इसलिए आप भी इस यज्ञ को आन दपूवक कीजिए, यही हम लोगो की प्राथना है।

भगवान कृष्ण ने गोपा की ऐसी बाते सुन हँसकर कहा कि यह गोवद्धन पवत ही सुभिक्ष एव वष्टि का कारण ह। इसकी पूजा मथरा और गोकुल के लोगो ने पहले की ह ओर हम गोप-लोगो का प्रत्यक्ष हितकर्ता भी यही ह। अत म इसको इ द्र से भी बलवान जानकर इसी का पूजन करना उचित समझता ह। कृष्ण की इस बात पर बहुत से गोप सहमत हो गये और घर पर जाकर उ हाने इतस्तत श्रीकृष्ण की बात का मण्डन किया। परिणाम यह हुआ कि न दरानी (यशोदा) की प्रेरणा से न दजी ने सब गोप ग्वालो की एक सभा कराइ ओर कृष्ण को बुलाकर उनसे पूछा कि इ द्र की पूजा से ओर उसकी तुष्टि से तो सुभिक्ष होकर प्रजा सुखी होती है, परन्तु गोवद्धन की पूजा से क्या लाभ होगा, उसे बतलाओ। इसके उत्तर मे श्रीकृष्ण भगवान ने गोवद्धन पवत की प्रशसा की और उसकी उपयोगिता बताकर कहा कि प्रत्यक्ष मे हम लोग गोप ह और हमारी [illegible] का विशेष सम्ब ध गोवद्धन पवत से ही ह। अत मेरी समझ मे इसी की पूजा करनी योग्य ह। भगवान श्रीकृष्णजी के ऐसे सार गर्भित वचन सुनकर सब गोप ग्वाल अपने अपने घरो मे बने हुए पक्वान और दही दूध लेकर गोवद्धन की उपत्यका मे जा पहुँचे और श्रीकृष्ण भगवान की बताइ हुइ विधि से गोवद्धन पवत की पूजा करने लगे।

श्रीकृष्ण ने अपने आधिदविक रूप से पवत मे प्रवेश किया। उस समय गिरिराज ने ब्रजवासियो के दिये हुए सब पदार्थों को भक्षण किया तथा उन सबको आशीर्वाद भी दिया, जिससे सब गोपाल अपने यज्ञ को सफल हुआ समझकर अति प्रसन्न हुए।

जिस समय ब्रजवासी गोवर्द्धन पूजन का उत्सव मना रहे थे, उसी समय नारदजी इद्र महोत्सव देखने की इच्छा से वहा आ पहुँचे। उनके पूछने पर ब्रजवासियो ने उत्तर दिया कि इस वष श्रीकृष्ण भगवान की इच्छानुमार इद्रोज को स्थगित करके गोवर्द्धन की पूजा की गइ ह। इतना सुनकर नारदजी उसी समय इद्रलोक को चले गये और कुछ म्लान मुग होकर बोले कि गोकुल के निवासी गोप लोगो ने आपके इद्रोज को ब द करके आप से बलवान गोवर्द्धन की पूजा की ह। आज से यज्ञादिको मे तो उमका भाग हो ही गया परन्तु क्या आश्चय ह कि थोडे ही समय की कृष्ण की सगति से वे तुम्हारे ऊपर चढाइ कर दे और इद्रासन भी उनके अधिकार मे चला जाय।

नारदजी तो यह कहकर चले गये परन्तु इद्र के मन को बहुत क्षोभ हुआ। अपनी अवज्ञा को न सह सकने के कारण देव राज ने मेघो को आज्ञा दी कि वे गोकुल पर प्रलय काल जसी नूसलाधार वर्षा करे और ब्रज मण्डल का मवनाश कर दे। मेघो ने इद्र की आज्ञा पाकर जब ब्रज पर मूसलाधार वष्टि आरम्भ की तब सब गोप ग्वाल घबडाकर श्रीकृष्ण की शरण म गये और रक्षा के लिए प्राथना की।

श्रीकृष्ण भगवान ने गोप गोपियो के आतनाद को सुनकर कहा कि तुम सब गोवर्द्धन पवत की शरण मे चलो। वही तुम्हारी रक्षा करेगा। जब सब ब्रजवासी गोकुल से निकलकर गोवर्द्धन की उपत्यका मे गये तब श्रीकृष्ण ने गोवर्द्धन को छतरी की तरह अपने हाथ पर उठा लिया और सब गोप गोपी उसी की छाया मे मेघो की वष्टि से बच गये। मेघो ने सात दिन तक अपार वष्टि की, परन्तु सुदशन चक्र के प्रभाव से ब्रजवासियो पर एक बूद भी जल न पडा। यह कौतूहल देखकर तथा ब्रह्मा के द्वारा श्रीकृष्णावतार की बात जानकर इद्र स्वय ब्रज मे आकर श्रीकृष्ण के चरणो पर गिर पडा और अपनी मूखता पर पश्चात्ताप करके

क्षमा-प्राथना करने लगा। इस प्रकार अपने अपराध को क्षमा कराकर देवराज इ द्र चले गये। श्रीकृष्ण ने सातवे दिन गोवद्धन को नीचे रखा और ब्रजवासियो से कहा कि अब तुम लोग प्रति वष इसी प्रकार गोवद्धन का पूजन करके अन्नकूट उत्सव मनाया करो। तभी से अन्नकूट का उत्सव प्रचलित हुआ ह।

५१. भ्रातृ द्वितीया

भात द्वितीया को 'भयादूज' भी कहते ह। यह पव कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता ह। इसका प्रधान ध्येय भाइ बहन का मेल ह। इस दिन भाइ बहन के घर आकर भोजन करता ह। बहन भाइ की पूजा करती ह। इस दिन गोधन कूटा जाता ह। गोबर से एक मनुष्य की आकृति बनाकर उसकी छाती पर इट रखी जाती ह और उसपर स्त्रिया मूसल का प्रहार करती हुइ उसे तोडती ह। कूटने से पहले कहानिया कही जाती ह। घर घर स्त्रिया गूम, भटकटया और चना लेकर सरापती हं। इसके पश्चात वे अपनी जीभ को भटकटया के काटे से दागती ह। यह सब मध्याह्न के पूव ही होता है। इसके पश्चात् बहन अपने भाइ के घर जाती ह। पहले वह उसे पूजे हुए चने, इसके बाद मिठाइ खिलाती है। कभी वह भाइ को ही अपने यहा आमत्रित करती ह। मिठाई खाने के बाद भाइ अपनी बहन को भेंट दता ह। इस प्रकार यह भाइ बहन का त्योहार ह।

कहा जाता ह कि इसी दिन यमुना अपने भाइ यम से मिलने के लिए गयी थी। यमराज ने बहन पर प्रसन्न होकर उसे यह वर दिया था कि जो व्यक्ति इस दिन यमुता मे स्नान करेगा वह यमलोक नहीं जायगा। इस दिन मथुरा मे विश्राम घाट पर स्नान करने का बडा महात्म्य ह। लाखो की सख्या मे लोग वहा जाते है और यमुना जल मे स्नान करते ह।

५२. सूर्य-षष्ठी व्रत

कार्तिक शुक्ल षष्ठी को सूर्य षष्ठी व्रत होता है। इसे 'डाला छठ' भी कहते हैं। यह व्रत पुत्र के होने पर होता है। पुत्र की दीर्घायु के लिए यह किया जाता है। इसमें तीन दिन उपवास करना पड़ता है। इस व्रत को करने वाली स्त्री को पंचमी के दिन एक बार अलोना भोजन करना पड़ता है। दूसरे दिन षष्ठी को बिना जल के स्त्रियां रहती हैं। उस दिन संध्या को अर्घ्य दिया जाता है। स्त्रियां विविध प्रकार के फल, नारियल, केला और मिठाई आदि पूजा के लिए ले जाती हैं। घाट पर सब स्त्रियां कीर्तन करती हैं और कुछ रात बीतने पर घर आती हैं। रातभर जागरण होता है। दूसरे दिन प्रातःकाल वे फिर घाट पर जाती हैं और नदी अथवा तालाब में नहा कर गीत गाती हैं। गीत का विषय सूर्य का उगना ही रहता है। सूर्य भगवान् के उदय होने पर अर्घ्य दिया जाता है। तब यह व्रत समाप्त होता है। इस व्रत में षष्ठी को सायंकाल और सप्तमी को प्रातःकाल सूर्योदय होने पर अर्घ्य देने का विधान है।

कथा—एक वृद्ध स्त्री थी। उसके सन्तान नहीं थी। कार्तिक शुक्ल सप्तमी के दिन उसने यह संकल्प किया कि यदि उसके पुत्र होगा तो वह इस व्रत का पालन करेगी। सूर्य की कृपा से उसे पुत्र उत्पन्न हुआ, पर उसने व्रत नहीं किया। लड़का विवाह योग्य हो गया फिर भी उसने व्रत नहीं किया। अन्त में उसका विवाह भी हो गया। विवाह करके लौटते समय एक जंगल में वर-वधू ने डेरा डाला। उस समय वधू ने पालकी में अपने पति को मरा पाया। इससे वह रोने लगी। उसका रोना सुनकर एक वृद्धा उसके पास आई और कहने लगी कि मैं ही छठी माता हूं। तुम्हारी सास सदा मुझे फुसलाती रही है। मेरी पूजा उसने नहीं की। मैं तुम्हारे पति को इस समय जिला देती हूं। घर जाकर

अपनी सास से इस सबध मे पूछना। उसके इतना कहते ही वर जी उठा। वधू ने घर पहुँच कर सास से सब बाते कही। सास ने अपनी भूल स्वीकार की और सय षष्ठी का व्रत करने लगी। तभी से यह व्रत प्रसिद्ध हुआ।

५३ देवोत्थानी एकादशी

कार्तिक शुक्ल एकादशी को देवठन या देठवन भी कहते ह। कहा जाता ह कि इस दिन क्षीर सागर मे सोये हुए विष्णु भगवान जागे थे।

इसके सम्बन्ध मे कथा प्रचलित ह कि भाद्रपद मास की एकादशी को विष्णु भगवान ने शखासुर नामक महाबली राक्षस को मारा था और विपुल परिश्रम करने के कारण उसी दिन सो गये थे। उसके बाद कार्तिक शुक्ल एकादशी को जागे थे। विधि-पूवक विष्णु भगवान की पूजा ही इम व्रत का मुरय ध्येय है।

किसी किसी प्रान्त मे इसी दिन इक्षु (इख) के खेतो मे जाकर सिन्दूर, अक्षत और आभूषण आदि से इख की पूजा करते ह और तत्पश्चात इसी दिन पहले पहल इख चूसते ह।

५४ तुलसी-विवाह

कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी ही के दिन तुलसी विवाह का भी उत्सव होता है। तुलसी का दूसरा नाम ही विष्णु प्रिया है। विष्णु भगवान की स्वण मूर्ति मे प्राण प्रतिष्ठा कराने के बाद उसे पुष्पादि से सजाकर गाजे बाजे के साथ तुलसी वक्ष के समीप ले जाते ह और वहा विधिपूवक उनका विवाह कराया जाता ह। उस समय स्त्रिया विवाह के गीत आदि भी गाती ह। इसके सम्बन्ध मे पद्म पुराण की यह कथा प्रचलित है —

कथा—जालन्धर नामक दत्य के एक परम रूपवती पतिव्रता स्त्री थी। उसका नाम था वन्दा। स्त्री के पातिव्रत से वह विश्व विजयी बना हुआ था। उसके भय से ऋषियो ने भगवान् विष्णु से प्राथना की कि जालन्धर हमारे धर्मानुष्ठान मे विघ्न डालता ह। विष्णु भगवान ने उसकी स्त्री का पातिव्रत नष्ट करके उसका बल क्षीण करने की ठान ली। भगवान ने वन्दा के आगन मे किसी मुद का शरीर फेकवा दिया। वन्दा उसे पति का शरीर समझकर विलाप करने लगी। उसी समय एक साधु ने आकर मत शरीर को जीवित कर दिया और वन्दा ने उसका आलिङ्गन किया। पीछे वृन्दा को मालूम हुआ कि यह सब विष्णु का छल ह। उसका पति तो देवलोक मे इन्द्र से युद्ध कर रहा ह। वन्दा का सतीत्व नष्ट होते ही उसका पति यद्ध मे हार गया और वह सचमुच मारा गया। इस पर क्रुद्ध होकर वन्दा ने विष्णु भगवान को शाप दिया कि जिस प्रकार तुमने मुझे पति वियोगिनी बनाया है वसे ही तुम भी स्त्री वियोगी बनोगे। इसके बाद वन्दा जालन्धर के साथ सती हो गइ।

विष्णु भगवान अपने छल पर लज्जित हुए। इस पर देवताओ ने उन्हे समझाया और श्रीपावती ने वन्दा की चिता भस्म मे तुलसी, आवला और मालती के वक्ष लगाये। इसमे से तुलसी को भगवान विष्णु ने वन्दा का रूप समझा और उसे अपनाया। वन्दा के शाप से भगवान को रामावतार मे स्त्री वियोग सहना पडा। भगवान की प्रसन्नता के लिए प्रति वष तुलसी का विवाह उनके साथ कराया जाता है।

५५ भीष्म-पञ्चक

यह व्रत कार्तिक शुक्ल एकादशी से आरम्भ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता ह। इसीलिए इसे भीष्म पचक कहते ह।

एकादशी को प्रात काल स्नानादि करके पापा के नाश और धम, अथ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति के लिए इस व्रत का सकल्प करे। घर के आगन अथवा नदी के तट पर चार दरवाजो वाला मण्डप बनाकर उसे गोबर से लीपे और तत्पश्चात सवतोभद्र की वेदी बनाकर उस पर तिल्-युक्त घट की स्थापना करे। पाचो दिन लगातार रात-दिन घी के दीपक जलाये, जाप करे और १०८ आहुतिया दे। इस व्रत की कथा इस प्रकार ह —

कथा—राजर्षि भीष्म पितामह महाभारत मे जिस समय शर शय्या पर सो रहे थे, उसी समय भगवान कृष्ण को साथ लकर पाचो पाण्डव उनके पास गये। उपयुक्त अवसर समझकर धमराज युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से प्राथना की कि आप हम लोगो को कुछ उपदेश दे। युधिष्ठिर की इच्छानुसार पितामह ने पाच दिन तक राज धम, वण धम और मोक्ष धम आदि का महत्त्वपूण उपदेश दिया। उनका उपदेश सुनकर भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आपने जो कार्तिक शुक्ल ११ से पूर्णिमा तक पाच दिन उपदेश दिए ह, उ ह सुनकर म बहुत प्रसन्न हू। इसलिए आपकी स्मति स्थापित करने के लिए म 'भीष्म पचक' व्रत स्थापित करता हू।

५६. कार्तिकी पूर्णिमा

कार्तिक की पूर्णिमा को 'त्रिपुरी पूर्णिमा' भी कहते ह। इस दिन गगा-स्नान और दीप दान का विशेष महत्त्व है। इस तिथि पर यदि कृत्तिका नक्षत्र हो तो महाकार्तिकी होती ह

और भरणी हो तो विशेष फल देती ह। रोहिणी होने पर इसका फल और भी अधिक ह। इसी दिन सायकाल के समय भगवान का मत्स्यावतार हुआ था। इसलिए इस दिन दिये गए दान का दस यज्ञो के समान फल होता ह। यदि इस दिन कृत्तिका का चद्रमा और विशाखा का सूय हो तो पद्मक नामक योग होता है जो पुष्कर मे भी दुलभ ह। इस दिन चद्रोदय के समय शिवा सभति मतति आदि ६ कृत्तिकाओ का पूजन करना चाहिए। कार्तिकी पूर्णिमा की रात्रि मे व्रत करके यदि वष का दान किया जाय तो शिव पद की प्राप्ति होती ह। इस दिन उपवास करके भगवान का स्मरण करने से अग्निष्टोम के समान फल मिलता ह और सय लोक की प्राप्ति होती ह। इसी प्रकार यदि इस दिन स्वण का मेष दान किया जाय तो ग्रहयोग के कष्ट नष्ट हो जाते ह। प्रत्येक पूर्णिमा का रात्रि मे व्रत और जागरण करने से सम्पूण मनोरथ सिद्ध होते ह।

कथा—कहा जाता ह कि इसी तिथि पर शिवजी ने त्रिपुर राक्षस को मारा था। एक बार त्रिपुर राक्षस ने एक लाख वष तक प्रयागराज मे तप किया जिससे सब चराचर और देवता भयभीत हो उठे। अत मे सब देवताओ ने अप्सराओ को उसका तप भ्रष्ट करने के लिये भेजा। परन्तु वह उनके फदे म नही आया। यह देखकर स्वयम ब्रह्मा उसके पास गये ओर उससे वर मागने क लिये कहा। उसने मनुष्य अथवा देवता द्वारा न मारे जाने का वरदान मागा। ब्रह्मा के इस वरदान से त्रिपुर निभय होकर अत्याचार करने लगा। देवताओ के षडयत्र से उसने एक बार कलाश पर चढाइ की। इससे शिव और त्रिपुर मे भयकर युद्ध हुआ। अत मे शिवजी ने ब्रह्मा और विष्णु की सहायता से उसका वध किया। तब से इस दिन का महत्त्व बढ गया। इसी दिन त्रिपुरोत्सव भी होता ह। इस दिन क्षीर-सागर दान का विशेष महत्त्व ह। क्षीर सागर का दान २४ अगुल के

पात्र में दूध भरकर तथा साने या चादी की मछली छोडकर किया जाता है।

५७. काल भैरवाष्टमी

मागशीष के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को भरवाष्टमी अथवा माग भग्राग्टमी कहते ह। इसी तिथि पर मध्याह्न के समय भरवजी का ज म हुआ था। अत इस दिन मध्याह्न व्यापनी तिथि लेनी चाहिए। इस व्रत के करने से व्रती सब पापा से मुक्त हो जाता ह। भरवजी का वाहन कुत्ता ह और उनका हथियार दण्ड ह। इसलिए उनको दण्टपाणि भी कहते ह। अत जा उनकी पूजा करता ह वह उनके नगर काशी मे जाने पर सुरक्षित रहता ह। काशी में भरवजी के अनेक मदिर ह जिनमे म काशी मे कालभरव अधिक प्रसिद्ध ह।

मागशीष के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को रात्रि में जागरण करने का बडा महात्म्य ह। मध्य रात्रि मे धूमधाम से शख, घटा, नगाडा आदि बजाकर कालभरव की आरती करनी चाहिए। रात्रि मे गिवजी की कथा मुननी चाहिए। भैरव के लिए रविवार और मगलवार दिन ग्राह्य ह। इसलिए यदि यह इन दिनो मे पड जाती ह तो इसका विशष महत्त्व ह। भरवजी की पूजा के साथ उनके वाहन कुत्ता का भी पूजन होता ह। भक्त उसे भी मिष्ठान्न, दूध, दही आदि देते ह। भरवनाथ और विश्वनाथ दोनो एक ही भगवान शकर के दो रूप ह। एक ह विकट मूर्ति और दूसरी ह सौम्य मूर्ति। सौम्य रूप से भगवान शकर जगत की रक्षा करते ह और विकट रूप से अपराधियो को दण्ड देते ह।

५८. दत्तात्रेय जन्मोत्सव

भारत के पोराणिक इतिहास म दत्तात्रेय अपनी बहुज्ञना के लिए प्रख्यात ह। दत्तात्रेय के तीन सिर और छ भुजाए मानी गइ ह। उन्हे ब्रह्मा, विष्णु महेश तीनो देवताओ की सयुक्त मूर्ति भी मानते ह। उनका जमोत्सव मागशीष कष्ण दशमी को नीचे लिखी कथा कहकर मनाया जाता ह —

कथा—एक समय ब्रह्मा की स्त्री सावित्री विष्णु की स्त्री लक्ष्मी और शिव की स्त्री पावती को अपने अपने पतिव्रत और सदगुणो पर गव हो गया। नारद से यह अभिमान भला कब देखा जाता? उहोने झट पावती के पास जाकर कहा कि म ससार भर मे भ्रमण करता हू कितु अत्रि मुनि की स्त्री अनुसूया के समान पतिव्रता ओर सदगुण सम्पन्न स्त्री मने कही नही देखी। यह सुनकर पावती को इर्ष्या हुइ। नारदजी के विदा होते ही उहोने शिवजी से अनुसूया का व्रत भङ्ग कर देने की प्राथना की।

पावती से विदा लेकर नारदजी ब्रह्मलोक को गये और वहा भी सावित्री से अनुसूया की प्रशसा की। उहे भी यह बात नही भाइ और उहोने ब्रह्माजी से अनुसूया का चरित्र डिगा देने का आग्रह किया।

ब्रह्मलोक से चलकर नारद जी विष्णुलोक पहुचे। वहा भी उहोने लक्ष्मी के सामने अनुसया की प्रशसा के पुल बाध दिये। फल यह हुआ कि लक्ष्मी ने भी विष्णु से कहा कि जिस प्रकार हो आप अनुसूया का पतिव्रत भङ्ग कर दे।

सयोग वश तीनो देवता एक ही समय अनुसूया की कीर्ति नष्ट के लिए अत्रि मुनि की कुटी के पास पहुँचे। भिक्षुको के वेश मे जाकर उहोने अनुसूया से भिक्षा मागी। अनुसया जब भिक्षा देने आइ तब उहाने कहा कि हम तो भिक्षा न लेकर इच्छानुसार भोजन करेगे। अनुसूया ने स्वीकार कर लिया

और कहा कि आप लोग नदी मे स्नान करके आइये, तबतक म भोजन बना रखती हू। स्नान करके आने के बाद जब अनुसूया ने उन्हे भोजन परोसा तब उन्होने खाने से इकार कर दिया और कहा कि जब तक तुम हमारे सामने नग्न होकर भोजन न परोसोगी, तबतक हम भोजन न करेगे। यह सुनकर अनुसूया पहले तो क्रुद्ध हुइ, पर विचार करने पर अपने पतिव्रत के बल से उसे देवताओ के कपट की बात मालूम हो गइ। वह अपने पति अत्रि मुनि के पास गइ और उनका पर धोकर वही जल देवताओ के ऊपर डाल दिया। उस जल के पडते ही तीनो देव बाल रूप हो गये। तब अनुसूया ने नग्न हो कर उन्हे भरपेट दूध पिलाया और फिर तीनो को पालने मे झुलाने लगी।

इधर जब बहुत दिन हो जाने पर भी तीनो देवता वापस न आये, तब उनकी स्त्रिया चितित हुइ। अकस्मात तीनो की भेट नारद से हो गइ। उन्होने अपने पतियो का पता नारद से पूछा। नारद ने कहा कि एक दिन मने उन तीनो को अत्रि मुनि के आश्रम की ओर जाते देखा था। तीनो स्त्रिया अत्रि मुनि के आश्रम पर पहुची और उन्होने अनुसूया से पूछा कि यहा हमारे पति आये थे? अनुसूया ने पालने की ओर इशारा करके कहा कि वही तुम्हारे पति ह। अपने अपने भर्ता को पहचान लो। [illegible] थे। लक्ष्मी ने ध्यान पूर्वक देखा और एक बच्चे को विष्णु समझकर उठा लिया, किन्तु वह शिव निकले। इस पर लक्ष्मी का बडा उपहास हुआ।

यह दशा देख लक्ष्मी, पार्वती और सावित्री ने अनुसूया से हाथ जोडकर प्रार्थना की कि हमे अपने अपने पति को अलग-अलग प्रदान करो। अनुसूया ने कहा कि उन्होने हमारा दूध पिया ह, इसलिए वे हमारे बच्चे ह और उन्हे हमारे बच्चे बनकर रहना पडेगा।

इस पर तीनो देवताओ के सयुक्त अश से एक मूर्ति बन गइ,

जिसके तीन सिर और छ भुजाएँ थी। इस प्रकार दत्तात्रेय का जन्म हुआ। इसके बाद अनुसूया ने अपने पति के चरण धोये और वही जल उन बच्चो पर छोड दिया, जिससे तीनो देवताओ को पुन अपना पूवरूप प्राप्त हो गया। प्रसिद्ध है कि दत्तात्रेय ने चौबीस गुरुओ से विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त किया था। इसकी कथा पुराणो मे दी हुइ है।

५६. औसान बीबी की पूजा

'औसान बीबी की पूजा' अशुद्ध ह। इसका शुद्ध रूप है—अवसान विधि की पूजा। इस देश मे विवाह के अन्त मे सात या पाच सौभाग्यवती स्त्रियो का निमन्त्रण करके उनके सौभाग्य का पूजन होता है। उसी को 'औसान बीबी की पूजा कहते ह। विवाह के अतिरिक्त अन्य किसी शुभ काय की सकुशल समाप्ति के पश्चात् भी सुहागिनो के न्योतने की चाल है। कार्तिक-स्नान के बाद या मलमास-स्नान के बाद भी कोइ-कोइ 'औसान बीबी की पूजा' करती ह। तात्पय यह कि काय सिद्धि के बाद यह पूजा होती ह। पूर्वी प्रान्तो मे इसे 'अचानक देवी' का व्रत कहते ह।

पूजा के दिन सबेरे पाच या सात सौभाग्यवती स्त्रियो को भोजन करने का निमन्त्रण दे दिया जाता है। प्राय मध्याह्न के समय स्त्रिया बुलाइ जाती ह। उनके एकत्रित हो जाने पर किसी उत्तम स्थान मे एक गोलाकार चौक पूरा जाता है। उस चौक पर गेहू बिछाकर मिट्टी की सात ठिलिया चक्राकार रक्खी जाती है। उन्ही ठिलियो पर सिदूर लगाकर एक मिट्टी के कोरे घडे मे जल भरकर कलश स्थापित किया जाता है। उस कलश का पूजन होता है।

पूजन के पहले ही आमन्त्रित सुहागिनो का उबटन-स्नान कराके श्रद्धानुसार उनको वस्त्र और आभूषण से अलकृत किया

जाता ह। तब वे सब पूजा के कलश को घेरकर बठती ह। पचाग-पूजन के बाद सहागिने हाथो मे अक्षत लेती ह। पूजा करनेवाली यदि सधवा ह तो स्वय पूजा म सम्मिलित होती ह। ।ि ि ा ा है, तो अलग रहती ह। तब कथा कही जाती ह। कथा समाप्त होते ही कलश पर अक्षत छोडे जाते ह। तब कलश के पास वाली मिट्टी की ठिलियो पर का सिदूर सुहागिनो के ललाट मे लगाया जाता ह। भुने चने और गुड का प्रसाद वितरण किया जाता ह। इसके बाद उनको भोजन कराकर विदा किया जाता है। रात मे कीतन होता ह। इसकी कथा नीचे लिखी जाती है —

कथा—कोइ भाइ बहिन थे। भाइ को चिडियो के पालने का बडा शौक था। वह रात दिन उन्ही की सेवा-सभाल मे लगा रहता था। जब उसकी सगाइ पक्की हुइ, तब वह दिन प्रतिदिन दुबला होने लगा। उसकी ऐसी दशा देखकर बहिन ने उससे पूछा कि ज्यो ज्यो तुम्हारे विवाह के दिन पास आते ह, त्यो-त्यो तुम दुबले क्यो होते जाते हो? वह बोला कि मुझे किसी बात का दु ख तो है नही, केवल इसी बात की चिता मुझे लगी रहती है कि विवाह मे जब मेरी बारात जायगी, तब तीन-चार दिन यहा मेरी चिडियो को चारा-पानी कौन देगा। यदि इनकी सेवा सभाल मे जरा भी सुस्ती या लापरवाही हुई, तो मेरी अति परिश्रम से पाली हुइ चिडिया बेमौत मर जायगी।

बहिन ने कहा कि तुम इस बात की तनिक भी चिता मत करो। तुम्हारी चिडियो को चारा पानी म दूगी। जबतक तुम विवाह कर के लौट आओगे, तबतक म तुम्हारी चिडियो को किसी प्रकार तकलीफ न होने दूगी।

कुछ दिनो के बाद बारात चली। भाइ दूल्हा बनकर चला गया। बहन ने चिडियो के चारा पानी का जिम्मा ले तो लिया, पर ब्याह के दिन घर के नेग चार के काम मे व्यस्त रहने के कारण वह समय पर चिडियो को चारा पानी न दे सकी। जब

उठा। यह सब उन्ही औसान बीबी की माया है। इधर इस लडकी ने घर मे जाकर सुहागिने न्योती उधर जिनका मुर्दा जी उठा था, उन लोगो ने भी सुहागिनो को न्योत बुलाया और औसान बीबी की विधिवत पूजा की।

जिन लोगो का दूल्हा अचेत हो गया था वे लोग उसी जगह से वापस आये। उनमें जो वयोवृद्ध और चतुर मनुष्य थे, उन्होंने लडकी से पूछा कि तूने हमारे दूल्हे को क्या कर दिया जो वह अपने आप अचेत हो गया ? तब लडकी ने कहा कि म क्या जानू मेरी औसान बीबी जाने। जिन लोगो ने उनकी पूजा के लिए चने भुना कर ला दिये उनका मुर्दा जी उठा और तुमने इन्कार किया, सो तुम्हारा दूल्हा अचेत हो गया, तो इसके लिए म क्या करू। तब वे लोग बोले कि हमको पूजा की विधि बता दो। हम भी घर पहुच कर औसान बीबी की पूजा करेगे। लडकी ने उनको पूजा की विधि बतला दी।

पूजा का सकल्प करते ही दूल्हा चगा हो गया। बारात जनवासे की ओर गइ। विवाह सकुशल पूण हुआ। तब उन लोगो ने सात सुहागिने न्योत कर उनके आचल भरे और औसान बीबी की विधिवत् पूजा की। इधर जब लडकी का भाइ ब्याह करके घर आया तब लडकी की माता ने भी औसान बीबी का पूजन किया।

उसी समय से विवाह के अत मे औसान बीबी की पूजा की परिपाटी चली है।

६० प्रदोष-व्रत

प्रदोष का अथ ह रात्रि का आरभ। इसी समय इस व्रत के पूजन का विधान ह। अत इसे प्रदोष व्रत कहते ह। यह व्रत प्रत्येक मास की त्रयोदशी को किया जाता है। इसे स्त्री और पुरुष दोनो करते ह। सन्तान की कामना इस व्रत का मुख्य उददेश्य ह। इसके

उपास्य देवता ह महादेव शकर। प्रदोष काल मे उन्ही का विधिवत पूजन होता ह। इस व्रत मे सायकाल शकर का पूजन करके भोजन करना चाहिए। व्रती को एक भुक्त ही रहना चाहिए। दोनो पक्षो की अपेक्षा कृष्ण पक्ष का प्रदोष व्रत यदि शनिवार को पडता है तो यह 'शनि प्रदोष' विशेष फलदायक होता ह। सोमवार शकरजी का दिन ह। इसलिए यदि प्रदोष सोमवार को पडता है तो उसे 'सोमवार प्रदोष' कहते ह। श्रावण मास का प्रत्येक सोमवार प्रदोष के लिए अत्यन्त उपादेय माना गया ह। प्रदोष व्रत की कथा इस प्रकार है—

कथा—प्राचीन काल मे एक ब्राह्मणी अपने पति के मर जाने के कारण भीख मागने लगी। वह अपने पुत्र के साथ प्रात काल ही भीख मागने के लिए निकल जाती और सायकाल घर आती थी। एक दिन उसे विदभ का राजकुमार मिला जो अपने पिता की मत्यु हो जाने पर मारा-मारा फिर रहा था। ब्राह्मणी उसे अपने घर लाइ और उसका पालन पोषण करने लगी। एक दिन ब्राह्मणी दोनो बालको को लेकर शाडिल्य ऋषि के आश्रम मे गयी और उनसे शकर के पूजन की विधि जान कर घर आइ। वह प्रदोष व्रत करने लगी।

एक दिन दोनो बालको ने एक वन मे गधव कयाआ को क्रीडा करते देखा। ब्राह्मण बालक तो घर आ गया, पर राजकुमार नही आया। वह अशुमती नाम की एक गधव कया से बाते करने लगा। दूसरे दिन वह घर से फिर उसी स्थान पर गया। वहा अशुमती अपने माता पिता के साथ बठी थी। उसके माना पिता ने उससे कहा कि तुम विदभ नगर के राजकुमार धमगुप्त हो और हम तुम्हारे साथ शकर की आज्ञा से अपनी पुत्री अशुमती का विवाह करेगे। इस प्रकार राजकुमार का विवाह अशुमती के साथ हो गाया। इसके पश्चात उसने गधव राज विद्रविक की सेना लेकर विदभ नगर पर अधिकार कर लिया। यह प्रदोष

व्रत का फल था। उसी समय से प्रदोष के व्रत की ससार मे प्रतिष्ठा हुइ।

६१ सातों वार के व्रत

रविवार सोमवार और मगलवार इन तीनो वारो के व्रतो का तो अधिक प्रचार हिदू समाज मे है, पर बुध, बहस्पति, शुक्र ओर शनि, इन चार वारो के व्रत यदा कदा प्रयोजन पाकर किये जाते ह। वस्तुत मल-मास और कार्तिक मे स्नान करने वाली स्त्रिया सातो वारो के व्रत करती ह। प्राय रविवार और मगलवार के व्रतो मे फलाहार किया जाता ह।

१ *रविवार का व्रत*--रविवार के व्रत मे नमक का भोजन और तल का सेवन निषेध ह। रविवार के व्रत मे पारण या फलाहार करने वाले को उचित ह कि सूय का प्रकाश रहते भोजन कर ले। यदि निराहार अवस्था मे सूय अस्त हो जाय तो दूसरे दिन सूर्योदय तक व्रत रखना उचित ह। व्रत मे फलाहार हो या पारण भोजन एक बार से अधिक न करना चाहिए। व्रत के अन्त मे पूजन के बाद रविवार की कथा इस प्रकार कही जाती है--

कथा--कोइ सास बहू थी। बहू का पति स्वय सूय का अवतार था। वह सदव अन्तर्द्धान रहा करता था। समय पर घर मे ाना भी पि ाग ाना था। वह जब कभी आता जाता, तब एक हीरा अपनी माँ को और एक अपनी स्त्री को दे जाया करता था। उसी से उनका खच चलता था। उस पुरुष का नाम भी सूय बली था।

एक दिन सूयबली की माता ने उससे कहा कि तुम जो कुछ देते हो, उससे हमारे खाने पीने को भी पूरा नही पडता। यह

सुनकर लडके ने कहा कि म जो हीरा तुमको देता हू, उसके मूल्य से तुम्हारा उम्र-भर खाना पीना चल सकता है। परन्तु तुम फिर भी भूखी रहती हो। इससे स्पष्ट होता है कि तुम्हारी नीयत दुरुस्त नही है। तुमको अपने भरण पोषण क सिवाय अपने कतव्यो का कुछ ध्यान ही नही है। इसी कारण तुम्हारा अघाव नहीं होता और इसी से म घर मे नही ठहरता हू। तब साम बहू दोनो ने कहा कि अब से हम लोग नियम पूवक कार्तिक स्नान किया करेगी।

उन्होने बारह वष तक विधिपूवक कार्तिक स्नान किया। बारहवे वर्ष बहू ने अपने पति सूयबली से कहा कि अब हमको कार्तिक का उद्यापन (शान्ति) करना है। आप इसका प्रबन्ध कर दीजिए। तब सूयबली की इच्छा करते ही उनका घर धन धान्यादि सब सामग्री से परिपूण हो गया। प्रात काल कार्तिक का पूजन कर के बहू ने शाम को सूय भगवान का पूजन किया। तब सूय भगवान ने दर्शन देकर कहा कि जो वर मागना हो, माग लो। स्त्री ने कहा कि मेरा पति मुझसे दूर दूर रहता है सो मुझे उसके सयोग का वरदान दिया जाय। इस पर सूय तथास्तु कहकर अन्तर्द्धान हो गये।

रात्रि होते ही सूयबली ने मा से कहा कि आज म घर मे ही सोऊँगा। यह सुनकर बहू को प्रसन्नता हुइ। उसने अच्छी तरह से सेज सवारी। उसका पति आकर उसी पर लेट रहा। सूय देवता मनुष्य के रूप मे शयन करने लगे तो सारे ससार म अधेरा हो गया। मनुष्यो की बात ही क्या ह, सुर, मुनि नाग गन्धर्वादि व्याकुल होकर बुढिया के घर दौडते आये। सब ने बुढिया की शुश्रुषा करके कहा कि अपने पुत्र को जगाओ। उसने शयनागार के पास जाकर पुत्र को बुलाया। तब वह उठकर बाहर चला आया। उसने देवताओ से कहा कि जब तक ये सास बहू कार्तिक नहाएँ, तब तक इनके घर गगा बहे और ऋद्धि सिद्धिया इनके घर

वास करें। तब देवताओं ने सर्वसम्मति से सूर्य भगवान् का आदेश स्वीकार किया। तभी से स्त्री-समाज में कार्तिक-स्नान का विशेष माहात्म्य माना गया है। कार्तिक-स्नान करने वाली स्त्री के घर सम्पूर्ण देवताओं और ऋद्धि-सिद्धिओं का वास रहता है तथा कार्तिक-स्नान से सम्पूर्ण पापों का नाश होता है और अन्त में स्वर्ग का वास होता है।

कार्तिक-स्नान करते हुए भी यदि रविवार का व्रत विधिवत् न किया जाय तो कार्तिक-स्नान का फल नहीं प्राप्त होता।

कार्तिक के अतिरिक्त जब दूसरे महीनों के सम्बन्ध में, जैसे माघ, वैशाख आदि के स्नान और व्रत में, यह कथा कही जाती है, तब कार्तिक के स्थान में अपेक्षित महीने का नाम योजित कर दिया जाता है।

२. *सोमवार का व्रत*—साधारणतया सोमवार का व्रत दिन के तीसरे पहर तक रखा जाता है। इस व्रत में फलाहार या पारण का कोई खास नियम नहीं है। किन्तु यह ज़रूरी है कि दिन-रात में केवल एक ही बार भोजन किया जाय। सोमवार के व्रत में शिव-पार्वती का पूजन होता है। कार्तिक-स्नान करने वाली स्त्रियाँ सोमवार को जो कथा कहती हैं, वह सोमवती अमावस्या से सम्बन्ध रखती हैं।

इसके सम्बन्ध में यह प्रथा है कि भले घर की स्त्रियां सोमवती अमावस्या को पीपल के या तुलसी के वृक्ष की एक सौ आठ परिक्रमा करती हैं। सौभाग्यवती स्त्रियां संपूर्ण श्रृङ्गार करके तुलसी को परिक्रमा देती हुई, कोई पदार्थ, जैसे लड्डू, छुहारा, आम, अमरूद इत्यादि फल या नगद पैसा, एक-एक प्रत्येक परिक्रमा के अन्त में तुलसी या पीपल के वृक्ष पर रखती जाती हैं। यह परिक्रमाओं की गणना की विधि है। पुनः वह पदार्थ ब्राह्मणों में वितरण कर दिया जाता है। परिक्रमा कर चुकने के बाद धोबिन की मांग सिन्दूर से भर कर उसके ललाट में बूंदा लगाया जाता है।

उसके आचल मे कुछ मिठाइ और पैसे डाल कर सौभाग्यवती उसके पैर पडती ह। तब धोबिन अपनी माग का सिदूर पैर पडने वाली की माग मे लगा देती है और अपने ललाट का बूदा भी लगा देती है। इसी को सुहाग देना कहते हैं। इसके उपलक्ष मे जो कथा कही जाती है वह इस प्रकार है —

कथा—एक घर मे मा-बेटी और बहू तीन स्त्रिया थी। उस घर मे प्राय एक साधु भीख मागने आया करता था। जब कभी बहू उसे भीख देने जाती, तब वह भीख लेकर उसे यह आशीर्वाद दिया करता था कि दूधो नहाओ पूतो फलो। परतु जब लडकी भीख देने जाती, तब साधु कहा करता था कि धम बढे बेटी गगा स्नान।

एक दिन लडकी ने अपनी माता से कहा कि जो साधु भीख लेने आता है वह हम दोनो को दो तरह से आशीर्वाद दिया करता ह। यह सुनकर माता ने एक दिन बाबा से प्रश्न किया कि आप लडकी को जो आशीर्वाद देते ह, उसका क्या आशय है ? तब साधु ने कहा कि इस लडकी का सौभाग्य खडित ह। इसी कारण म ऐसा कहता हू। इस पर माता ने साधु से कुछ उपाय पूछा। साधु ने कहा कि तुम्हारे गाव की जो सोमा नाम की धोबिन ह, उसके घर की यह लडकी टहल किया करे। यदि और कुछ न बन पडे, तो जहा उसके गधे बधते ह, उसी जगह को यह रोज झाड बुहार कर साफ कर दिया करे। वह पतिव्रता स्त्री है। उसके आशीर्वाद से इस लडकी का सौभाग्य अटल हो सकता है।

साधु यह सलाह देकर चला गया। वह लडकी उसी के दूसरे दिन से सोमा धोबिन के घर जा कर नित्य गधो की लीद उठा कर फेक आती और थान साफ करके चली आती थी। धोबी धोबिन दोनो को आश्चर्य था कि हमारे गधो की थान कौन साफ कर जाता ह। एक दिन यह रहस्य जानने के लिए धोबिन छिप कर बैठ रही। ज्यो ही लडकी गधे की लीद फेक चुकी और झाडू लेकर

झाड़ने लगी, त्योंही धोबिन ने उसका हाथ पकड़ लिया और उससे कहा कि तू भले घर की लड़की है, मेरी टहल करने क्यों आती है ? तब लड़की ने साधु की कही हुई सब बातें उसे सुनाई। सोमा धोबिन ने उसे आशीर्वाद देकर विदा किया। पुनः उसके घर जाकर उसकी माता से कहा कि जब इस लड़की की शादी हो तब फेरे (भाँवरें) पड़ने के समय मुझे बुला लेना। मैं उसको अपना सौभाग्य दूँगी।

कालान्तर से जब लड़की के विवाह का समय आया, तब उसकी माता ने सोमा धोबिन को निमन्त्रण दिया। सोमा अपने घर से लड़की के घर जाते समय अपने परिवार के लोगों से कह गई कि मेरी गैरहाजिरी में यदि मेरा पति मर जाय, तो जब तक मैं न आऊं, उसकी दाह-क्रिया न करना। जिस समय सोमा ने लड़की की मांग में अपनी मांग का सिन्दूर लगाया, उसी समय उसका पति मर गया। घर के लोगों ने विचारा कि यदि वह आ जायगी, तो अधिक विलाप-कलाप करेगी। संभव है कि पति के साथ सती होने को तैयार हो जाय। इसलिए यही उचित है कि उसके आने के पहले ही लाश को जला दिया जाय। इसी विचार से वे धोबी की लाश को रथी पर रख कर ले चले।

इधर लोग धोबी के शव को लिए हुए श्मशान की ओर जा रहे थे, उधर से सोमा घर को वापस आ रही थी। उसने पूछा कि यह क्या है और कहां लिये जा रहे हो ? लोगों ने कहा कि तेरे पति को जलाने के लिए जाते हैं। पास ही एक पीपल का पेड़ था। धोबिन ने अपने पति के शव को उसी जगह रखवा लिया। उसके हाथ में उस समय वेई (मिट्टी का पुरवा जो ब्याह के घर से उसे मिला था) थी। उसने उसको फोड़कर उसके एक सौ आठ टुकड़े किए। अपने पातिव्रत-धर्म का ध्यान और शिव-पार्वती का स्मरण करते हुए उसने पीपल के वृक्ष की एक सौ आठ परिक्रमा की। इसके बाद जब उसने अपनी पैंती

(तजनी) चीर कर अपना रक्त पति के शव पर छिडक दिया तब वह उठ बठा।

कहा जाता ह कि इसी घटना के बाद विवाह मे धोबिन से सुहाग के लिए जाने की प्रथा चली ह। कार्तिक स्नान के सम्बन्ध में स्त्रिया जो सोमवार को तुलसी या पीपल की परिक्रमा करती ह उसकी विधि इस प्रकार ह—पहले सोमवार को धान और पानी से परित्रमा की जाती ह दूसरे को दूध के पिड से तीसरे को वस्त्र से और चौथे को धातु के बतन और जेवर से। जिसको यह सब करने की गुजाइश नही होती, वे किसी भी चीज से परिक्रमा करके विधि पूरी करती ह।

३ मगलवार का व्रत—मगल को लाल चदन माला फूल गेहू गुड मिश्रित पकवान प्रिय ह। अडहुल के लाल फूल लाल वस्त्र और लाल चदन से उनकी पूजा की जाती ह। व्रती को दिन मे एक बार भोजन करना चाहिए। २१ सप्ताह तक यह व्रत करने से मगल दोष का नाश होता ह।

कथा—एक बुढिया थी। वह प्रत्येक मगल को व्रत किया करती थी। उसके पुत्र का नाम मगलिया था। मगल के दिन बुढिया न तो लीपती थी और न मिट्टी खनती थी। एक दिन मगल देवता साधु का वेश धारण कर उसके घर आये और आवाज लगाइ। बुढिया ने बाहर आकर जवाब दिया कि हमारा एक बालक ह। वह गाव मे खेलने चला गया ह। म गहस्थी का काम कर रही हू। क्या आज्ञा ह कहिए? तब साधु बोला कि मुझको बडी भूख लगी है। भोजन बनाना ह। इसके लिए तू थोडी सी जमीन लीप दे, तो तुझको बडा पुण्य होगा। यह सुनकर बुढिया ने जवाब दिया कि आज तो म मगल व्रती हू। इस कारण लीप तो नही सकती कहिए तो पानी छिडक कर चौका लगा दू। उसी जगह आप रसोइ बना ले।

साधु ने कहा कि म तो गोबर से लिपे हुए चौके मे रसोइ

बनाता हू। बुढिया ने कहा कि जमीन लीपने के सिवाय और जिस तरह से कहिए म आपकी सेवा करने को तयार हू। तब बाबा ने फिर कहा कि खूब सोच-समझ कर कहा जो कुछ भी म कहू, तुझे करना होगा। इस पर बुढिया ने तीन बार यह वचन दिया कि जो कुछ भी आप कहेगे, म करूगी। तब साधु बोला कि अपने लडके को बुलाकर औधा लिटा दे। उसी की पीठ पर म भोजन बनाऊगा। बाबा की बात सुनकर बुढिया चुप रह गइ। बाबा ने फिर कहा कि माइ! बुला ला लडके को, अब सोच विचार क्या करती ह?

बुढिया 'मगलिया' 'मगलिया' कह कर पुकारने लगी। थोडी देर मे लडका आ गया। बुढिया ने कहा कि जा तुझे बाबा बुलाता ह। लडके ने बाबा के पास जाकर पूछा—"क्या है महाराज?" बाबा ने कहा कि जा अपनी मा को बुला ला। बुढिया आइ तो बाबा ने उससे कहा कि तू ही लडके को लिटा दे और अगीठी लगा दे। बुढिया ने मगल देवता का स्मरण करते हुए लडके को औधा लिटा दिया और उसकी पीठ पर अगीठी लगा दी। फिर उसने बाबा से कहा कि अब आपको जो कुछ करना हो कीजिए, म जाकर अपना काम करूँगी।

साधु ने लडके की पीठ पर लगी हुइ अगीठी मे आग बनाइ और उसी पर भोजन बनाया। जब भोजन बन चुका, तब उसने बुढिया को बुलाकर कहा कि अब अपने लडके को बुला ला, वह भी भोग प्रसाद ले जाए। बुढिया बोली कि यह कैसे आश्चय की बात ह कि उसी की पीठ पर आपने आग जलाइ, और उसी को अब प्रसाद के लिए बुला रहे ह। क्या यह सम्भव है कि वह अब भी जीता बचा हो? कृपा करके अब तो आप मुझे उसका स्मरण भी न कराइए। आप भोग लगाइए और जहा जाना हो जाइए।

साधु के बहुत समझाने और आग्रह करने पर बुढिया ने ज्योही आवाज लगाइ त्योही लडका एक ओर से दौडता हुआ आ गया।

साधु ने लडके को प्रसाद दिया और कहा कि माइ! तेरा व्रत सफल ह। तेरे हृदय मे दया है और अपने इष्ट के प्रति अटल विश्वास तथा निष्ठा है। इस कारण तेरा कभी कोइ अनिष्ट नही हो सकता।

४ बुधवार का व्रत—बुधवार को शकरजी का पूजन करना चाहिए और एक बार खाना चाहिए। इस दिन हरी वस्तुओ का भोग विशेष फलदायक होता ह। हरी वस्तुओ का दान भी देना शुभ ह।

कथा—एक बनिया दूर दूर तक वाणिज्य-व्यापार करने जाया करता था। एक दिन बनिये की गरहाजिरी मे बुध के दिन उसकी स्त्री के गभ से एक सु दर बालक पैदा हुआ। बनिये को विदेश मे फिरते हुए बारह वष बीत गये। इस बीच उसने बहुत धन पदा किया। अपने परिश्रम से पैदा की हुइ सम्पत्ति को गाडियो मे भरकर वह घर की ओर चला। जब वह अपने गाव के समीप पहुचा तब एक जगह उसकी गाडिया अटक गइ। बनिये ने गाडी चलाने के लिए यथा-साध्य सब उपाय किये परन्तु बैल अपनी जगह से तिल भर भी नही हटे। अन्त मे उसने आसपास के गावो से बडे-बडे पडितो को बुलाकर उनसे उपाय पूछा। पडितो ने विचार कर कहा कि यदि बुधवार के दिन का उत्पन्न हुआ कोइ बालक गाडियो को हाथ लगा दे तो सभव है कि गाडिया चल जाय। निदान वह बनिया अपने ही गाव मे जाकर स्त्रियो से पूछने लगा। स्त्रियो ने कहा कि जैसा बालक चाहते हो वैसा तो तुम्हारे ही घर मे मौजूद है। उसी को ले जाओ और अपनी गाडी चला लो।

स्त्रियो के कहने से वह अपने घर की ओर चला गया। अपने द्वार पर पहुच कर उसने देखा कि एक सु दर बालक खेल रहा ह। उसने बालक से पूछा कि तुम किसके लडके हो? उसने उसी का नाम बतला दिया। तब बनिया बोला कि मै ही तुम्हारा

पिता हूं। मेरी गाड़ियां अटक गई हैं, उन्हें चल कर हाथ लगा दो। लड़का तुरन्त पिता के साथ चला गया। उसने ज्योंही गाड़ियों में हाथ लगाया, त्योंही गाड़ियाँ चलने लगीं।

घर जाकर बनिये ने बड़ी खुशी मनाई। लड़के के सब संस्कार कराये और बहुत-सा दान-पुण्य किया। तभी से यह प्रसिद्ध है कि बुधवार का जन्मा हुआ लड़का बड़ा प्रतापी और बुद्धिमान् होता है। जो काम पिता से नहीं बन पड़ता, उसे पुत्र पूरा कर देता है। कहा जाता है कि उसी समय से स्त्रियों में बुधवार का व्रत रहने की परिपाटी चली है।

५. *बृहस्पतिवार का व्रत*—इस दिन बृहस्पतेश्वर महादेव की पूजा होती है। पीला फूल, पीला चन्दन, पीला फल, पीली दाल से उनकी पूजा होती है। पीली वस्तुओं का दान शुभ है। क्षौर कर्म निषिद्ध है।

कथा—एक बड़ा धनवान साहूकार था। उसकी स्त्री बड़ी कंजूस थी। कभी दान-पुण्य नहीं करती थी। एक बृहस्पतिवार के दिन एक साधु उसके द्वार पर भिक्षा मांगने आया। उस समय वह अपने घर का आंगन लीप रही थी। साधु ने आवाज लगाई, पर उसे उसने कुछ नहीं दिया। साधु चला गया। दूसरे दिन साधु फिर आया। उस दिन स्त्री लड़के को खिला रही थी। इसलिए उसे उस दिन भी उसने कुछ नहीं दिया। साधु बेचारा फिर चला गया। तीसरे दिन भी उसने साधु को टाल देना चाहा। तब साधु ने उससे पूछा कि क्या किसी समय तुमको फुरसत नहीं रहती? यदि ऐसा हो जाय कि तुमको हमेशा फुरसत रहे, तब तो तुम मुझको दक्षिणा दे सकोगी? स्त्री बोली कि यदि ऐसा हो जाय तो आपकी बड़ी कृपा होगी। बाबा ने कहा कि तब तुम मेरा कहना करो। बृहस्पतिवार के दिन सब घर का कूड़ा झाड़ कर गाय-भैंसों की थान में लगा दिया करो। फिर सिर से स्नान किया करो और अपने घर वालों से कह दो कि वे लोग बृहस्पतिवार को अवश्य

बाल बनवाया कर। तुम जब रसोइ बनाया करो तब सिद्ध हुए सब पदाथ चूल्हे के सामने न रख कर चूल्हे के पीछे रखा करो। और शाम को कुछ देर के बाद दिया जगाया करो। इन सब कामो को लगातार चार बृहस्पतिवार करने से इश्वर चाहेगा तो तुमको फिर कोइ काम करने का न रहेगा काफी अवकाश रहा करेगा। परन्तु मझे दक्षिणा दिया करना। स्त्री ने कहा कि यदि आपकी बताइ तरकीब से मझको काफी अवकाश मिला तो अवश्य दक्षिणा दूगी।

बाबा विधि बतला कर चला गया। साहूकारिन उसके कहे अनुसार सब काम करने लगी। कुछ दिनो के बाद उसकी यह दशा हो गइ कि उसके घर जो धन धान्य का ढेर लगा रहता था वह समाप्त हो गया और उसे खाने पीने के भी लाले पड गये। कुछ दिनो बाद फिर वही साधु आया और उसने पूववत आवाज लगाइ। साहूकारिन तुरन्त बाहर दोडी आइ और बाबाजी के पैरो पर गिर कर बोली कि आपने कैसी विधि बताइ। अब तो मुझे खाने को भी अन्न नही मिलता। तुमको दक्षिणा द तो कहा से दू?

बाबा ने कहा कि जब तुम्हारे घर म सब कुछ था तब भी तुम दक्षिणा नही देती थी। अब तुमको काफी अवकाश ह तब भी कुछ नही देती। अब क्या चाहती हो सो कहो? तब स्त्री ने हाथ जोडकर प्रार्थना की ओर कहा कि मुझे आप ऐसी युक्ति बताइए जिससे मेरी दशा फिर जसी की तसी हो जाय। अब म वचन देती हू कि आप जो उपदेश देगे उसी का अनुसरण करूगी। तब साधु ने कहा कि अपने परवालों से कह दो कि वे गुरुवार व बुधवार को बाल नबनाया करे। तुम भी सूर्योदय के पूव सोकर उठना घर मे खूब सफाइ रखना सध्या को ठीक समय पर दिया जलाना रसोइ बना कर चूल्हे के सामने रखना भूखे प्यासे को अन्न जल देना और बहन भानजे को उचित दान मान से सतुष्ट रखना।

११

इतना कहकर साधु चला गया। स्त्री साधु के आदेशानुसार रहने लगी। इससे थोड़े ही दिनों में उसका भण्डार भरपूर हो गया।

६. *शुक्रवार का व्रत*--इस दिन के इष्ट शुक्राचार्य हैं। इसकी विधि प्रदोष के समान है।

कथा—एक था प्रधान (कायस्थ) का लड़का और एक था साहूकर का लड़का। दोनों में परस्पर बड़ी मित्रता थी। प्रधान के लड़के की स्त्री घर में थी, परन्तु साहूकार के लड़के की स्त्री का गौना नहीं हुआ था। उसकी स्त्री अपने पिता के घर थी। दिन भर दोनों मित्र साथ-साथ रहते। रात्र को जब एक दूसरे से अलग हो कर अपने-अपने घरों को जाने लगते, तब प्रधान का लड़का अपने मित्र से कहा करता कि हम तो घर जा कर आराम से सोयेंगे। तुम भी घर जा कर पड़ रहना।

एक दिन साहूकार के लड़के ने मित्र से पूछा कि तुम जो यह रोज कहा करते हो कि हम घर जाकर सो रहेंगे, तुम घर जाकर पड़ रहना; इसका क्या मतलब है? तब प्रधान का लड़का बोला कि मैं जो कुछ कहता हूँ, बहुत ठीक कहता हूं। मैं जब बाहर से घर जाता हूं, तब मेरे सोने के कोठे में दिया जलता हुआ मिलता है। स्त्री ब्यालू का थाल लगाये, पान बनाये, सेज बिछाये, हमारी प्रतीक्षा करती रहती है। वह अति प्रेम से मेरा स्वागत करती है। मेरे पैर धोकर ब्यालू परोसती है। इस प्रकार मैं सुख से सोकर रात्रि बिताता हूं। पर जब तुम घर जाओगे और ब्यालू के लिए कहोगे, तब तुम्हारी माँ-बहिन और भावज वगैरह कोई तुमको ब्यालू दे देंगी। ब्यालू करके तुम किसी कोने में पड़ कर सो रहोगे। सबेरे झटपट उठोगे और काम में लग जाओगे। इस प्रकार हमारे तुम्हारे रात्रि गुजारने में बहुत अन्तर है।

मित्र की बातें सुनकर साहूकार के लड़के को बात लग गई। उसने भी अपनी स्त्री को लाने का विचार किया और घर आकर

ससुराल जाने की तैयारी करने लगा। घर के लोगो ने समझाया कि अभी द्विरागमन का समय नही ह। शुत्र का उदय होने पर जाना और विदा करा लाना। परन्तु लडके ने किसी की बात नही मानी। वह ससुराल चला गया।

दामाद को सहसा आया देखकर ससुराल वालो को आश्चय हुआ। उन्होने उससे आने का कारण पूछा। लडके ने जवाब दिया कि म विदा कराने आया हू। इस पर वहा भी सब लोगो ने उसे समझाया कि इस तरह विदा नही होती। आपको सगुन-साइत से आना चाहिए। लडका राजी नही हुआ। तब उन लोगो ने लाचार होकर लडकी को उसके साथ भेज दिया।

कुछ दूर चलने पर सर्योदय होते ही शुत्र देवता मनुष्य के रूप मे साहूकार के लडके के सामने आ गए। वह रास्ता रोक कर खडे हो गए और पूछा कि स्त्री चुरा कर कहा लिए जाता ह ? लडके ने जवाब दिया कि अपनी ब्याही को विदा कराकर लिये जाता हू इसमे चोरी की कौन सी बात है ? तब शुत्र-देवता ने कहा कि यह तेरी ब्याही नही मेरी ब्याही ह। मेरी आज्ञा के बिना ही तू लिवाये जाता ह ! यह चोरी नही तो और क्या है ? इस बात से साहूकार का लडका बहुत नाराज हुआ। परन्तु शुक्र-देवता ने स्त्री का हाथ पकड लिया। इस पर दोनो मे झगडा हो गया। एक कहता था मेरी ब्याही ह दूसरा कहता था तेरी नही मेरी ब्याही ह। वे दोनो इसी तरह झगडते हुए पास के एक गाव मे चले गये। उन्होने वहा लोगो से पचायत करने के लिए कहा। इस पर गाव के मखिया पच इकटठे हुए। एक प्रवीण पडित भी उन पचो मे था।

पचो ने बनिए के लडके का बयान ले कर शुक्र देवता का बयान लिया। उन्होने कहा कि सनातन धम के माननेवाली सम्पूण आय-सतान मे यह परिपाटी ह कि देव उठ जाने पर शुक्र का उदय होने के पश्चात ही कोइ शुभ अनुष्ठान करते ह। द्विरा-

गमन की विदा तो शुक्र के अस्त में होती ही नही। विवाह के बाद जब तक द्विरागमन न हो जाय तब तक स्त्री मेरी ब्याही मानी जाती है। मैं शुक्र देवता हूं। इसलिए यह स्त्री इसकी नही अभी मेरी है। यह सुन कर पंचों ने शुक्र देवता के ही पक्ष में फैसला किया। उन्होंने कहा कि तुम इस लडकी को इसके बाप के घर वापस कर आओ। शुक्र का उदय होने पर विदा करा कर ले जाना। तब साहूकार का लडका लाचार होकर स्त्री को फिर ससुराल वापस छोड कर घर चला गया। फिर शुक्र का उदय होने पर विधिपूर्वक वह विदा करा ले गए। तब पति पत्नी दोनों आनन्दपूर्वक रहने लगे।

७ *शनिवार का व्रत*—इस दिन शनि की पूजा होती है। काला तिल काला वस्त्र लोहा तेल काली मूंग शनि को विशेष प्रिय है। शनि का कष्ट दूर करने के लिए यह व्रत किया जाता है। शनि स्तोत्र का पाठ विशेष हितकर है।

कथा—यादव कुल-श्रेष्ठ श्रीकृष्ण की श्रेष्ठ पटरानी का नाम रुक्मिणी था। रुक्मिणी की एक छोटी बहन बडी ही कर्कशा और दरिद्र प्रकृति की स्त्री थी। इसी कारण कोई राजकुमार उसके साथ [illegible] करता था। एक दिन रुक्मिणी ने उसके विवाह के लिए श्रीकृष्ण से प्रार्थना की।

श्रीकृष्ण ने कुलक्ष्मी का विवाह एक मुनि के साथ करा दिया। मुनिवर ज्ञानी ध्यानी साधु महात्मा थे। रात दिन वह भजन पूजन में लगे रहते थे। इस कारण स्त्री को उनके साथ झगडने का मौका ही नही मिलता था। परन्तु जब मुनि भगवान का पूजन कर के संध्या-सबेरे शंख बजाते थे तब उनकी स्त्री धाड मार कर रोती थी। इस बात से मुनि को बडा दुःख होता था।

एक दिन मुनि ने स्त्री से पूछा कि तुमको क्या अच्छा लगता है? जिस बात में तुम्हारा जी लगे उसी के अनुकूल मैं तुम्हारा प्रबंध कर दूं। वह बोली कि जितने काम तुम करते हो, उन सब से

मुझ घृणा है। पित पूजा देवार्चन, दान पुण्य होम जप तथा यज्ञादि कर्मों से मुझको बडी घणा है। मुझे तो ऐसी जगह अच्छी लगती ह जहा खूब कलह होता हो। जीवो को उत्पीडित और म नाग्न देख कर मुझे बडी प्रसन्नता होती ह। तब मुनि ने कहा कि अच्छा मेरे साथ चलो म तुमको एसे ही स्थान पर पहुचाये देता हू। वहा तुम्हारा जी लगेगा। तब स्त्री मुनि के साथ साथ चली। मुनि ने सघन जङ्गल मे एक बडा ऊचा पीपल का पेड देखकर स्त्री को उसी पर बिठा दिया और अपने आश्रम को चले गये।

आधी रात को कुलक्ष्मी रोने लगी। उस समय रुक्मिणी श्रीकृष्ण को ब्यालू करा रही थी। बहिन का रोना सुनकर उन्होने उलाहना देते हुए कहा कि आपने अच्छी जगह मेरी बहन की शादी कराइ। वह वनवासी मुनि उसे न जाने कहा जङ्गल मे छोड आया है। सुनिए वह इस समय कैसा विलाप कर रही है। तब भगवान ने कहा कि तुम्हारी बहन पूरी ककाली ह। वह मुनि के भजन पूजन मे बाधा देती होगी। इसी कारण मुनि ने उसे निकाल दिया होगा। ससार मे भले के साथी सब होते ह बुरे का साथी कोइ नही होता। तब रुक्मिणी ने फिर प्राथना की कि अब उसका निवाह कसे हो ? इसका कुछ उपाय कीजिए। रुक्मिणी की बात मानकर श्रीकृष्ण उसी समय उस स्थान पर गए जहा कुलक्ष्मी पीपल के पेड पर बठी रो रही थी। उन्होने उससे पूछा कि इस समय यहा बैठी क्यो रो रही हो ? वह बोली कि मुनि मुझको बिठा कर चले गये ह। यहा अकेली बठे बठे जी घबडाता ह। इसी कारण रोती हू। श्रीकृष्ण ने कहा कि तुम मुनि को हरान परेशान करती होगी उनके भजन पूजन मे बाधा देती होगी इसी कारण उन्होने तुमको त्याग दिया ह। म अब मुनि को तो दबा नही सकता। अगर तुम इस बात पर राजी हो जाओ कि अब कभी अपने पति के प्रतिकूल आचरण न करोगी तो कुछ उपाय हो सकता ह। यह सुनकर वह बोली कि म आपकी

आज्ञा मानने को तयार हू पर क्या करू, अपने स्वभाव से लाचार हू।

इस पर श्रीकृष्ण ने कहा कि ऐसी कलह कारिणी के लिए एकात वास से अच्छा और कोइ उपाय नही हो सकता। इसलिए मेरी आज्ञा ह कि अब तुम सदव इसी वक्ष पर वास करो। इसमे सम्पूण देवताओ का वास ह। मेरी अद्धाङ्गिनी लक्ष्मी का भी इसी मे निवास ह। शनिवार के दिन जो कोइ सूर्योदय के पूव पीपल के वक्ष की पूजा करेगा वह तो लक्ष्मीजी को पहुचेगा, परन्तु जो सूर्योदय के बाद पीपल का पूजन करेगा वह पूजन तुमको अर्पित होगा। पुन जिनकी पूजा तुमको मिलेगी उन्ही के घर मे तुम्हारा वास भी होगा।

६२ श्रीसत्यनारायण व्रत

श्री सत्यनारायण व्रत किसी दिन भी किया जा सकता ह। इसकी विधि यह ह पत्तो के खभ, आम के पत्तो के बदनवार, पच पल्लव सुवणमूर्ति (भगवान की प्रतिमा—खासकर शालि ग्राम शिला), कलश यज्ञोपवीत पचरत्न (मोती, मूगा, सोना, चादी ताबा) ग्रहो की स्थापना के लिए लाल कपडा (खारुआ या भगवान के आसान के लिए स्वेत वस्त्र), चावल, चदन, केशर, अबीर, गुलाल, धूप, पुष्प, तुलसी दल, नारियल, सुपारी अनेक प्रकार के फल, माला, पञ्चामत (दूध, दही, घी, शहद और शक्कर), पुण्याहवाचन कलश, भगवदथ पीठम (पीढा), दक्षिणा के लिए द्रव्य, नवेद्य, प्रसाद के लिए पजीरी, अठवाइ, केला या ऋतु के जो फल मिल सके।

श्रीसत्यदेव के पूजन का व्रती जिस दिन कथा सुनना चाहे उस दिन सबेरे स्नान करके श्रीसूय भगवान को हाथ जोडे। इसके बाद लाल रगवाले स्वण के रथ मे बठे हुए लोक को प्रकाश देने वाले श्रीसूय भगवान के अतर्यामी श्रीकृष्ण भगवान को जानकर

उनको श्रद्धापूर्वक नमस्कार करे और चदन, चावल धूप, दीपादि से सूयदेव की पूजा करके इस प्रकार प्राथना करे—हे सब ग्रहो के स्वामी तेज के अधिष्ठाता, महान तेजवान ! राजाओ के निमित्त बडो के निमित्त, इद्र की इद्रियो के निमित्त और सम्पूण ग्रहो की शाति के निमित्त म श्रीसत्यदेव का पूजन करना चाहता हू अत मे आपके द्वारा सबको पत्र पुष्प जो कुछ है, श्रद्धापूवक अपण करता हू। स्वीकार कीजिए।

पुन चंद्रमा, मगल बुध बहस्पति, शुक्र शनि, राहु, केतु आदि सब ग्रहो के अतर्यामि श्री सत्यदेव को जानकर उन सबको एक एक करके नमस्कार करे। तदनतर सवभूतो के स्वामी काल के भी महाराज, सदव कल्याणकारी शिवजी की आत्मा मे विष्णु भगवान को स्थित जानकर नमस्कार और प्राथना करे कि श्री देवी, लीलादेवी और भूदेवी आपकी पत्नी ह दिन रात दोनो पखवाडे ह नक्षत्र तुम्हारे स्वरूप ह अश्विनीकुमार तुम्हारे तेज से प्रकाशित ह सो हे विष्णुदेव ! कृपा करके मुझको वैकुण्ठलोक का वास दो, मुझे दु खो से मुक्त करो। हे लक्ष्मी के अतर्यामी श्रीमन्नारायण ! म आपको नमस्कार करता हू।

सबेरे इस प्रकार व्रत का सकल्प करके व्रती सारे दिन निराहार रहकर विष्णु भगवान का ध्यान या गुण गान करता रहे। सायकाल को पूजन का विधान करे। वस्तुत सक्राति, पूणमासी अमावस्या या एकादशी मे से किसी दिन सत्यदेव का पूजन अति उत्तम माना गया ह। वसे जिस दिन का सकल्प किया हो उसी दिन कर सकता ह। दिन भर व्रत करने के बाद सायकाल के समय स्नान करके पूजन के स्थान मे आकर आसन पर बैठकर आचमन करे तथा पवित्री धारण करे। तब श्रीगणेशजी के अतर्यामी श्रीमन्नारायण, गौरी के अतर्यामी श्रीहर, वरुण के अतर्यामी श्री विष्णु आदि देवताओ की प्रतिष्ठा और आह्वान करके सकल्प करे—आज इस गोत्र और इस नाम वाला म (जो नाम हो) सब पापो

के नाश के लिए,जो आपत्तियो की शांति के लिए और सब मनो-
रथ सिद्धि के लिए सब सामग्री उपस्थित ह, इससे आपका पूजन
करता हू। पुन गौरी, गणेश, वरुण देवता आदि पाचो लोकपालो
ओर नवग्रह आदि का षोडशोपचार पूजन करके प्राथना करे—
म श्रीसत्यदेव का पूजन और कथा श्रवण करता हू, सो आप
सिद्धि प्रदान करे। तदनतर अघपाद्य आचमन, स्नान, चदन,
चावल धूप दीप नवेद्य, आचमनीय, जल, सुगधित ताबूल,
फल, दक्षिणा आदि युक्त विधिवत मन्त्रो सहित पूजन के पूव
पुष्प हाथ मे लेकर श्रीसत्यनारायण का ध्यान करे। इस प्रकार
सत्यदेव का पूजन करके हाथो मे पुष्प लेकर प्राथना करके श्री-
सत्यदेव पर पष्प छोडे। फिर ध्यानपूवक कथा श्रवण करे।

कथा—नैमिषारण्य मे एक समय शौनकादि ऋषियो ने
श्रीसूतजी पौराणिक से कहा कि जिस व्रत या तप के प्रभाव से
मनुष्य मनोवाछित फल पा सकता ह उसका विधिवत वणन
कीजिए। श्रीसूत जी बोले कि एक बार इसी प्रकार नारदजी के
प्रश्न करने पर श्रीविष्ण भगवान ने उनको जो व्रत बताया था,
उसी को म तुमसे कहता हू, सावधान होकर सुनिए —

कथा—किसी समय काशीपुरी मे शतानन्द नामक एक अति-
दरिद्र ब्राह्मण रहता था। वह भूख प्यास से व्याकुल हो पथ्वी
पर भीख मागता फिरता था । एक दिन श्रीविष्णु देवता ने
वद्ध ब्राह्मण के रूप मे प्रकट होकर शतानन्द को सत्यनारायण
व्रत का सविस्तार विधान बताया और अन्तर्द्धान हो गये।

शतानन्द, अपने मन मे सत्यनारायण का व्रत करना निश्चय
करके घर गया। इसी चिंता मे उसे सारी रात नीद नही आई।
सबेरा होते ही वह सत्यनारायण के व्रत का अनुष्ठान करके भिक्षा
के लिए गया, तो उस दिन उसे बहुत धन धान्य भिक्षा मे मिला।
सध्या को घर पहुचकर उसने विधिपूवक सत्यदेव का पूजन
किया। सत्यनारायण की कृपा से वह थोडे ही दिनो मे ऐश्वय्य-

वान हो गया । वह जब तक जीवित रहा, प्रतिमास सत्यदव का पूजन और व्रत करता रहा । अत मे वह विष्णुलोक को गया।

ऋषियो ने पूछा कि शतान द के बाद फिर किसने यह व्रत किया ? इसके उत्तर मे उन्होने कहा कि सूतजी ! शतान द वभववान होकर एक समय ब धु-बा धव समेत कथा सुन रहे थे। उसी समय एक लकडहारा भखा प्यासा वहा जा पहुचा। उसके पूछने पर ब्राह्मण ने कहा कि यह सत्यनारायण का व्रत मना वाछित फल का देनेवाला ह । म पहले बहुत दरिद्र था। इसी व्रत के करने से मुझे यह सब ऐश्वय प्राप्त हुआ ह । यह सुनकर लकडी बेचनेवाला बहुत प्रसन्न हुआ। वह प्रसाद पाकर और जल पीकर चला गया।

श्रीसत्यदेव का मन मे स्मरण करता हुआ वह लकडी बेचने बाजार मे गया। उस दिन उसे लकडियो का दुगुना मूल्य मिला। उसने उन्ही पसो से केले दूध दही शक्कर आदि पूजन की सामग्री मोल ली और घर चला गया । घर मे उसने अपने भाइ ब धु और पास पडोसी के लोगो को एकत्र करके विधिपूवक सत्यनारायण का पूजन किया और श्रीसत्यदेव की कृपा से बडा धनवान और ऐश्वय्यवान हो गया। उसने यावज्जीवन इस लोक मे सब तरह के सुख पाये और मरने पर सत्यलोक मे गया। इसके बाद सूतजी ने एक कथा और भी कही। उ होने कहा कि प्राचीन समय मे उल्कामुख नाम का एक राजा था। वह बडा ही सत्यवादी और जिते द्रिय था। उसकी रानी भी बडी धमनिष्ठ थी। एक समय राजा रानी समेत भद्रशीला नदीके किनारे श्रीसत्य नारायण की कथा सुन रहे थे। उसी समय एक बनिया वहा पहुचा। बनिये की नौका मे असख्य रत्न और अनेक प्रकार के मूल्यवान पदाथ भरे थे। नदी के किनारे नाव लगाकर वह पूजा की जगह पर गया। वहा का चमत्कार देखकर उसने राजा से उसके सबध मे पूछा। राजा ने उत्तर दिया कि हम अतुल तेजवान

विष्णु भगवान का पूजन कर रहे है। यह व्रत मनुष्य को मनोवांछित फल देने वाला है। राजा की ऐसी वाणी सुनकर बनिया अपने घर गया।

अपने घर जाकर उसने अपनी स्त्री से उक्त व्रत का सारा हाल कहा और यह भी सकल्प किया कि जब मेरे सन्तान होगी, तब मै यह व्रत करूंगा। उसकी स्त्री का नाम लीलावती था। वह कुछ दिनो बाद गर्भवती हुई। दस महीने पूरे होने पर उसके एक कन्या पैदा हुई। वह कन्या चन्द्रमा की कलाओं की भांति दिन प्रतिदिन बढने लगी। इस कारण उसका नाम कलावती रखा गया। एक दिन लीलावती ने पति से कहा कि पहले जिस व्रत का सकल्प किया था, उसे अब तक आपने नहीं किया, इसका क्या कारण है? तब बनिये ने कहा कि कन्या के विवाह के समय व्रत करूंगा। यह कहकर बनिया अपने काम धन्धे मे लग गया और कन्या दिन प्रतिदिन बडी होने लगी। कन्या को वय प्राप्त देखकर बनिये ने उत्तम वर की खोज मे जहां तहां दूत भेजे। उसके दूतो ने कंचनपुर नामक नगर मे एक बनिये का अति सुन्दर सुशील और गुणवान बालक देखा। उसीके साथ उसने सगाई कर दी और विधिपूर्वक उसके साथ विवाह कर दिया परन्तु फिर भी बनिये ने सकल्प किये हुए सत्यदेव के व्रत को नहीं किया, जिससे सत्यदेव उस पर अप्रसन्न हो गए।

कुछ दिनो बाद बनिया व्यापार के लिये बाहर चला गया। ससुर दामाद दोनो समुद्र के किनारे रत्नसारपुर मे व्यापार करने लगे। इसी बीच सत्यदेव ने कोप करके उनको शाप दिया। रत्नसारपुर के राजा का नाम चन्द्रकेतु था। दैवात उसके खजाने मे चोर घुसे और बहुत सा धन रत्न चुरा ले गये। राजा के सिपाहियो ने चोरो का पीछा किया। चोरो ने जब देखा कि सिपाहियो से बचना कठिन है, तब उन्होने राज कोष का सब धन उस जगह डाल दिया, जहां बनियो का डेरा था और

भाग गये। राजदूत चोरो को खोजते हुए उसी जगह जा पहुचे और बनियो को चोर समझकर उन्होंने पकड लिया। जब राजा के पास खबर पहची कि दो चोर पकडे गये ह तब उसने हुक्म दिया कि दोनो चोर कारागार मे डाल दिये जाय। बनियो ने अपनी सफाइ पेश करने के लिए बहुत कुछ कहा पर सत्यदेव के कोप के कारण किसी ने कुछ नही सुना। राजा ने उनका सब धन अपने खजाने मे रखवा लिया।

इधर लीलावती आर कलावती मा बेटी दोनो पर भी बडी विपत्ति पडी। एक दिन कलावती अत्यत भख प्यास से व्याकुल एक दव मदिर मे चली गयी। वहा सत्यनारायण की कथा हो रही थी। वहा बठकर वह कथा सुनने लगी। प्रसाद लेकर जब वह घर आइ तब कुछ रात्रि हो गइ। माता के पूछने पर उसने सब वात कह दी। उसकी बात सुनकर लीलावती भी व्रत करने के लिये तयार हुइ। उसने बधु बाधव समेत श्रद्धापूवक कथा सनी और विनीत भाव से प्राथना की और कहा कि मेरे पति ने सकल्प करके जा व्रत नही किया उसी से आप अप्रसन्न हुए थे। अव कृपा करके उनका अपराध क्षमा कीजिए। लीलावती की इस विनम्र प्राथना पर सत्य नारायण प्रसन्न हो गये।

सत्यदेव ने स्वप्न मे राजा चद्रकेतु को दशन देकर कहा कि सबेरा होते ही दोनो बनियो को कारागार से छोड दो और उनका सारा धन दे दो नही तो पुत्र पौत्र समेत तुम्हारा सारा राज नष्ट कर दूगा। इतना कहकर सत्यदेव अन्तर्धान हो गये। सबेरे राजा की आज्ञा से बनियो की बेडिया काट दी गइ आर उन्हे मुक्त कर दिया गया।

राजा से बिदा होकर दोनो बनिये ब्राह्मणो को धन बाटते हुए आनद पूवक घर की ओर चले। वे थोडी ही दूर गये होगे कि सत्यनारायण सयासी के रूप मे उनके पास आकर बोले कि

तुम्हारी नौकाओ मे क्या है ? इसके उत्तर म बनिये ने हसते हुए कहा कि इन नौकाओ मे लता पत्रो के सिवाय और कुछ भी नही ह। यह सुनकर सयासी ने कहा कि तुम्हारा वचन सत्य हो। इतना कहकर सयासी वहा से चला गया ओर थोडी दूर जाकर ठहर गया। दण्डी के चले जाने पर बनिये शौचादि क्रिया के लिए नावो पर से उतरे। तब उहोन देखा कि दोनो नौकाए हलकी होकर ऊपर को उठ रही ह। यह देखकर उनको बडा आश्चय हुआ। उन्होने नौकाओ मे जाकर जो देखा तो वहा लता पत्र भरे हुए थे। यह देखकर बनिया तो बेहोश होकर गिर पडा, परन्तु उसके दामाद ने दत्तापूवक कहा कि इस प्रकार घबडाने की कोई बात नही ह। यह सब दण्डी स्वामी की करामात है चलकर उनसे प्राथना कीजिए तो उनकी कृपा से फिर सब जसे का तैसा हो जायगा। दामाद की बात मानकर बनिया दण्डी स्वामी के पास दौडा गया और उनके चरणो मे गिरकर भक्ति पूवक क्षमा मागी।

उसकी विनीत और भक्तिमय स्तुति सुनकर भगवान प्रसन्न हो गये और इच्छित वरदान देकर वे उसी जगह अतर्द्धान हो गये। बनियो ने नावो के पास आकर देखा तो वे धन रत्नो से परिपूण थी। तब उसने कहा कि भगवान सत्यदेव ने कृपा करके मुझे मनोवाछित वरदान दिया ह। अब म अवश्य भगवान का पूजन करूगा। तदनन्तर उसने उसी जगह पूजन किया और कथा सुनी। तब वह घर की ओर चला।

अपने नगर के पास पहुचकर उसने लीलावती के पास अपने आने का समाचार भेजा। उस समय लीलावती श्रीसत्यनारायण की कथा सुन रही थी। उसने पुत्री कलावती से कहा कि तुम्हारे पिता आ गये। शीघ्र ही कथा पूरी करके उनके स्वागत के लिए चलो। माता की ऐसी वाणी सुनकर कलावती तो इतनी प्रसन्न हुइ कि वह कथा का प्रसाद लेना भी भूल गइ और कथा पूरी होते ही

पिता और पति क स्वागत के लिए दौडी गइ। परन्तु ज्यो ही नदी के किनारे पहुची त्यो ही बनिये के दामाद की नौका जल मे डूब गइ। यह देखते ही बनिया हाय हाय करके छाती पीटने लगा और रोने लगा। लीलावती भी दामाद के शोक मे विलाप करने लगी। कलावती तो डूबे हुए पति के खडाऊ लेकर सती होने को उद्यत हुइ। उसी समय आकाशवाणी हुइ—हे वणिक ! तेरी कन्या सत्यदेव के प्रसाद का अनादर करके पति से मिलने के लिए दौडी आइ है। यदि वह जाकर प्रसाद ले आर फिर आए तो उसका पति जी उठेगा यह सुनते ही कलावती घर की ओर दौडी गइ ओर सत्यदेव का प्रसाद लेकर जब नदी के किनारे आइ, तब देखती क्या है कि उसके पति की नौका नदी के जल पर तर रही है।

बनिया भी यह देखकर प्रसन्न हो गया। वह बन्धु बान्धव समेत अपने घर गया और जब तक बनिया जीवित रहा प्रति पूणमासी अमावस्या अथवा सक्रान्ति को श्रीसत्यनारायण की कथा सुनता रहा।

उक्त कथा कहने के पश्चात श्रीसूतजी ने एक और कथा कही। उन्होंने कहा कि कोइ एक तुगध्वज नामक राजा था। वह प्रजापालन मे तत्पर एव महान प्रतिभाशाली था। एक बार वह वन मे शिकार खेलने गया। बहुत से जगली जानवरो को मार कर वह जब महल की ओर जा रहा था तब उसने देखा कि एक बरगद के पेड के नीचे बहुत-से गोप ग्वाल इकटठे होकर सत्य नारायण की कथा सुन रहे ह। राजा ने न तो सत्यदेव को नमस्कार किया न पूजन के पास गया। परन्तु गोपगण राजा को देखकर स्वय प्रसाद लेकर दौडे गये और राजा के सामने प्रसाद रख दिया। राजा ने प्रा. [illegible] करके महलोकी ओर चला गया। राज द्वार पर पहुचते ही उसे मालूम हुआ कि उसके पुत्र पौत्र, धन धान्यादि सब नष्ट हो गये ह। तब उसे ध्यान आया

कि मने सत्यनारायण के प्रसाद का अनादर किया ह। उसी के कारण इस दुख को प्राप्त हुआ हूँ।' यह सोचकर राजा वहा दौड़ा गया, जहा लोग पूजन कर रहे थे। उसने उन सब के साथ मिलकर श्रद्धा और भक्ति से सत्यदेव का पूजन कराकर प्रसाद पाया। फिर जो घर आया तो देखता क्या ह कि उनकी नष्ट हुइ सम्पत्ति पुन पूववत सम्पन्न ह और मत पुत्र पौत्रादि भी जी उठे ह। तब से वह राजा सदव समय समय पर श्री सत्यनारायण का व्रत करता रहा।

६३ दशारानी का व्रत

हमारे महर्षियो ने अपने अनुभव से यह सिद्ध किया ह कि मनुष्य अथवा किसी भी वस्तु की स्थिति का सहसा परिवतन किसी अलौकिक शक्ति द्वारा होना ह। उसी शक्ति का नाम दशा ह। जब मनुष्य की दशा अनुकूल होती ह, तब उसका कल्याण होता ह, जब प्रतिकूल दशा होती ह, अच्छा काम करने से भी बुरा प्रभाव पदा होता है। इसी दशा को दशा भगवती या दशारानी के नाम से सबोधन करके हमारे देश की स्त्रिया इसकी अनुकूलता के लिए इसका व्रत और पूजन करती ह तथा इसके प्रति श्रद्धा बढाने के लिए कथा भी कहती ह।

जब तुलसी के समान वक्षो मे, जो एक जगह से उखाडकर दूसरी जगह लगाया हुआ न हो, वरन् जहा उगे वहीं हो, बाल निकले कलोरी गाय बछडा जने, पहलौठी घोडी के बछेडा हो, स्त्री के प्रथम गभ से बालक उत्पन्न हो तब इन बातो का समाचार पाकर दशारानी के व्रत का सकल्प किया जाता ह। किन्तु यह शत आवश्यक है कि बच्चे जो पैदा हुए हो, अच्छी घडी में हुए हो। ऐसी स्थिति मे दशारानी का गडा लिया जाता है।

नौ सूत कच्चे धागे के और एक सूत व्रत रहनेवाली के

अचल के इस प्रकार दस सूत का एक गण्डा बनाकर उसमे गाठ लगाइ जाती ह। दिन भर व्रत रहने के बाद शाम को गडे की पूजा होती ह। नौ व्रत तक तो शाम को पूजा होती ह परन्तु दसवे व्रत मे मध्याह्न के पूव ही पूजा होती है। जिस दिन दशारानी का व्रत हो उस दिन जब तक पूजा न हो जाय, किसी को कोइ वस्तु यहा तक कि आग भी नही दी जाती। पूजा के पहले उस दिन किसी का स्वागत भी नही किया जाता।

एक नोकवाले पान पर च दन से दशारानी की प्रतिमा का आभास अकित किया जाता ह। पथ्वी पर चौक पूरकर उस पर पटा और पटा पर पान रखा जाता ह। पान के ऊपर गडे को दूध मे बोरकर रख दिया जाता ह। हल्दी और अक्षत् से उसकी पूजा होती ह और घी गुड बताशा आदि का भोग लगता ह। हवन के अ त मे कथा कही जाती ह। कथा हो चुकने पर पूजा की सामाग्री को गीली मिटटी के पिड मे रखकर मौन होकर उसे व्रतवाली भेटती है फिर आप ही उमे कुआ या नाल आदि जलाशय मे सिराकर तब पारण करती ह। पारण करते समय किसी से बोलना वर्जित ह। जितना पारण सामने परोस ले उसमे से कुछ छोडना भी नही चाहिये। थाली धोकर पी लेना चाहिये।

पहली कथा—एक घर मे कोइ सास-बहू थी। बहू का पति विदेश गया हुआ था। एक दिन सास ने बहू से गाव मे जाकर आग लाने और भोजन बनाने के लिए कहा। वह गाव मे आग लेने गइ तब किसी ने उसको आग नही दी और कहा कि जब तक दशारानी की पूजा न हो जायगी आग न मिलेगी। बहू बेचारी खाली हाथ घर आइ। जब सास ने उससे पूछा तब बहू ने कण्डा उसके सामने पटक दिया और कहा कि गाव भर मे दशारानी की पूजा ह इसलिए कोई आग नही देता।

शाम को सास आग लेने के लिए गाव मे गइ तब स्त्रियो ने उसे स्वागतपूवक बिठाया और कहा कि सबेरे बहू आइ थी परन्तु

हमारे यहां पूजा नहीं हुई थी, इसी कारण आग नहीं दे सकी। सास आग लेकर अपने घर के दरवाजे तक पहुंची ही थी कि एक व्यक्ति बछवा लिये आया और उसके पीछे ब्याई कलोरी गाय आती दिखाई दी। उस स्त्री ने उससे पूछा कि यह गाय क्या पहलौठी ब्याई है? आदमी ने कहा—"हां।" उसने फिर पूछा कि बछवा है या बछिया? उसने जवाब दिया कि बछवा है। सास ने घर में जाकर बहू से कहा:—आओ, हम तुम भी दशारानी के गंडे लें और व्रत रहें। दोनों ने गंडे लिये। सबेरे से व्रत आरम्भ किया। नौ व्रत पूरे हो चुकने के बाद दसवें दिन गंडे की पूजा होती थी। सास-बहू दोनों ने मिलकर गोल-गोल बेले हुए, दस-दस अर्थात् कुल बीस फरे बनाये। इक्कीसवां एक बड़ा फरा गाय को दिया। पूजन करने के बाद सास-बहू दोनों पारण करने बैठीं।

उसी समय बुढ़िया का लड़का विदेश से आ गया। उसने दरवाजे से आवाज लगाई। सुनकर मां ने मन में कहा कि क्या हरज है, उसे जरा देर बाहर ठहरने दो, मैं पारण कर चुकूंगी, तब किवाड़ खोल दूंगी। परन्तु बहू को रुकने का साहस नहीं हुआ। अपनी थाली का अन्न इधर-उधर करके झट पानी पीकर वह उठ खड़ी हुई। उसने जाकर किवाड़ खोले। पति ने उससे पूछा कि माता कहां है? स्त्री ने कहा कि वह तो अभी पारण कर रही हैं। तब पति बोला कि मैं तेरे हाथ का जल अभी नहीं पिऊंगा, मैं बारह बरस में आया हूं। इतने दिनों तक न जाने तू कैसी रही। माता आयेगी, वह जल लायेगी, तब जल पिऊंगा। यह सुनकर स्त्री चुपचाप बैठ रही।

माता पारण करनेके बाद जब अपनी थाली धोकर पी चुकी, तब वह लड़के के पास गई। लड़के ने सादर पैर छुए। माता उसे आशीर्वाद देती हुई भीतर घर में लिवा ले गई। माता ने थाली परोसकर रखी। बेटा भोजन करने बैठा गया। उसने हाथ में प्रथम ग्रास लिया ही था कि फरों के वे टुकड़े जो बहू ने अपनी

थाली से फेंक दिये थे, आपसे आप उचककर उसके सामने आने लगे। उसने मा से पूछा—'यह सब क्या तमाशा है' ? मा बोली "म क्या जानू बहू जाने'। यह सुनते ही लडका आग बबूला हो गया। वह बोला—"ऐसी बहू मेरे किस काम की, जिसके चरित्र की तू साक्षी नही ह। उसको अभी निकाल बाहर करो। यदि वह घर मे रहेगी तो म घर मे न रहूगा।"

माता ने पुत्र को व्रत के पारण का सब हाल बताकर हर तरह से समझाया परन्तु उसने एक भी न मानी। वह यही कहता रहा कि उसे निकाल बाहर करो तभी म घर मे रहूगा। मा ने सोचा बहू को थोडी देर के लिए बाहर कर देती हू, इतने मे लडके का गुस्सा शान्त पड जायगा। उसकी बात रह जायगी, तब फिर उसे म डाल लूगी। उसने बहू से कहा—"देहरी के बाहर जाकर उसारे के नीचे खडी रह।" जब बहू ओरी के नीचे खडी हुइ तब उसारा बोला—'मुझे इतना भार छानी छप्पर का नही ह जितना तेरा ह दशारानी के विरोधी को म छाया नही दे सकता।" तब वह वहा से चलकर घिरौंची के पास गइ। घिरौंची बोली—"मुझसे हटकर खडी हो मुझे इतना भार घडो का नही है जितना तेरा ह। वह वहा से भी हटकर घूरे पर जाकर खडी हुइ। तब घूरा बोला— मुझे इतना भार सब कूडे का नही ह, जितना तेरा ह चल हटकर खडी हो।' इसी तरह वह जहा कही जाती वही से हटाइ जाती थी। इस कारण वह अपने जी मे अत्यन्त दुखी होकर जगल को भाग गइ। जगल मे भूखी प्यासी फिरती फिरती वह एक अधकुप मे गिर पडी। गिरी सही पर उसे चोट न आइ। वह नीचे जाकर बठ गइ।

उसी समय राजा नल उस जगल मे शिकार खेलते-खेलते वहा पहुँचे। उनके साथ के सब लोग बिछुड गये थे। वह प्यास के मारे भटकते हुए उसी कुएँ पर आये, जिसमे उक्त स्त्री गिरी हुइ थी। राजा नल के भाइ ने कुएँ मे लोटा डाला तो स्त्री ने उस

लोटे को पकड़ लिया। तब भाई ने राजा से कहा कि इस कुएँ में तो किसी ने लोटा पकड़ रक्खा है। तब राजा ने कुएँ की जगत पर जाकर कहा कि भाई! पुरुष है तो मेरे धर्म का भाई है, और यदि स्त्री है तो धर्म की बहन है। तुम जो कोई भी हो, बोलो। हम तुमको ऊपर निकाल लेंगे। स्त्री ने अवाज दी। इस पर राजा ने उसे कुएँ से बाहर निकलवा लिया और वह उसे हाथी पर बिठाकर अपनी राजधानी में ले आये।

महाराज को शिकारसे लौटकर महलोंकी ओर आते देखकर धावनों ने महारानी के पास जाकर खबर दी कि महाराज आ रहे हैं और एक रानी भी साथ ला रहे हैं। रानी अपने मन में बड़ी दु:खी हुई। वह सोच ही रही थी कि इसी बीच महाराज सामने आ पहुंचे। तब रानी ने हाथ जोड़कर विनय की—"महाराज! मुझसे ऐसी क्या बात बन पड़ी, जो आप मेरे रहते दूसरा विवाह कर लाये हैं।" इस पर नल ने हँसकर उत्तर दिया कि वह जो आई है, तुम्हारी सौत नहीं, ननद है, मेरी बहन है। तुमको उसके साथ मेरी सगी बहन-जैसा बर्ताव करना चाहिए। यह सुनते ही रानी का मुँह प्रसन्नता से कमल की तरह खिल उठा। उसने स्वगत कहा—"अब तक मैं ननद का सुख न जानती थी, अच्छा हुआ जो भाग्य से ननद आ गई।" राजा ने उसका नाम मुँहबोली बहन रखा और उसके लिए एक अलग महल बनवा दिया। उसी में वह आनन्द से रहने लगी। इसी प्रकार बहुत दिन बीत गये।

एक दिन राजा की एक घोड़ी ब्याई। तब राज-महल की स्त्रियां बधाई गाने लगीं। मुँहबोली बहन ने अपनी दासियों से कहा—"बाहर जाकर देखो तो सही, किस बात की बधाई बज रही है।" उन्होंने बाहर से आकर कहा—"महाराजकी घोड़ी अच्छी घड़ी में एक उत्तम बछेड़ा ब्याई है, उसी की बधाई गाई जा रही है।" उसने पूछा—"पहलौठी ब्याई है या दूसरी-तीसरी बार?" उन्होंने जवाब दिया—"ब्याई तो पहले ही है।" तब उसने रानी

के पास जाकर कहा—"आओ भावज! हम तुम दोनो दशारानी के गडे ले।" रानी ने पूछा—'किसके गंडे और कैसे गडे ह सो मुझे समझाओ।" तब वह बोली—'भाइ की एक घोडी पहले पहल बछेडा ब्याइ है। दशारानी के व्रत का नियम भी यही ह कि पहले-पहल जब गाय या घोडी या स्त्री का प्रसव सुने, तब गण्डा लेकर व्रत आरम्भ करे। नौ व्रत करने के बाद दसवे दिन गण्डे का पूजन करके विसजन करे।" इसी के साथ उसने पारण के पदाथ और नियम बताये। तब रानी बोली—"ननद! तुम्हारा व्रत तुमको फले। म पूडी और दूध की साढी खानेवाली रानी-महारानी भला बनफरा गोले की पपडी खाकर कसे रह सकती हू? ऐसा खाना खाय मेरी बला।"

स्त्री बोली—"भाभी! मुझे जो चाहो सो कह लो, परन्तु व्रत के सम्बन्ध मे कुछ भी मत कहो। म इसी व्रत के कारण मारी-मारी फिरी और तुम्हारे देश मे आइ हू।"तब रानी ने उदासीनता के साथ कहा— मुझे क्या पडी है। तुमको रुचे सो करो। म मना तो नही करती।' स्त्री ने श्रद्धा-पूवक गण्डा लिया। नौ दिन तक नो व्रत किये, नौ कथाएँ कही। दसवे दिन विधिवत पूजन किया, गोला फरा बनाये और शाम को पारण करने बैठी। उसी समय उसके पति को कुछ अनायास प्रेरणा-सी हुइ। वह अपनी माता से आज्ञा लेकर घर से बाहर हो गया।

घूमता फिरता वह राजा नल की राजधानी मे जा पहुचा और अपनी स्त्री का पता लगाने लगा। एक कुएँ पर उसने औरतो को बाते करते सुना। एक बोली—'राजा हाल मे मुहबोली बहन लाये ह। वह बडी ही सुन्दर स्त्री ह। आजकल उसी का किया हुआ सब कुछ होता है।" दूसरी बोली—"वह जैसी सुन्दर है, वैसी ही धर्मात्मा भी ह। जब से आइ है, तभी से उसने सदाव्रत खोल रक्खा है। जो उसके दरवाजे पर जाता ह, सादर इच्छा भर भिक्षा पाता है।" तीसरी बोली—"वह जैसी धर्मात्मा है, वसे ही सदाचारिणी

भी है।" चौथी बोली—"वह जैसी सदाचारिणी है, वैसी ही सर्वप्रिय भी है, भीतर-बाहर के सभी लोग उससे खुश हैं।" पांचवी बोली—"यह तो सब है, परन्तु अब तक यह पता न चला कि वह कौन है, और कहां की है?"

स्त्रियों की बातें सुनकर वह साधु के वेश में राजा नल की मुँहबोली बहन के महलों के द्वार पर जा पहुंचा। वहां जो उसने आवाज लगाई, तो क्षेत्र के प्रबन्धकर्ता उसे भिक्षा देने लगे। उसने भिक्षा लेने से इन्कार कर दिया और कहा—"जब क्षेत्र देने-वाली खुद आकर भिक्षा देगी, तब लूंगा, नहीं तो नहीं लूंगा।" तब लोगों ने उससे कहा—"इस समय वह दशारानी का व्रत करके पारण कर रही हैं। जब निश्चिन्त हो जायँगी, तब तुमको भिक्षा देंगी। तब तक ठहरे रहो।" वह चुपचाप बैठा रहा। पारण कर लेने के बाद वह मुट्ठी में मोती भरकर आई, परन्तु सामने अपने पति को पल्ला फैलाये देखकर वह मुस्कुराती हुई लौट गई। दोनों ने एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लिया।

रानी ने ननद को मुस्कुराते देखकर पूछा—"जिस दिन से तुम आई हो, आज तक मैंने तुमको कभी हँसते नहीं देखा। आज इस विदेशी को देखकर हँसी हो। इसका क्या कारण है?" उसने उत्तर दिया कि वह विदेशी तो तुम्हारे ही घर का है।" रानी ने पूछा—"तब वह ऐसे क्यों आये?" उसने कहा—"अभी वह मेरा पता लगाने चले आये हैं।" रानी ने राजा से कहा—"तुम्हारी मुँहबोली बहन के घर के लोग आये हैं।" राजा ने कहा—"उनसे कह दिया जाय कि अभी यहां से घर जाकर वहां से अपनी हैसियत से आयें, तब मैं बहन की बिदाई करूंगा।"

तब वह घर को वापस चला गया। उसने माता से कहा—"तुम्हारी बहू राजा नल के यहां उसकी बहन होकर रहती है। नित्य सदाव्रत देती है और नियम-धर्म से दिन बिताती है।" तब

माता ने आज्ञा दी कि तुम जाओ उसे लिवा लाओ। वह डोली-पीनस, बाजे, कहार आदि यथोचित सजधज के साथ फिर से राजा नल के नगर मे गया। राजा ने सम्बन्धी की हसियत से उसका स्वागत किया और कुछ दिन उसे मेहमानी मे रखकर विधिपूवक बहन की बिदाइ की। जब वह महल से बाहर निकलकर चलने लगी, तब महल भी उसके पीछे पीछे चलने लगे। तब रानी बोली ननदजी! तुम चली और मेरा महल भी ले चली। जरा लौटकर पीछे की ओर तो देखती जाओ। ज्यो ही उसने लौटकर देखा त्यो ही राजा का सम्पूण राजसी वभव सहसा लुप्त हो गया।

वह स्त्री तो अपने पति के साथ जाकर आनन्द से रहने लगी परन्तु राजा नल का यह हाल हो गया कि वे राजा रानी दोनो कमरी-कथरी ओढे फिरने लगे। उनके रूपकार पत्थर के हो गये और अटाले (भोजनालय) मे पत्ते खडखडाने लगे। तब राजा नल बोले— रानी! जहा राज किया वहा इस दशा मे नही रहा जाता। इसलिए यहा से भाग चलना उचित है। रानी पतिव्रता स्त्री थी। उसने राजा की आज्ञा मानना और उनकी विपत्ति मे उनका साथ देना सहष स्वीकार किया। राजा-रानी दोनो महल से निकलकर चल दिये। वे चलते चलते एक गाव के पास पहुँचे। वहा बेर के वक्षो म अच्छे अच्छे बेर लगे हुए थे। राजा-रानी दोनो भूखे थे। इसलिए वे बेरो के नीचे जाकर बेर बीनने लगे, परन्तु बेर लोहे के होते जाते थे। राजा रानी बेरो को उसी जगह फेककर आगे बढे। किसान खेत काट रहे थे। राजा ने उन लोगो से कहा कि यदि आज्ञा दो तो हम भी तुम्हारे साथ खेत काटे। उन्होने जवाब दिया— तुम लोग क्या काटोगे, दो मुटठी बाले ले लो और भूनते खाते अपने रास्ते चले जाओ।" राजा ने बाले ले ली और जब उनको भूनकर तैयार किया तब उनमे से अन्न के दानो के बजाय ककड झडने लगे। और आगे चले तो एक कहार तरबूजे बेच रहा था।

उसने एक तरबूज राजा को दिया। वह राजा के हाथ में जाते ही काठ का हो गया। और भी आगे चले तो एक जगह सुरा गाय राह चलते यात्रियों को इच्छानुसार दूध देती थी। राजा ने जाकर गाय से दूध मांगा, तो गऊ ने चांदी का पात्र भर दिया। परन्तु रानी के हाथ में पात्र जाते ही काठ हो गया और उसमें का दूध रक्त हो गया। राजा रानी गऊ के पैर पडकर आगे चले।

उधर से एक बनिया बनीजी करके चला आता था। उसने राजा नल को पहचान लिया। तब उसने राजा रानी के भोजन-भर को सेर भर आटा दिया। वे आटा लेकर एक नदी के किनारे गये। वहां रानी भोजन बनाने लगी और राजा स्नान करने लगा। उसी नदी में मछुआरे मछलियां पकडते थे। उन लोगों ने राजा को चार मछलियां भेंट कीं। रानी ने रोटियाँ सेककर और मछलियां भूनकर रक्खीं। जब राजा आये और भोजन करने बैठे तब रोटियां ईंटें हो गईं और मछलियां उछलकर नदी में चली गईं। वहां से चलकर वे अपनी मुंहबोली बहन के यहां गये। बहन ने सुना कि उसके भाई भौजाई आये हैं। उसने पूछा कि कैसे आये? औरतों ने कहा कि लटके चीथडा भूके कूकरा। ऐसे आये और कैसे आये? यह सुनकर उसे बडी लज्जा आई। उसने उन्हें एक कुम्हार के यहां ठहरा दिया। शाम को थाल सजाकर बहन खुद भावज से मिलने कुम्हार के घर गई। उसने सामने थाल रक्खा तो भावज ने कहा—"इस थाल में जो कुछ भी हो, कुम्हार के चक्के के नीचे रख दो और चली जाओ।" वह थाल का सामान चक्के के नीचे रखकर चली गई। थोडी देर में राजा ने आकर रानी से पूछा—"कहो, बहन आई थी, कुछ लाई थी?" रानी ने कहा—"आई तो थी, पर जो कुछ लाई थी, मैंने इसी चक्की के नीचे रखवा दिया है।" राजा ने जो वहाँ देखा, तो कंकड पत्थरों के सिवा और कुछ भी

नही था। राजा समझ गया कि यह सब कुदशा का कारण ह। यह सम्भव नही कि जिस बहन को मने अधकूप से निकाला सब कुछ दिया वह मेरे लिये ककड पत्थर लाये।

तब वे लोग वहा से भी चलकर अपने मित्र के घर गये। मित्र ने सुना कि उसके मित्र आये ह तो उसने पूछा— कसे आये ह? लोगो न कहा— कमरी ओढे कथरी बिछावे माग मागकर खावे। ऐसे आये ओर कसे आये? मित्र ने दुखी होकर कहा— कोइ हानि नही। जसे आये वसे अच्छे आये आखिर मित्र ह। उनको महलो मे लिवा लाओ। राजा रानी दोनो मित्र के महलो के भीतर जाकर ठहर गये। मित्र ने बडे आदर भाव से उनका स्वागत किया भोजन कराया और एक कमरे मे उनके सोने के लिए पल्ग बिछवा दिये। उस कमरे मे खूटी पर नौलखा हार टगा हुआ था और पलग की पाटी पर बिजुरिया खाडा रक्खा था। आधी रात क समय राजा सो गये थे। रानी उनके पर दबा रही थी। उसने देखा कि हार वाली खूटी के पास दीवार मे एक मोर का चित्र बना ह। वह हार को धीरे धीरे निगल रहा ह और खाडा पल्ग की पाटी मे समाता जाता ह। रानी ने राजा को जगाकर यह दृश्य दिखाया। तब राजा ने कहा— यहा से भी चुपचाप भाग चलना चाहिए नही तो सबेरे चोरी का कलक लगेगा। नब मित्र को क्या मुख दिखावेगे? निदान राजा रानी दोनो रात ही को उठकर भाग चले।

राज दम्पति चलत हुए एक अय राजा की राजधानी मे पहुचे। वहा अतिथि और भिक्षुको को सदाव्रत दिया जाता था। राजा रानी भी सदाव्रत लेने गये। उस समय सदाव्रत बद हो चुका था। वहा के अधिकारियो ने कहा कि यह लोग न जाने कहा के अभागे आये ह कि उन्हे देने के लिए कुछ भी नही बचा। फिर भी उन्हे मुटठी मुटठी चने दे दो। इस प्रकार अनादर और

कुवाच्य सहित दान लेना अस्वीकार करते हुए राजा रानी वहा के दानाध्यक्ष की निन्दा करते हुए बोले कि ऐसी कजूसी ह तो सदाव्रत देने का नाम क्यो करते ह ? इस पर दानाध्यक्ष ने कहा कि ये भिक्षुक बडे घमण्डी मालूम होते ह। भीख मागते ह और गालिया भी देते ह। इनको हवालात मे बद कर दो। इस तरह राजा-रानी दोनो एक कोठरी मे बन्द कर दिये गये। मुटठी मुट्ठी चने दोनो के खाने के लिये मिलने लगे।

जिस कोठरी मे राजा रानी कद थे, उसी के सामने से आम रास्ता था। एक मेहतरानी राजा की घुडसवार को पारकर उसी रास्ते से निकला करती थी। एक दिन वह बहुत देर से निकली। तब रानी ने उससे पूछा कि आज तुमने इतनी देर कहा लगाइ ? वह बोली कि आज राजा की घोडी ब्याइ थी। उसी की टहल मे ज्यादा देर हो गइ। रानी ने पूछा कि घोडी पहली बार ब्याइ है या दूसरी बार ?" मेहतरानी ने कहा— पहली बार।" फिर रानी ने पूछा—"बछेडा हुआ या बछेडी ?" उसने जवाब दिया—"बछेडा हुआ ह और अच्छी साइत मे हुआ है।" तब रानी ने राजा से कहा— 'एक बार मने तुम्हारी मुहबोली बहन के गण्डे का अनादर किया था। उसी दिन से अपनी दशा बदल गइ है, इसलिए आज म दशारानी का गडा लेती हू।" राजा ने कहा—"सो तो ठीक है, परतु यहा पूजा की सामग्री कहा से आयेगी ? कैसे नियम धम निबहेगा ?" रानी ने कहा—"वही दशारानी सब कुछ करेगी। म तो उन्ही का नाम लेकर गडा लेती हू। फिर जो होगा, देखा जायगा।"

तब नौ तार राजा की पाग के और एक तार अपने अञ्चल का लेकर रानी ने गडा बनाया और उसी समय से व्रत ठान लिया। थोडी देर मे राजा खुद घोडी का बछेडा देखने के लिए उसी रास्ते से निकला। राजा ने नल दमयन्ती को कोठरी मे बद देखकर पूछा कि ये लोग कौन ह और किस अपराध के कारण यहा बद

ह ? पहरेदारो ने कहा कि ये लोग भिक्षा लेन आये थे। आपको आशीर्वाद के बदले गालियाँ देते थे। इसी कारण दानाध्यक्ष ने इन लोगो को कद करा दिया था। राजा ने कहा कि यह तो इनका कोइ अपराध नही ह। इनको मनोनीत भिक्षा न मिली होगी इसी से गालिया देते होगे। इनको सन्तुष्ट करना चाहिए या कद कर देना चाहिए ! इनको अभी कोठरी से निकाल बाहर करो। राजा की आज्ञानुसार उसी समय नल दमयन्ती दाना कोठरी से बाहर निकाले गये। राजा उनके पाव मे पद्म और माथे मे चन्द्रमा का चिह्न देखकर पहचान गया कि यह राजा नल और रानी दमयन्ती ह। तब उसने विनीत भाव से क्षमा प्राथना की और उन्हे हाथी पर बिठाकर अपने महल मे ले गया।

कुछ दिनो तक उस राजा का आतिथ्य सत्कार स्वीकार करके राजा नल पूरे सजधज से अपनी राजधानी की ओर चले। पहले वह अपने मित्र के यहा गये। मित्र ने राजा नल के आने की खबर सुनकर पूछा— मित्र आये तो कसे आये ? 'लोगो ने कहा कि अबकी बार तो बडे ठाट बाट से हाथी घोडे से डका-निशान से, पालकी-पीनस से ओर फौज भी साथ लेकर आये ह। मित्र ने कहा अच्छी वात ह आने दो। मेरे तो जैसे तब थे वैसे अब ह। आखिर मित्र तो ह ! राजा रानी दोनो मित्र के महल मे गये। उन्होने सादर उनका स्वागत करके उसी स्थान मे फिर से उनको डेरा दिया, जहा वे पहले टिके थे। आधी रात के समय राजा सो रहे थे, रानी पर दबा रही थी। तब उसने देखा कि मोर का चित्र जो हार लील गया था उसे उगल रहा ह और खाट की पाटी से बाहर निकल रहा ह। रानी ने राजा को जगाकर दिखाया। राजा ने अपने मित्र को बुलाकर वह चरित्र दिखाया। तब मित्र बोला कि मने न तब तुमको चोरी लगाइ थी [illegible]। यह सब कुदशा का कारण था। आप निश्चय रखिए मेरे मन मे कोइ मल नही है।

मित्र के यहा से चलकर राजा मुहबोली बहन के यहा गये। उसने जब सुना कि राजा भया आये, तब उसने पूछा—"कैसे आये?" लोगो ने कहा—"जसे राजाओ को आना चाहिए, वैसे आये, और क्से आये।" उसने कहा—'उनको मेरे महल मे आने दो।" जब राजा नल का हाथी बहन के महल की ओर बढा तब रानी बोली—"आप बहन के घर जाइये, म तो उसी कुम्हार के घर जाकर ठहरूगी, जिसके यहा पहले टिकी थी।' राजा ने कहा—"जिसके कारण इतने दुख उठाये तुम उसी से फिर झगडा मोल लेती हो। यह तो अच्छा नही करती।" परतु रानी न मानी। वह कुम्हार के यहा ठहरी। राजा बहन के घर चले गये। शाम को ननद भावज के लिए थाल लगाकर चली। उसने भावज के सामने जाकर थाल रख दिया। तब भावज सोने चादी के गहने उतार उतार कर रखने लगी और कहने लगी—"खाओ रे! मेरे सोने रूपे के गहनो! खाओ। हम नगे भूखे क्या खायेंगे।" यह देखकर ननद बोली कि यह उपालभ और बोली ठठोली किस पर कसती हो? मुझसे तो जो कुछ हो सका सो तब लाइ थी, वही अब भी लाइ हू। विश्वास न हो तो चक्का के नीचे अब भी देख लो। सचमुच चक्का उठाकर देखा तो उसके नीचे मणि माणिको का ढेर लगा था। रानी देखकर सन्न रह गइ। वह बोली "ननद! तुम्हारा कोई दोष नही ह, यह सब मेरी कुदशा का कारण था।"

रानी ने ननद का लाया हुआ सब सामान वापस कर दिया। कुछ अपनी तरफ से भी दिया, परन्तु पूजा का न्योता न दिया। वहा से चलकर राजा सुरा गाय के पास आये, तो उसने सब सेना समेत राजा को यथेच्छ दूध पिलाया। वहा से आगे चले, तब तरबूजो वाला कहार मिला। उसने सब को अच्छे अच्छे तरबूज खिलाये। आगे चलकर राजा नदी के तट पर पहुचे तो वहा पडाव

माणिक (दिया) जलाया गया तो बत्ती ही न जली। तब पडितो ने विचार करके कहा कि यदि कोइ न्योता पानेवाला न्योतने को रह गया हो, तो स्मरण किया जाय। उसके आ जाने पर दीपक जल जायगा। रानी ने कहा कि मने तो और सभी को न्योता दिलवा दिया ह, सिफ मुहबोली बहन को न्योता नही दिया ह। पडितो ने कहा कि उसे शीघ्र बुलाइये।' राजा ने अपना द्रुतगामी रथ भेजकर मुहबोली बहन को बुला लिया। उसने कलश का माणिक प्रज्वलित किया। बडी धूम धाम से पूजा हुइ। अत मे सुहागिनो को भोजन कराकर बिदा किया गया। उसी समय राजा ने राज मे हुक्म जारी किया कि अब से मेरी प्रजा के सभी लोग दशारानी का व्रत किया करे।

—भगवती दशारानी ने जसे राजा नल के दिन फेरे, ऐसी ही वह सब के दिन फेरे।

दूसरी कथा—एक राजा थे। उनकी दो रानिया थी। जेठी रानी को कोइ सतान नही थी, कितु छोटी रानी के एक पुत्र था। राजा छोटी रानी और उसके पुत्र को बहुत प्यार करते थे। यह दखकर बडी रानी को डाह और इर्ष्या होती थी। वह सोतिया डाह के कारण राजकुमार के प्राणो की प्यासी हो गइ थी। एक दिन राजकुमार खेलता हुआ अपनी विमाता के चौके मे चला गया। विमाता ने उसके गले मे एक काला साँप डाल दिया। राजकुमार की माता दशारानी का व्रत करती थी। वह लडका दशारानी का दिया हुआ था। अस्तु दशारानी की कृपा से लडके के गले मे पडा हुआ साप आप ही सरककर भाग गया।

दूसरे दिन राजकुमार की विमाता ने उसे विष के लडडू खाने को दिये। वह लडडू लेकर ज्योही खाने लगा, त्योही दशारानी ने किसी दासी के वेश मे प्रकट होकर लडडू छीन लिये। विष देने पर भी लडका नही मरा, तब रानी को बडी चिता हुई

कि किसी-न-किसी तरह इसको मारना चाहिए। तीसरे दिन जब राजकुमार पुनः उसके आंगन में खेलने गया, तब रानी ने उसे पकड़कर गहरे कुएँ में डाल दिया। यह कुआँ उसके आंगन में था, इस कारण किसी को कुछ पता भी न चला कि राजकुमार कहां गया, क्या हुआ?

उत्तम जलाशय, शुद्ध स्वच्छ मकान तथा ऐसी ही दिव्य वस्तुओं में सदैव दशारानी का वास रहता है। विमाता ने राजकुमार को कुएँ में डाला और दशारानी ने उसे बीच ही में रोक लिया। जब दोपहर का समय हुआ और कुँवर कहीं नहीं दिखाई दिया, तब राजा-रानी को बड़ी चिंता उत्पन्न हुई। जहां-तहां लोग उसे तलाश करने लगे। इधर दशारानी को इस बात की चिंता हुई कि राजकुमार के माता-पिता उसके लिए व्याकुल हो रहे हैं। उसको उनके पास पहुंचाना चाहिए, परंतु पहुंचावें तो किस प्रकार?

राजकुमार को तलाश करनेवाले लोग हताश होकर बैठ रहे। राजा-रानी दोनों दुःखी होकर पुत्र-शोक में बैठकर रोने लगे। तब दशारानी एक भिखारिणी के वेश में कुँवर को गले से लगाये हुए राज-द्वार पर जा पहुँची। राजकुमार को एक वस्त्र में छिपाये हुए भिखारिणी ने भिक्षा के लिए सवाल किया। तब सिपाहियों ने उसे दुत्कार कर कहा कि कहाँ तो राजा का कुंवर खो गया है, और सभी लोग दुःख और चिंता में व्याकुल हो रहे हैं और ऐसे में तुझे भिक्षा की पड़ी है? चल हट जा यहां से! तब दशारानी बोली—"भाइयो! पुण्य का प्रभाव बड़ा होता है। यदि मुझे भिक्षा मिल जाय तो सम्भव है कि खोया हुआ राजकुमार मिल जाय।" यह कहकर वह देहरी के भीतर पैर रखने लगी। तब सिपाहियों ने उसे आगे बढ़ने से रोका। उसी समय दशारानी ने वस्त्र में से बालक का पैर उघार दिया। सिपाहियों ने समझा कि अभी कुँवर इसके हाथ में है, इसे जाने दो, और कुँवर को भीतर छोड़

आने दो। उधर से बाहर जाने लगेगी तब पकडकर बिठा लेगे।

दशारानी कुवर को लिये हुए भीतर चली गइ। उसने राज-कुमार को चौक मे छोड दिया और वहा से वापस होकर चल दी, परन्तु रानी ने उसे देख लिया था। उसने डाटकर कहा कि खडी रह, तू कौन ह? तूने तीन दिन से मेरे लडके को छिपाकर रख छोडा था। तूने ऐसा क्यो किया? ठहर जा, इसका जवाब तो लेती जा। दशारानी उसी क्षण ठहर गइ। उसने कहा कि रानी! म तुम्हारे पुत्र को चुरान छिपानवाली नही हू। म ही तेरी आराध्य देवी दशारानी हू। तुझे सचेत करने आइ हू कि तेरी सौत तुझसे इर्ष्या द्वेष रखती ह। वही तेरे पुत्र का घात करने की चिता मे रहती ह। तुझको उचित ह कि अपने पुत्र को कभी उसके पास न जाने दे। एक बार उसने कुवर के गले मे सप डाल दिया था, उसे मने भगाया। दूसरी बार उसने विष के लडडू उसे खाने को दिये थे, उनको मने इसके हाथ से छीना। अबकी उसने इसे कुए मे डाल दिया था, सो इस बार भी मने उसकी रक्षा की। इस समय भिखारिन बनकर तुमको चेतावनी देने आइ हू।

तब रानी भगवती के परो पर गिर पडी। उसने विनीत भाव से प्राथना की कि जसे कृपा करके आपने साक्षात दशन दिये ह वस ही अब इसी महल मे सदव रहिये। मुझसे जो सेवा पूजा बनेगी, सो करुगी। तब दशारानी ने उत्तर दिया कि म किसी घर मे नही रहती। जो श्रद्धा पूवक मेरा ध्यान स्मरण करता है, उसी के हृदय मे रहती हू। मने तुझे साक्षात दशन दिया, इसके उपलक्ष्य मे तुम सुहागिनो को न्योतकर उनको यथाविधि आदर सत्कार से भोजन कराओ और अपने नगर मे तथा राज्य मे ढिढोरा पिटवा दो कि सभी लोग मेरा गडा लिया करे और व्रत किया करे।

यह कहकर दशारानी अ तर्द्धान हो गइ। रानी ने शहर भर

की सौभाग्यवती स्त्रियो को निमन्त्रण देकर बुलाया। उबटन से लेकर शिरोभूषण शृगार तक उनकी यथाविधि सुश्रूषा करके गहने आदि देकर आचल भरे और भोजन कराकर बिदा किया। शहर और राज्य मे भी ढिढोरा पिटवा दिया कि अब सब लोग दशारानी के गडे लिया करे।

तीसरी कथा—एक साहूकार था। उसका बडा परिवार था पाच बेटे उनकी पाच बहूएँ तथा एक लडकी थी। लडकी का विवाह हो चुका था, किंतु द्विरागमन की विदा नही हुइ थी। इस कारण लडकी माता-पिता ही के घर मे थी।

एक दिन साहूकारिन दशारानी के गडे लेने लगी। उसकी बहुओ ने भी गडे लिये। उसी समय उन्होने सास से पूछा कि क्या ननदजी का भी गडा लिया जायगा ? सास ने कहा कि अवश्य तब वे बोली कि उनकी तो बिदाइ होनेवाली ह। यदि व्रत के पहले ही बिदा हो गइ तब ? सास ने कहा कि म पूजा का सब सामान साथ मे दे दूगी। वह अपन घर जाकर पूजा कर लेगी।

लडकी ने दशारानी का गडा तो ले लिया, परन्तु पूजन के पहले ही उसकी ससुराल से उसके पति आ गये। माता ने विधिपूवक लडकी की बिदाइ की और उसकी पालकी मे पूजा का सब सामान रख दिया। जब वह अपने घर पहुची तब वहा घर के आगन मे गलीचा बिछ गया। उसी पर वह जाकर बैठ गइ। पास पडोस की स्त्रिया नइ बहू को देखने जुट आइ। सब लोग उसकी सुदरता और गहने कपडे की प्रशसा करने लगी। किसी की नजर सब कुछ छोडकर उसके गले के गडे पर जा पडी। वह बोली कि बहू की मा बडी टुटकाइन ह। इतना जेवर होते हुए भी दो ताग सूत के उसके गले मे क्यो पहना दिये ह, सो समझ मे नही आता। जहा एक ने यह बात कही वहा सभी की नजर गडे पर पडी। सभी स्त्रियो ने गडे के सबध मे कुछ-न कुछ राय प्रकट की।

सध्या को सास ननद देवरानी जेठानी, घर की सभी स्त्रिया जुटकर बठी तो उसी गडे की चरचा करने लगी। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। साराश यह कि सभी ने सूत के गडे की निदा की। सुनते सुनते नइ बहू का जी ऊब गया। तब उसने गडे को तोडकर जलती हुइ बोरसी मे डाल दिया। गडे मे आग लगते ही उनके घर मे आग लग गइ। धन धा य सब जल गया। सब आदमी अपन अपने प्राण लेकर भागे। उस जले घर मे स्त्री पुरुष दोनो आदमी रह गये बाकी सब तीन तेरह हो गये।

घर का सब सामान जल चुका था, न खाने को अन्न था न पहिनने को वस्त्र। इस कारण दोनो आदमी भी गाव छोडकर चल दिये। आगे स्त्री पीछे उसका पति। दोनो चलते चलते उस गाव मे पहुचे, जहा की वह लडकी थी। उसने पति से कहा कि जब तक कोइ जीविका नही ह, तब तक तुम भाड झोककर पेट भरो। म भी किसी मजदूरी की चिता करती हू। पति भाड झोकने लगा और स्त्री एक कुएँ की जगत पर जा बठी।

उस कुएँ पर सारे गाव की स्त्रिया पानी भरने आती थी। उस लडकी की भावजे भी आइ और उसे वहा बठी देखकर बोली कि बहन! तुम तो किसी भले घर की लडकी मालूम होती हो। कैसे बेकार बठी हो? कहो किसी के यहा रहोगी तो नही? लडकी बोली कि अवश्य रहूगी, परतु न तो नीच टहल करूगी, न खराब खाना खाऊगी। बडी भावज बोली कि हमारे घर मे तुम्हारे लिए नीच काम है ही नही, जब से हमारी ननद ससुराल चली गइ है, तब से हमारे बच्चे हरान होते ह। तुम उन्ही को खिलाती रहना और हमारे घर से सीधा लेकर अपना भोजन बनाकर खाया करना उसके राजी होने पर स्त्रिया अपने घर गइ और सास से बोली कि माताजी! कुएँ की जगत पर एक अनाथ दुखिनी लडकी बठी ह, वह हमारे यहा रहने और तुम्हारे नाती खिलाने पर राजी

है। तुम्हारी आज्ञा हो तो उसे रखले। सास ने कहा कि खुशी से रख लो, परन्तु इतना कहे देती हू कि पीछे से कलह न करना। सब बहुओ ने कहा कि नही करेगी। तब सास ने आज्ञा दे दी। वे दूसरी बार पानी भरने गई और दुखिनी को अपने घर लिवा लाइ। वह अपनी भावजो के लडके बच्चे खिलाती और बना-खाकर निर्वाह करती हुइ रहने लगी। दवात फिर से दशारानी के गडे लेने का अवसर आया। सास ने कहा कि बहुओ! आओ सब बैठकर गडे लेवे। बहुओ ने पूछा कि क्या दुखिनी का गडा भी लिया जायगा ? सास ने कहा कि जब वह घर मे रहती है तब उको क्यो बाहर किया जाय, उसे भी गडा लेना चाहिए। तब बहुओ ने कहा कि इसी तरह रोकते रोकते तुमने ननदजी का गडा लिया था। आखिर पूजा न हो पाइ और उसकी बिदा हो गइ। अब दुखिनी को गडा लिवाती हो, यदि पूजा होने के पहले यह भी चली गइ तब ? सास बोली कि तब क्या हानि ह! तुम्हारी ननद ने अपने घर जाकर पूजा की होगी। दुखिनी पूजा होने तक यहा रहेगी तो अपनी पूजा मे शामिल हो जायगी, न होगा चली जायगी, जहा जायगी वहा पूजा कर लेगी।

सवसम्मति से दुखिनी ने भी दशारानी का गडा लिया। नौ दिन तक कथा कहान। होती रही। व्रत पूजन यथाविधि हुआ। दसवे दिन साहूकार की पाचो बहुओ और उसकी सास ने सिर से स्नान किया, घर मे गोबर से चौका लगाया, चौक पूरा और पूजा की तैयारी करने लगी, तब दुखिनी बोली कि भाभी! मुझे फटा पुराना कपडा मिल जाय, तो म भी स्नान कर आऊ। तब बहुओ ने सास से पूछा कि हमारे पास ननद जी की साडी रखी ह, कहो तो इसे दे दे। जब ननदजी आयेगी तब उनके लिए दूसरी साडी आ जायगी। सास ने कहा कि दे दो, मुझे क्या ? तुम्हारी ननद झगडा न करे। तुम जानो, तुम्हारा [illegible]म जाने।

अपनी पुरानी साडी लेकर दखिनी स्नान करने गइ। उसन सिर से स्नान करके साडी पहनी और गीले बाल बिखराये हुए घर आइ। यहा पूजा होना आरम्भ हो गइ थी। वह ज्यो ही पूजा के पास आकर बठी, त्योही एक भावज ने कहा कि यह दुखिनी तो साक्षात ननदजी की उनहार ह। इस पर सास ने नाराज होकर कहा कि तुम लोग बडी चचल हो। पूजा के समय भी बक बक लगा रखी ह। चुप रहो, मुझे कथा कह लेने दो। तुम्हारी बातो मे म कथा का सिलसिला भूल जाती हू। बहुएँ चुप हो गई।

दुखिनी समेत घर की सब स्त्रियो ने पारण किया। फिर सब इकटठी बठकर एक दूसरी का सिर गूथने लगी। एक ने दुखिनी से कहा कि आ म तेरा सिर गूथ दू। वह दुखिनी का सिर गूथते हुए बोली कि जसी गूथ इसके सर मे ह वसी ही गूथ हमारी ननदजी के सिर मे थी। इस पर साहूकारिन क्रुद्ध होकर बोली कि मेरी लडकी अपने ससुराल मे सुख देख रही होगी। उसकी तुम कहा इस दुखिनी से उनहार देती हो।

सास ने बहू को दुत्कार तो दिया, परन्तु उसकी बात मन मे लग गइ। उसने दुखिनी से कहा कि आज रात तुम मेरे पास लटना। रात को जब बहुएँ सो गय, तब बुढिया ने पूछा कि क्यो दुखिनी! तेरे नहर मे कोइ कभी था? उसने जवाब दिया कि ऐसे ही पाच भाइ, पाँच भौजाइ, तुम जसी मा और पिता से पिता थे। पुन बुढिया ने पूछा कि फिर क्या हुआ? वह बोली कि मने अपने नहर मे दशारानी का गडा लिया था। उसका पूजन नही हो पाया, विदा ससुराल को हो गइ। वहा स्त्रियो ने मेरे गले मे गण्डा देखकर हँसी उडानी शुरू की। तब मैंने उस गण्डे को आग मे डाल दिया। उसी गडे के साथ साथ सारा घर जलकर भस्म हो गया। सब लोग तीन-तेरह हो गये। हम दोनो जने भागकर यहा चले आये। माता ने पूछा कि

तेरा पति कहा है ? दुखिनी ने जवाब दिया कि वह तो भडभूजो के यहा भाड झोकते ह ।

साहूकारिन अपनी लडकी को पहचानकर उसके गले से लग कर रोने लगी। उसके रोने का शब्द सुनकर पाचो लडके उसके पास आये। तब बुटिया ने कहा कि यह दुखिनी कोइ और नही तुम्हारी सगी बहन ह। तुम्हारा बहनोइ भूजे के यहा भाड झोकता ह। दशारानी के कोप से इसकी ऐसी गति हुइ ह।

सबेरा होते ही पाचो भाइ भूजे के घर गये और उसे जसे-तसे पकडकर घर लाये। उन्होने उसका क्षौर कराकर स्नान कराया और उत्तम वस्त्र पहनाए। तब तो वह सु दर साहूकार दिखाई देने लगा। कुछ दिनो ससुराल मे रहकर जब वह अपने घर गया तब उसने देखा कि घर के सब लोग पहले की तरह सुख से ह इसके बाद वह ससुराल आया। तब उसके सास ससुर ने दुखिनी को उसके साथ विदा कर दिया।

दुखिनी अपनी दशा पर विचार करती हुइ जब ससुराल जा रही थी तब माग मे उसे एक नदी मिली। उस नदी मे स्नान करके अप्सराए दशारानी का गडा ले रही थी। उनका एक गडा अधिक था। उनमे से एक बोली कि यदि इस डोली मे कोइ उच्च वण की स्त्री हो तो उसी को गडा दे देना चाहिए। उन्होने डोली के पास जाकर पता लगाया और दुखिनी को गण्डा दे दिया।

जब दुखिनी घर पहुची तब उसकी सास सूप सजाये ननद कलश लिये और देवरानी जेठानी अन्य मागलिक वस्तुए लिये उसका स्वागत करने लगी। नेग दस्तूर हो चुकने के बाद दुखिनी ने आसन पर बठते ही कहा कि तुम लोगो ने तब की बार दशारानी के गडे की नि दा की थी इसलिए सब का बिछोह हुआ और घर का धन धा य स्वाहा हो गया। राम-राम करके ठिकाने लगे ह। अब की कोइ मेरे गडे की चरचा न करना। जब मेरा व्रत हो तब श्रद्धापूवक पूजा करना। सब ने खुशी से उसकी बात मान

ली। नौ दिन कथा कहानिया हुइ। दसवे दिन विधि से गडे की पूजा हुइ। सात सुहागिने योती गइ। महावर आदि से उनका शृगार कराकर आचल भरे गये। इस प्रकार खुशी से दशारानी का पूजन हुआ। दशारानी ने जसे दखिनी की दशा फेरी, वसी ही वह सब पर कृपा करे।

चौथी कथा – एक राजा था। उसकी रानी बडी ही सकुमार थी। वह फूलो की सेज पर सोया करती थी। एक दिन फूलो की सेज मे एक कच्ची कली बिछ गइ। उस रात्रि को रानी को नीद नही आइ। राजा ने पूछा—"प्रिये! आज तुमको नीद क्यो नही आती? क्या कोइ पीडा ह।" तब रानी बोली कि आज सेज पर एक कच्ची कली रह गइ ह, वही मेरे शरीर मे गडती ह। इसी से नींद नही आती। उसी समय ज्योति स्वरूप दीपक हँसा। यह देखकर राजा ने हाथ जोडकर ज्योति स्वरूप से प्राथना की—"स्वामी! आप क्यो हँसे? कृपाकर इसका भेद बताइये।" ज्योति-स्वरूप ने पुन हँसकर उत्तर दिया कि अभी तो रानी कच्ची कली के कारण उसकती पुसकती है, कल सबेरा होते ही जब सिर पर बोझा ढोवेगी तब क्या होगा? राजा ने पूछा कि क्या मेरे देखते, मेरे जीते जी ऐसा होना सभव ह? तब दीपक ने दढतापूवक उत्तर दिया— 'हा सभव ह, तुम्हारे जीते जी सभव ह।" ज्योति स्वरूप की ऐसी भविष्यवाणी सुनकर राजा ने अपने मन मे कहा कि देववाणी असत्य नहीं हो सकती। रानी को अवश्य बोझा ढोना पडेगा, परन्तु यह हो सकता ह कि यदि म इसको जीते जी समुद्र मे बहा दू, तो सभव ह कि यह बोझा ढोने से बच जाय, क्योंकि जब यह समुद्र मे डूब जायगी, तब बोझा कौन ढोवेगा।

राजा ने उसी समय रानी से कहा—"चलो, हम तुमको नहर भेज आए। कुछ दिन तुम वहीं रहना।" रानी ने कहा कि मेरे नहर मे तो कोइ भी नहीं ह, वहा किसके यहा रहूगी? राजा ने जवाब दिया कि तुमको मालूम नही ह, तुम्हारे गोत्रज-

सम्बधी बहुत अच्छी दशा मे ह। म उन्ही के पास तुमको भेज देता ह। रानी नहर जाने की तयार हो गइ। उसने राजा की आज्ञानुसार बहुमूल्य आभूषणो से अपने को सवारकर तयार किया। तब राजा ने उसे सदूक मे बिठाकर नदी मे बहवा दिया।

वह नदी समुद्र मे ऐसी जगह जाकर मिलती थी, जहा उस राजा के बहनोइ का राज्य था। समुद्र से मोती की सीपे निकाले जाने का राजा का ठेका था। रानी का सदूक बहता हुआ जब उस जगह पहुचा तब राजा ने मल्लाहो को हुक्म देकर सदूक को पानी से बाहर निकलवा लिया और उसे महल मे भेजकर हुक्म दिया कि इस सदूक को अदर मेरे सोने के कमरे मे रक्खा जाय। जब तक म न आऊ इसे कोइ छुए भी नही। राजा के शयनागार मे सदूक पहुचते ही रानी ने सुना कि राजा ने उसे समुद्र मे पाया ह तब वह फौरन उसे देखने के लिए चली गइ। उस समय पहरेदार वहा से हट गया था। रानी ने कौतुकवश सदक खोला। उसने देखा कि उसके भीतर एक सर्वाङ्ग सुदरी सोलह श्रृङ्गार, बारहो आभूषण किये बठी है। रानी ने अपने जी मे सोचा कि अगर राजा इसको इस दशा मे देखेगा तो इसी का हो रहेगा, मुझको त्याग देगा। इसलिए इस स्त्री की हुलिया बिगाडकर सदूक मे बद कर देना चाहिए। तदनुसार उसने रानी के जेवर कपडे सब उतरवाकर उसे मले कुचैले, फटे पुराने कपडे पहना दिये और सदूक बद करवा दिया।

राजा जब बाहर से महल मे आया, तब उसने रानी को अपने सोने के कमरे मे बुलाया और पूछा कि क्यो रानी तुमने देखा, उसमे क्या ह? रानी ने जवाब दिया कि मने कुछ नही देखा-सुना कि क्या ह, क्या नही ह। राजा ने रानी के सामने सदूक खुलवाया तो उसमे फटे पुराने कपडे पहने एक भिखारिणी सी देख पडी। रानी ने कहा कि यह तो कोइ भिखारिन भिखारिणी नीच जाति-सी दिखाइ देती ह। इसको कारखाने मे भिजवा दिया जाय। वहा

लकडी ढोती रहेगी और खाना पाती रहेगी। राजा ने रानी के कहे अनुसार उसे कारखाने मे भेज दिया।

एक दिन रानी की सहेलिया नदी मे स्नान करके दशारानी के गण्डे ले रही थी। एक गण्डा उनका अधिक था। वे इसी विचार मे थी कि यह किसको दिया जाय ? दवयोग से उसी समय लकडीवाली रानी वहा जा पहुची। उन्होने उससे कहा कि बहन ! यदि तुम कोइ नीच वण न हो तो हमारा गडा ले लो। रानी ने कहा कि मुझे गडा लेने से इन्कार नही ह परन्तु मुझे तो खाने भर को मिलता नही। इसकी पूजा कसे करूगी। वे बोली कि तुम इसकी चिन्ता मत करो, हम रोज इसी जगह स्नान करने आया करेगी। नौ दिन तक कथा कहा करेगी, तुम भी नित्य कथा सुन जाया करो। दसवे दिन पूजा होगी, तब तक दशारानी चाहेगी तो अवश्य तुम्हारी दशा बदल जायगी। रानी ने श्रद्धापूवक दशारानी का ध्यान करके गण्डा ले लिया।

उसी दिन रानी के पति को यह चिन्ता उत्पन्न हुइ कि रानी को सन्दूक मे रखकर बहा तो दिया था, परन्तु उसका कोइ समाचार नही मिला कि क्या हुइ ? किसी तरह उसकी टोह लगानी चाहिए। अस्तु, राजा एक नौका पर सवार होकर नदी द्वारा यात्रा करता हुआ अपने बहनोइ के यहा पहुचा। सन्ध्या को ब्यालू करके जब वह लेटने लगा, तब बहन से बोला कि मेरे हाथ परो मे बहुत दद है। किसी दबाने वाले को बुला दो। तब उस रानी ने लकडी ढोनेवाली भिखारिणी को बुलाकर हुक्म दिया कि आज की रात तू मेरे भाइ के पर दबा दे। वह बडे सकोच मे पड गइ। अपने जी मे अनेक सकल्प विकल्प करती थी कि पर पुरुष का शरीर छुऊ तो कैसे छुऊँ। रानी बराबर अपनी बात पर दबाव दे रही थी। इसलिए लाचार होकर उसे स्वीकार करना पडा।

राजा के पर दबाते दबाते रानी को उसके पाव का पद्म देख पडा। रानी चुपचाप रोने लगी और उसके आसू राजा के पैरो

पर टपक पड़े। तब उसने पूछा कि क्यों री दासी, तू क्यों रोती है? तू अपना भेद मुझे बता। मेरे कारण तुझे किसी प्रकार की हानि न पहुंचेगी।" तब वह बोली कि जैसा पद्म आपके पैर में है, वैसा ही मेरे पति के पैर में था। पहले दिनों की याद आ जाने से मुझे रुलाई आ गई है।

तब राजा बोला कि मैं समझ गया। अब तुम पैर मत दबाओ, आराम से सोओ। जो तुम्हारे भाग्य में लिखा था, वह तुमको भोगना ही पड़ा। मैंने उसके टालने के लिए जो उपाय रचा था, उसका उल्टा नतीजा हुआ। तुमको मेरे जीते-जी लकड़ी ढोनी ही पड़ी। राजा ने अपनी धोती उतारकर रानी को दे दी। रानी एक कोने में पड़कर सो गयी।

सबेरा हुआ। बहुत दिन चढ़ आया। परन्तु अतिथि राजा सोकर नहीं उठा, न पैर दाबनेवाली दासी बाहर निकली। तब उसकी बहन को चिंता हुई। थोड़ी देर बाद दासी बाहर निकल आई और कारखाने में काम करने चली गई। रानी ने अपने भाई के पास जाकर उसे जगाया। तब वह बोला कि मेरे माथे में पीड़ा है, मैं अभी नहीं उठूँगा। इस समय मेरा जी बहुत व्याकुल हो रहा है, मुझे अधिक मत सताओ।

रानी ने पूछा कि आखिर बात क्या है? कुछ कहो भी? राजा ने कहा कि बड़े लज्जा की बात है। मैंने तुम्हारी भावज को जान-बूझ कर तुम्हारे पास इसलिए भेजा था कि यहां इसे आराम से रक्खा जायगा, परन्तु तुम उससे मजदूरों के साथ लकड़ी ढुलवाती हो। क्या मैंने इसीलिए उसे तुम्हारे पास भेजा था? तब बहन बहुत लाचार होकर बोली कि मुझे अब तक यह खबर नहीं थी कि वह कौन है। मैं समझती थी कि नदी में बहती-बहाती न जाने कौन कहां की चली आई है। अब जाना सो माना। यह कहकर उसने दासियों को भेजा कि उस लकड़ीवाली को चुपचाप मेरे पास बुला लाओ।

जब दासी रानी आइ तो उकी भावज ने आदरपूवक उसके पर पकडे और विनीत भाव से माफी मागी।

कुछ दिनो बहन के पास रहने के पश्चात राजा अपनी रानी को साथ लेकर अपनी राजधानी लौट आया। रानी ने अपने महल मे पहुचकर सुहागिने न्योती, धूम धाम से दशारानी के गडे की पूजा की और गाव भर मे ढिढोरा फेर दिया कि आज से अमीर-गरीब सब दशारानी के गडे लिया करे और श्रद्धापूवक पूजा किया करे। जिस किसी के पास पूजन पारण की सामग्री की कमी हो, वह राजा के कोठार से ले जाया करे।

जिस प्रकार दशारानी ने सुकुमारी रानी के दिन फेरे, वैसे ही वह अपने सब भक्तो के दिन फरे। श्रोता वक्ता सभी का कल्याण हो।

पांचवी कथा—कोइ सास बहू थी। सास ने एक दिन सबेरे बहू से कहा कि जाओ, आग लाकर भोजन बनाओ, बडी भूख लगी ह। बहू हाथ मे कडी लेकर आग लेने गाव मे गइ। उस दिन गाव भर मे घर घर दशारानी की पूजा थी, इस कारण किसी ने उसको आग नही दी। वह लौट आयी। सध्या समय वह पडोसिनो के पास गइ और उनसे बोली कि मेरी सास तो गण्डा लेती नही ह, परन्तु अबकी बार जब गण्डे पडे, तब मुझको बताना और पूजन की विधि भी बता देना तो म भी गण्डा लूगी। इसके बाद जब गण्डे पडे, तब बहू ने सास की चोरी से दशारानी का गडा लिया। नौ दिन तक उसने किसी न किसी बहाने पडोसिनो के पास जा-जाकर कथा कहानिया सुनी। दसवे दिन उसे चिन्ता हुइ कि अब पूजा कसे करूगी। तब वह मन ही मन दशारामी का ध्यान करके मनाने लगी कि यदि बुढिया आज कही बाहर चली जाय, तो म शातिपूवक पूजा कर लू। दशारानी की कृपा से उसी दिन बुढिया को खेतो पर जाने की सूझी। उसने बहू से कहा कि तुम भोजन बनाकर तयार करना, तबतक म खत-

खलिहान तक होकर वापिस आती हू। यदि मुझे अधिक देर हो, तो मुझे खेत पर ही खाना दे जाना। बहू तो यही चाहती थी। उसने सास की आज्ञा को शिरोधार्य करके कहा कि आप जाइये और घर के काम काज से निश्चिन्त रहिये।

ज्योही बुढिया ने पीठ फेरी त्योही बहू ने पूजा की तदबीर लगाइ। उसने सिर से स्नान करके विधिवत दशारानीकी पूजा की। तदनन्तर वह पूजा की सामग्री मिट्टी के गोले मे रखकर उसे भेटकर सिरानि के लिए ले ही जानेवाली थी कि बुढिया आ गइ। उस वक्त बहूको जब और कुछ उपाय न सूझ पडा तब उसने जल्दी से उस गोले को छाछ की मटकी मे छिपा दिया। उसने सोचा कि जब बुढिया फिर कही बाहर जायगी, तब गोला मट्ठे मे से निकाल कर सिरा आऊँगी।

बुढिया ने आते ही बहू की खबर ली। उसने पूछा कि तू मेरे खाने को क्यो नही लाइ? अब तक क्या करती रही? उसने जवाब दिया कि आज मने सिर से नहाया ह इसी कारण रसोइ करने मे देर हो गइ ह। म थाल परोसती हू भोजन कीजिए। बुढिया का गुस्सा कुछ शान्त हुआ। वह पर धोकर चौके मे बठी ही थी कि उसका लडका भी आ गया। वह भी माता के साथ भोजन करने बठ गया। बुढिया भोजन करके उठना ही चाहती थी कि लडका बोला— 'मुझे तो छाछ चाहिए।' बुढिया ने बहू से कहा—"उठ, छाछ दे दे।" उसने कहा—"म तो रसोइ के भीतर हू, आपही क्यो न दे दे।" बुढिया भोजन करके उठी। हाथ धोकर मट्ठा लेने गइ, परन्तु ज्योही उसने छाछ की मटकी उठाइ कि उसे उसमे कुछ खडखडाता हुआ सुनाइ दिया। उसने हाथ डालकर देखा तो एक बडा सोने का गोला था।

सास ने आश्चय मे होकर बहू से पूछा—"अरी, इसमे यह क्या ह? इसे तू कहा से लाइ है? यहा क्यो छिपा रक्खा ह? म समझ गइ, इसी से तू छाछ देने नही आइ थी। इसका भेद बता,

नही तो अभी तरी खबर लेती हू।" वह बोली—"म क्या जानू मेरी दशारानी जाने। मने तुम्हारी चोरी से दशारानी का गण्डा लिया था और तुम्हारी चोरी से पूजा की थी। तुम आ गए, इसलिए म गण्डा सिराने न जा सकी। तब मने उसे छाछ की मटकी मे छिपा रक्खा था। दशारानी ने उसे सोने का कर दिया, तो इसके लिए म क्या करूँ।"

बुढिया ने बहू को गले से लगा लिया और कहा कि अब म भी तेरे साथ गण्डा लिया करूगी और विधिवत व्रत और पूजन किया करूगी। हे दशारानी! जसे तुमने मुझको दिया वसे ही अपने सब भक्तो को दिया करो।

छठी कथा—एक घर मेकोइ देवरानी जेठानी थी। उनकेकोइ सन्तति नही होती थी। वे मेहनत मजदूरी करके पेट पालती थी, नेम धम, व्रत पूजन कुछ भी नही करती थी। एक दिन दोनो सबेरे सबेरे गाव मे आग लेने गइ, परन्तु किसी ने उनको आग नही दी। उस दिन गाव भर म दशारानी का पूजन था। दोनो खाली हाथ घर आकर एक दूसरे से कहने लगी कि आज तो गाव भर मे दशारानी का पूजन ह, कोइ आग देती ही नही। क्या किया जाय? आखिर जेठानी बोली कि कुछ हानि नही, आज अपने लोगो का भी व्रत सही। शाम को जब आग मिलेगी, तब रसोइ बना खा लेगी।

सन्ध्या के समय जेठानी अपनी एक पडोसिन के घर आग लेने गइ। पडोसिन ने उसे स्वागतपूवक बिठाया। जेठानी ने पूछा कि दशारानी का पूजन करने से क्या होता ह। उसने जवाब दिया कि जिस बात की इच्छा करके गण्डे लिये जाय, वह इच्छापूण होती ह। तब जेठानी बोली कि बहन! अब की बार जब गण्डे पडे, तब म भी गण्डा लूगी और पूजन करूगी।

जेठानी आग लेकर पडोसिन के घर से बाहर निकली ही थी कि गाएँ चरकर आती हुइ दिखाइ दी। ग्वाला पीछे पीछे आ रहा था।

उसके कधे पर एक बछवा था और एक गाय उसको चाटती हुइ उसके पीछे पीछे आ रही थी। पडोसिन ने पूछा— भया ! तुम्हारी गाय पहली ही ब्यान ह या दोहला-तेहला ?' उसने कहा कि पहली ही ब्यान ह। पुन स्त्री ने पूछा कि बछवा ब्याइ ह या बछिया ? ग्वाला ने जवाब दिया कि बछवा ह। तब उसने जेठानी से कहा कि लो,अब घर जाकर दशारानी का गण्डा ले लो। नौ दिन तक कथा-कहानिया सुनना, दसवे दिन सिर से स्नान करके पूजन करना। दशारानी चाहेगी तो दस दिन के भीतर ही तुम्हारी मनोकामना पूण हो जायगी। उसने अपने घर जाकर देवरानी को यह बात बताइ। निदान दोनो ने दशारानी के गण्डे लिये और दशारानी का ध्यान स्मरण करके यह मनौती मनाइ कि यदि हमारे स तान पदा होगी तो हम सुहागिने न्योतकर दुरया करायेगी।

दशारानी के गण्डे की पूजा होने के पहले ही देवरानी जेठानी दोनो गभवती हुइ। नौ महीने नौ दिन के बाद दोनो के गभ से दो सु दर बालक ज मे। बालको के ज म सस्कार होने के बाद ही देवरानी ने कहा कि लडके होने पर जो सहागिने न्योतन की मनौती की थी उनको न्योत देना चाहिए। जेठानी ने कहा कि अभी ऐसी क्या जल्दी पडी ह, जब लडको की पसनी (अन्न प्राशन सस्कार) होगी, तब न्योत देगी। जब लडको की पसनी हुइ, तब भी देवरानी ने दुरयो की याद दिलायी परन्तु जेठानी ने फिर भी बात टाल दी और कहा कि जब लडको का मूडन होगा, तब सुहागिने न्योती जायगी। होते होते कुछ दिनो बाद लडको का मुडन हुआ, तब भी देवरानी ने जेठानी से कहा पर तु फिर भी जेठानी ने कहा कि जब लडके वडे होगे उनकी सगाई होगी, उसी दिन सुहागिन न्योती जायगी।

लडके बडे हो गये। उनका सगाइ सम्ब ध भी पक्का हो गया। फिर भी जेठानी ने सुहागिने नही न्योती। उसने कहा कि जिस दिन लडको की भावरे पडेगी उसी दिन सुहागिने न्योतकर

उत्सव के साथ पूजा की जायगी। तब देवरानी बोली कि बहन ! तुम चाहे जब करना, पर म तो मण्‌ाग्‌ादन के दिन ही सुहागिने न्योतूगी। देवरानी ने जसा कहा था, वसा ही किया। उसने मडवा के दिन सुहागिने ्योत दी, परन्तु जेठानी ने कुछ भी परवाह न की। मडपाच्छादन के बाद मातका पूजन करके और बारात सजा कर दोनो दूल्हे ब्याहने चले।

जिस लडके की माता ने मडवा के दिन सुहागिने ्योती थी उसका विवाह बडी धूम धाम से सकुशल पूर्ण हो गया, परतु जिसकी माता ने सुहागिने नही ्योती थी उसको ठीक भावरो के समय दशारानी बीच मडप से हरकर ले गइ। दूल्हा को सहसा गायब होते देख वर-क्या दोनो पक्षो मे हाहाकार मच गया। उसकी बारात खाली हाथ घर वापस आइ। परतु लडकी की माता बडे सकट मे पड गइ कि अब यह अधब्याही लडकी किसके सर मढी जायगी? पास पडोस की चतुर स्त्रियो ने लडकी की माता को समझाया और ब्याह का जो सीधा सामान बचा हुआ था, उसे उसी लडकी के हवाले कर दिया। लडकी मगते भिखारी लोगो को सदाव्रत देने लगी। एक दिन एक साधु तीथयात्रा करता हुआ उसी गाव की ओर आया। गाव से बहुत दूर घने जगल मे एक बडा पीपल का पेड था। लोग उस पेड को पारस पीपल कहते थे। उसी पेड मे दशारानी का निवास था। साधु चलता चलता शाम को उसी पेड के नीचे ठहर गया। वहा अधेरा हो गया। दिया पर बत्ती पडी कि झाडदार ने आकर उसी पेड के पास मदान मे झाडू लगाई, सक्का (भिश्ती) ने आकर जमीन छिडकी और माली ने आकर फूल बिखेर दिये। तब अनेक देवता अनेक प्रकार की पोशाके पहने हुए वहा आ आकर यथा स्थान बैठने लगे। सब से पीछे स्वग से राजा इद्र का सिहासन उतरा। उसी के साथ अनेक अप्सराएँ साज ग्मान ग्मे ा नहा आइ और इद्र के सिहासन के सामने नाचने गाने लगी।

उसी समय दशारानी अधब्याहे लडके को गोद मे लिए हुए पीपल के पेड से उतरी। इन्द्र के साथ-साथ स्वर्ग से एक सुरा गऊ भी आइ थी। उसने दो कटोरा दूध दिया। लडके ने अध ब्याही के भाग का एक कटोरा अलग रख दिया और एक कटोरा दूध पी लिया। जब तक नाच तमाशा होना रहा, दशारानी लडके को गोद मे लिए बठी रही। सबेरा होते ही देवताओ का दरबार भग हुआ। साधु भी वहा से चलकर गाव मे चला आया।

साधु गाँव में भिक्षा मागता उसी अधब्याही लकडी के घर आया। लडकी ने उसके लिए भोजन बनाकर तयार किया। बाबाजी भोजन करने बठे। तब लडकी ने तीन पत्तल परोसकर एक को अधब्याहे वर के नाम से अलग खसका दिया, एक पत्तल बाबाजी के सामने परोसा और एक पत्तल उसने अपने सामने रक्खा। बाबाजी ने अपने आप कहा— 'वाह! जो बात वहा देखने मे आइ थी वही बात यहा भी देखने मे आइ।" लडकी ने पूछा—' क्या कहा बाबाजी?" बाबा ने बात टालते हुए कहा— 'हम बैरागी लोग ऐसी अनेक बाते कहा करते ह। तुमको इन बातो से क्या प्रयोजन ह? तुम तो भोजन करो और भगवान का भजन करो।' लडकी हठ कर गइ। उसने कहा कि जब तक आप इसका भेद नहीं बतलायेगे, म भोजन नही करूगी। फिर भी बाबा चुप रहे। तब लडकी बोली कि आप साधु ह मै सती हू। आप या तो उस वचन का भेद बताइये, जो आपने कहा ह या मेरा शाप लीजिये। तब बाबा ने रात का सारा हाल उसे बता दिया। अन्त मे उसने बाबा के साथ उस पीपल के पास जाना निश्चय किया।

बाबा आगे आगे चले, लडकी उसके पीछे हो ली। बाबा लडकी को पारस पीपल के पास छोडकर चले गये। जब सन्ध्या हुइ, तब नित्य की तरह झाडूदार ने झाडू लगाइ, सक्का ने जमीन छिडकी, माली ने फूल बिखराये। राजा इन्द्र आये और

परियो का नाच गान होने लगा। उसी समय दशारानी पीपल पर से उतरकर दरबार मे बठी। लडके ने सुरभ गाय से दूध लिया और उसने अध-ब्याही का कटोरा अलग ग्यक्ग ग ग ग अपना ग्ग मुह से लगाया, त्योही लडकी कटोरा हाथ मे लेकर वर के सामने आ गइ। वह बोली कि अपना भाग लेने के लिये म उपस्थित हू और जो आज्ञा दी जाये सो सेवा करूँ। तब वह बोला कि म इस तरह तुमको नही मिल सकता। म दशारानी की सेवा म रहता हू। अभी मुझे दरबार मे जाकर उन्ही की गोद मे बठना होगा। यदि तुम मुझको चाहती हो, तो दशारानी को प्रसन्न करक उनसे मुझको माग लो। तब म तुम्हारा हो सकता हू।

लडका दशारानी की गोद मे जा बठा। लडकी अप्सराओ के साथ नाचने लगी। जब सबेरा हुआ तब दशारानी ने कहा कि यह नइ नाचनेवाली लडकी बहुत नाची ह। उसे बुलाकर उन्होने कहा कि म तुमसे बहुत प्रसन्न हू। माग ले जो कुछ मागना हो। लडकी ने दशारानी से वचन ले लिया कि जो मागू सो पाऊँ। तब उसने दोडकर अपने पति को पकड लिया और कहा कि मुझे यही चाहिए। दशारानी ने कहा—'तूने मागा तो बहुत, परन्तु म वचन दे चुकी हू, इस कारण तेरा वर तुझे दे देती हू।''

राजा इन्द्र ने पूछा कि भगवती! यह सब क्या भेद ह, जरा मुझे भी बताइये? तब दशारानी बोली कि यह लडका मेरे ही वरदान से पदा हुआ था। इसकी माता ने मनौती मानी थी कि जब लडका पदा होगा तब सुहागिनो को न्योता दूगी परन्तु उसने आज तक अपना वचन परा नही किया। इसी कारण म अपने दिये हुए बालक को विवाह मण्डप से हर लाइ थी। यह इसकी अध ब्याही स्त्री है, परन्तु पतिव्रता ह। इसी कारण यह देव समाज म पहुचकर मुझसे अपना पति छीने लिये जाती ह। दशारानी के ऐसे वचन सुनकर इन्द्र समेत सब देवताओ ने वर कन्या के ऊपर फूल बरसाए।

तब तक साधु बाबा भी वहा आ गये। साध बाबा उसके पीछे दूल्हा और उसके पीछे लडकी इस प्रकार तीनो गाव की ओर चले। जब वे लोग गाव के समीप पहुचे, तब लोगो ने लडकी के पिता को खबर दी कि तम्हारी लडकी अपने दल्हा के साथ आ रही ह। जिस दिन से लडकी चली गइ थी प्रथम तो उसी घडी से वह लोकापवाद के मारे घर से बाहर नही निकलते थे अब जो और भी नइ बात सुनने म आइ तो उसने किवाड ब द कर लिये। उसने समझा लडकी बाबा के साथ साथ आ रही होगी उसी सम्बन्ध मे लोग मेरा उपहास कर रहे ह। किन्तु जब गाव के गण्य मा य और प्रतिष्ठित लोगो ने भी उससे वही बात कही, तब वह लजाता शरमाता घर से बाहर आया और जब उसने दरवाजे पर सचमुच लडकी के साथ दामाद को खडा देखा तब उसकी प्रसन्नता का पार न रहा। उसने इसी खुशी मे बहुत दान पुण्य किया, बधाइ बजवाइ और फिर से विवाह की तयारी की परन्तु लडकी ने अपनी माता से कहा कि इस तरह ब्याह पूरा नही पडेगा। वहा सुहागिनो को योता देकर जब बारात यहा आवे तब विवाह के नेग किये जायँ। लडकी के बाप ने लडके के घर खबर भेजी। वहा सुहागिनो को न्योतकर बारात चली। बडी धूमधाम से विवाह हुआ। वर बहू दोनो अपने घर गये। तब फिर से लडके की माता ने सुहागिने न्योती।

उसी समय से विवाह मे भावरो के दिन वर के घर सुहा गिने न्योतने की चाल चली है। दशारानी ने जसी सती की दशा फेरी वैसी वह कथा के श्रोता-वक्ता सभी का कल्याण करे।

सातवीं कथा—एक बुढिया ब्राह्मणी थी। वह बहुत गरीब थी। उसका एक लडका भी था। एक दिन वह लडके से बोली कि बेटा! कुछ ऐसा उद्यम करो, जिससे चार पैसे की आय हो और अपना निर्वाह हो। अब मेरे तो हाथ पर नही चलते। तब लडका गाववालो के गोरू चराने लगा। एक दिन लडका

पशुओ को पानी पिलाने नदी के घाट पर गया। वहा स्त्रियां स्नान करके दशारानी के गडे ले रही थी। उनका एक गडा अधिक था। उनमें से एक ने कहा कि पूछो तो यह लडका किसका है? यदि किसी उच्च वण का हो, तो इसी को गडा दे दे। एक स्त्री ने लडके से पूछा कि तुम्हारे घर मे कौन ह? लडके ने जवाब दिया कि मेरी एक बुढिया माता ह। फिर स्त्री ने पूछा कि तुम कौन वण हो? वह बोला कि हू तो ब्राह्मण, पर कोइ काम न मिलने के कारण गोरू चराता हू।

स्त्रियो ने लडके को एक गण्डा देकर कहा कि तुम इसे घर ले जाकर अपनी माता को देना और कहना कि इसका पूजन और व्रत करे। हम लोग तुमको सीधा और पूजा की सामग्री भी देते ह सो भी ले जाकर माता को दे देना। लडके ने गण्डा ले लिया। फिर सब स्त्रियो ने उसे सीधा दिया। लडका उस सामान की गठरी बाधकर घर आया। उसने दरवाजे से ही माता को पुकारकर कहा कि गठरी उतार ले, बोझ से मरा जाता हू। माता दौडी आइ। गठरी का सीधा सामान देखकर वह बहुत खुश हुइ। उसने लडके से पूछा कि यह सब कहा से लाये हो? लडके ने बुढिया से सब हाल कहकर दशारानी का गण्डा भी उसे दे दिया।

बुढिया ने गण्डे को प्रेम पूवक लेकर माथे से लगाया। उसी दिन से वह व्रत करने लगी। नौ दिन कथा कहानी कहती रही। दसवे दिन उसने गण्डे के पूजन की तयारी की। वह देहरी के बाहर लीप रही थी कि उसी समय एक अति वद्ध दरिद्र स्त्री द्वार पर आकर बोली कि क्या करती हो बहन? उसने जवाब दिया कि आज मेरे घर दशारानी का पूजन ह, इसलिए लीप रही हू। तब दशारानी ने कहा कि मुझे बहुत प्यास लगी ह, थोडा पानी पिला दो। तब बुढिया ने कहा कि म तो मिट्टी के बरतन से पानी पीती हू, लोटा लुटिया मेरे कुछ ह ही नही,

तुमको पानी दूं तो काहे से दूं? एक कटोरी ही मेरे घर में है, वह भी न जाने कहां पड़ी होगी। जरा तुम ठहरो, कटोरी उठा लाऊं, तब तुमको पानी पिलाऊँ।

बुढ़िया हाथ धोकर कटोरी लेने अन्दर गई। तब तक मैली-कुचैली बुढ़िया, जो स्वयं दशारानी थी, उसकी घिरौंची पर एक सोने का घड़ा रखकर अन्तर्द्धान हो गई। बुढ़िया कटोरी लेकर घिरौंची के पास गई। वहां सोने का घड़ा रखा देखकर वह बहुत घबराई और अपने मन में सोचने लगी कि यह रांड कहां की बला उठाकर रख गई है। मुझे चोरी लगेगी, बुढ़ापे में इज्जत जायगी। वह इसी चिंता में बुढ़िया की खोज में बाहर निकली। तब तक उसका लड़का आ गया। उसने पूछा कि किसे खोजती हो माँ? वह बोली कि एक बुढ़िया न जाने कहां से आई और यहां सोने का घड़ा रखकर भाग गई है। लड़के ने कहा कि वही तो दशारानी थीं। उन्होंने यह घड़ा तुमको दे दिया है। अब की जो फिर कभी आवे तो उनका अच्छी तरह स्वागत करना और सब प्रकार से उनकी आज्ञा-पालन करना। तुम जब नहाने जाओ तो नदी के घाट पर जो चीजें तुमको मिलें, उनको दशारानी का दिया हुआ समझकर अंगीकार करना, किसी से पूछ-ताछ न करना कि यह चीज किसकी है, यहां कहां से आई है?

बुढ़िया नदी में नहाकर खड़ी हुई, तो सामने सोने का गेड़आ भरा-भराया रक्खा दिखाई दिया और उत्तम वस्त्र एक किनारे रक्खे थे। बुढ़िया ने किसी से पूछ-ताछ किये बिना ही उन वस्त्रों को पहन लिया। गेंड़आ हाथ में लेकर वह घर चलने को तैयार हुई। तब चार कहार डोली लिये आ पहुंचे और बुढ़िया से बोले कि यह डोली तुम्हारे लिये आई है, इसी में बैठकर घर चलो। बुढ़िया डोली में बैठकर घर आई, तो देखती क्या है कि जहां उसकी टूटी-फूटी झोंपड़ी थी, वहां कंचन के महल खड़े हैं। बुढ़िया ने महल के भीतर जाकर श्रद्धा और भक्तिपूर्वक दशारानी के गंडे की पूजा

की और अन्त में हाथ जोड़कर यह वरदान मांगा कि महारानी! जैसे तुमने मुझको यह सम्पत्ति दी है, वैसे ही मेरे लड़के का विवाह हो जाय, तब यह सब शोभा दे। कुछ दिनों बाद लड़के का विवाह हो गया और बहुत ही सुन्दर सुशीला बहू घर में आ गई। तब बुढ़िया ने दशारानी से दूसरा वर मांगा कि जैसे मेरे बहू-बेटा हैं, वैसे ही नाती पाऊँ। कुछ दिनों बाद बुढ़िया के लड़के को भी लड़का हो गया।

एक दिन बुढ़िया ने बहू को समझाया कि मेरी यह सब सम्पत्ति दशारानी की दी हुई है। उन्हीं की कृपा से तुम भी इस घर में आई हो। यदि मैं मर जाऊँ और कभी एक मैली-कुचैली बुढ़िया तुम्हारे घर आए तो उसका विनयपूर्वक स्वागत करना। यदि उसकी नाक बहती हो तो उसे आंचल के छोर से पोंछना, घिन नहीं करना। प्रार्थना करना कि हे माता! यह सब आपका ही दिया हुआ है। जब कभी दशारानी के गंडें पड़ें, तब उनको अवश्य लेना और श्रद्धापूर्वक उनकी पूजा करना। जब कभी तुम पर कोई संकट पड़े, तब सुहागनें न्योतना। दशारानी की कृपा से तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी होंगी।

कुछ दिनों बाद बुढ़िया मर गई। तब दशारानी ने सोचा कि अब चलकर देखना चाहिए कि वह सास के वचन को कहां तक पालन करती है? अतः वह एक वृद्धा भिखारिणी का वेश धारण कर उसके घर आई। उन्हें देखते ही बहू उठकर खड़ी हो गई, पांव पड़े, दंडवत की और बालक को उसकी गोद में डाल दिया। उसकी ऐसी श्रद्धा-भक्ति देखकर दशारानी ने आशीर्वाद दिया कि तेरी ऐसी धर्म-बुद्धि है, तो भगवान सदैव तेरा भला करेगा, भंडार भरपूर रहेगा, कभी किसी बात की चिंता तुझे न सतायेगी, जो इच्छा करेगी सो फल पायेगी।

दशारानी ने जैसी कृपा-दृष्टि बुढ़िया ब्राह्मणी पर की, वैसी

ही अपने सब भक्तो पर करे। कथा के श्रोता वक्ता सभी का कल्याण हो।

आठवीं कथा—एक राजा के दो रानिया थी। राज की अति प्यारी रानी का नाम था लक्ष्मी देवी। इसी कारण राजा की दूसरी रानी पटरानी होने पर भी कुलक्ष्मी कहलाती थी। एक दिन लक्ष्मी रानी ने मान किया। वह काट की पाटी ले मलिन वस्त्र पहन कोप भवन मे जा लेटी। राजा ने उससे पूछा कि तुम चाहती क्या हो ? वह बोली कि कुलक्ष्मी रानी को देश निकाला दे दो।

राजा की प्यारी न होते हुए भी कुलक्ष्मी रानी पटरानी थी। लोक लज्जा के कारण उसे सहसा निकाल सकने से लाचार होकर राजा ने उन्हे उनके नैहर भेजना निश्चय किया। उन्होंने रानी को एक पीनस मे सवार कराया और आप घोडे पर सवार होकर साथ चले। एक सघन वन मे पहुचकर राजा ने पीनस रखवा दी और कहारो को वहा से हटा दिया। "मके वा" व" घाडा दौडाते हुए अपने महल म जा पहुच। कुलक्ष्मी रानी को बाट देखते सारी रात बीत गइ। सबेरा हो आया। रानी को प्यास लगी हुइ थी, इसलिए वह डोली के बाहर निकली। उसने देखा कि डोली एक पीपल के वक्ष के नीचे रक्खी ह दूर तक कही आबादी का नामोनिशान नही ह । रानी ने आस पास पानी खोजा, परन्तु कही कोइ जलाशय दिखाइ नही दिया।

रानी ने एक सारस की जोडी को एक तरफ जाते देखा। वह उसी के पीछे हो गई। चलते-चलते वह कुछ देर के बाद एक नदी के तट पर पहुच गइ । रानीने उसी नदी म शौचादि से निवृत्त होकर स्नान किया और जल पिया। जिस घाट पर रानी ने स्नान किया, उसी घाट पर कुछ स्त्रिया स्नानकर रही थी। स्नान करके उन्होंने दशारानी के गडे लिये। उनके पास एक गडा अधिक था। एक ने रानी से गडा लेने के लिए कहा।

रानी गडा लेकर वहा से चली आइ और अपने डोले मे आकर बठ गइ। थोडी देर मे दशारानी एक बुढिया का वेश धारण कर आइ और रानी से बोली कि बेटी! यहा बठी क्या कर रही ह? रानी ने पूछा कि पहले तुम यह बताओ कि तुम कौन हो? बुढिया ने कहा कि म तो तेरी मोसी हू। तब रानी उनके गले से लिपटकर रोने लगी। उसने अपनी विपत्ति की कहानी आद्योपात बुढिया को कह सनाइ और अत मे यह कहा कि अब मुझे केवल तुम्हारा आश्रय और भरोसा है।

दशारानी की कृपा से उसी जगह माया का शहर बस गया। रानी के भाइ भौजाइ आदि सारा नैहर आप ही वहा प्रगट हो गया। रानी ने अपने परिवार मे मिलकर नौ दिन तक दशारानी के माहात्म्य की कथा कहानिया कहीं। दसवे दिन गण्डे की पूजा होती थी। उसी दिन सबेरे दशारानी ने कहा कि तुम आज नदी मे स्नान करने जाओगी, वहा तुमको जो स्वण कलश मिले, उनको ले लेना और जो डोली तुमको लेने के लिये जाय, उसमे नि सकोच सवार हो जाना। किसी प्रकार सकल्प विकल्प मे पडकर यह मत पूछना कि डोली किसकी ह?

रानी नदी मे स्नान करने गइ। वह स्नान करके जल से बाहर निकली, तो किनारे दो सोने के कलश रक्खे दिखाई दिये। उन्हीं के पास सुदर रेशमी वस्त्र सँवारे हुए रक्खे थे। रानी ने वस्त्र बदलकर घडे भरे, और ज्यो ही अपने स्थान की ओर चलना चाहा त्यो ही एक डोला सामने से आता दिखाइ दिया। रानी समझ गइ कि हो-न हो इसी डोली के बारे मे मौसी ने मुझे सूचना दी थी। वह फौरन डोली मे सवार होकर अपने घर गई। वहा माया के परिवार की सब स्त्रियो-समेत रानी ने दशारानी के गण्डे की पूजा की, सुहागिनो को भोजन कराये, तब पारायण किया। तदनतर रानी अपने नैहर के परिवार मे आनदपूवक हिल मिलकर रहने लगी।

कुछ दिनो बाद सहसा राजा को रानी का स्मरण हुआ। उसके ध्यान मे आया कि कुलक्ष्मी रानी को जिस दिन से म जगल मे छोड आया हू, उसी दिन से आज तक उसका कोइ समाचार नही मिला, चलकर देखना तो चाहिए कि उसकी क्या गति हुइ है। जब वह रानी को खोजने के लिए चलने लगा, तब मन्त्रियो ने समझाया कि अब रानी का आप से मिलना नही हो सकता। राजा ने किसी की बात पर ध्यान नही दिया। वह चलता-चलता उस स्थान पर पहुचा जहा वह रानी का डोला रख आया था। परन्तु उसे यह देखकर बडा आश्चय हुआ कि जहा सघन वन था, वहा सुदर नगर बसा हुआ है। राजा के प्रश्न करने पर नगर के लोगो ने कहा कि यह कुलक्ष्मी रानी का नगर है। तब तो राजा और भी आश्चय मे डूब गया। वह बार-बार यही विचार करता था कि यह जगह तो वही ह, जहा म अपनी रानी को छोड गया था। क्या उसी के नाम से यह नगर बसा हुआ ह।

राजा ने महलो के पास जाकर इत्तला कराइ कि अमुक राजधानी का राजा मिलने आया है। रानी ने राजा को पहचानकर उत्तर दिया कि म ऐसे दगाबाज राजा से नही मिलना चाहती। परन्तु उसकी मौसी ने समझाया कि पति परमेश्वर के बराबर होता है। उससे विमुख होकर कभी पीठ न देनी चाहिए। तुमको यही उचित ह कि उनका स्वागत करो, यथाशक्ति सत्कार करो और विनय पूवक मिलो। रानी ने राजा को महल के भीतर बुलवाया और वही डेरे पर ठहराया। दोपहर को राजा भोजन करने गये। उनके साथ एक नाइ था। वह भी राजा के समीप ही खाने को बैठा। रानी राजा तथा उस नाइ को परोसने लगी।

पहली बार ज्योही रानी ने नाइ के सामने पत्तल रक्खी, त्योही उसने रायते का एक छीटा रानी के पर पर डाल दिया। रानी ने उसकी इस क्रिया को नही जाना। दूसरी बार रानी

परोसने आइ तब दूसरी पोशाक पहनकर आइ। राजा मन में सोचने लगा कि यहा तो एक क्या, कइ रानिया ह। सभी एक-सी हैं। इनमे यदि मेरी रानी हो, तो म उसे पहचान नही सकता।

डेरे पर आकर राजा ने नाइ से कहा कि यहा तो कइ रानिया ह। यह कसे मालूम हो कि अपनी रानी कौन ह ? नाइ बोला कि रानी तो एक ही ह, वह पोशाके बदल-बदल कर परोसने आइ, इससे आपको भ्रम हुआ ह। राजा ने पूछा कि तूने कसे जाना कि रानी एक ही है। वह बोला कि मने पहले ही रानी के पैर पर रायते का छीटा डाल दिया था। जब दूसरी बार वह परोसने आइ, तब भी उसके पर पर वह छीटा पडा था और जब तीसरी बार आइ तब भी छीटा बदस्तूर देखा।

इसी बीच रानी ने राजा को अपने महल मे बुलाया । वहा सेज सजी हुइ थी। उसी पर राजा को बिठाकर उसने पान दिये। राजा लेट गया, रानी पर दबाने लगी । तब राजा ने कहा कि रानी ! बहुत दिन हो गए, अब राजधानी को चलो। रानी न जवाब दिया कि म नही जाती। उस दिन की याद कीजिए। मने ऐसा क्या अपराध किया था। जिसके कारण आपने मुझे बनवास दिया ? आपने जिस सौत की बात मानकर मेरा अनादर किया था, अब उसी को लिए हुए बठे रहिए। आप तो मेरा सवनाश कर चुके । यह तो सब मेरी मौसी की बदौलत है कि म जीती बच गई। इस पर राजा ने रानी को बहुत समझाया और अपने किये पर पाश्चात्ताप करते हुए माफी मागी। तब रानी बोली कि म केवल एक शत पर आपके साथ चल सकती हू। आप मेरी मौसी से यह वरदान मागिए कि यह शहर और वह बाग बगीचे आपकी राजधानी के समीप पहुच जायँ जिससे जब मेरा जी चाहे आपके महल मे रहू और जब जी चाहे, तब मौसी के दिए हुए महल मे चली आऊँ। मेरी मौसी बडी

दयावान और भोली भाली ह। सम्भव ह कि वह आपकी बात को न टाले। राजा ने रानी की मौसी (दशारानी) के पास जाकर निवेदन किया। उसी समय दोनो शहर पास पास हो गये, मानो एक दूसरे के एक भाग ह। राजा ने दशारानी की कृपा का प्रभाव जानकर शहर भर मे ढिंढोरा पिटवा दिया कि अब से सभी लोग दशारानी की पूजा किया करे।

भगवती दशारानी ने कुलक्ष्मी रानी पर जसी कृपा की वसी वह आपत्ति मे पडी हुइ स्त्री मात्र पर दया करके उसे ठिकाने लगावे।

नवी कथा—एक वक्ष पर दो पक्षी (नर और मादा) रहते थे। मादा पक्षी के बच्चे नही होते थे। जब वह चार चिडियो मे मिलकर बैठती तब प्राय वे उसको बध्या कहकर उससे घृणा करती थी। इससे चिडिया अपने चित्त मे अत्यत दु:खी रहती थी। वह चिडियो के समाज से बहुत कम मिलती जुलती थी। एक दिन वह अपनी स्थिति पर विचार करती हुइ अकेली एक नदी मे पानी पीने गइ। वहा स्त्रिया दशारानी के गडे ले रही थी। उनका एक गडा अधिक था। उन्होने आपस मे कहा कि यहा कोइ स्त्री या मनुष्य तो ह नही जिसको यह गडा दे देते, न हो इस चिडिया के गले मे गडा बाध दो। यह नित्य इसी जगह आकर कथा सुन लिया करेगी। इसको पूजन की विधि बतला दी जायगी, तो पूजन के दिन यह पूजन भी कर लेगी। तदनुसार उन्होने चिडिया के गले मे गडा बाधकर उसे समझा दिया कि नौ दिन तक बराबर त इसी जगह आकर कथा सुन लिया कर। दसवे दिन इक्कीस गेहू लाकर एक गेहू दशारानी के नाम का नदी मे डाल देना। बाकी बीस गेहू तुम खुद चुन लेना। चिडिया ने नौ दिन तक प्रेम पूवक कथा कहानी सुनी। दसवे दिन स्त्रियो की बताइ विधि के अनुसार गडा पानी मे डालकर पारण किया।

कुछ दिनो के बाद उस चिडिया के बहुत से बच्चे पदा हुए।

अन्य चिडियो को बडा आश्चय हुआ और वे बोली कि इसके तो बच्चे होते ही नही थे, यह कसे हुए। वह बोली कि जब मेरे बच्चे नही थे, तब तो तुम लोग मुझको बध्या कहकर दुत्कारती थी, अब जो दशारानी ने मुझको दिये, तो तुम कोसती हो। चिडियो ने उससे पूछा तो उसने गडा लेने का हाल क्रमश कह सुनाया और सबको पजा की विधि भी बतला दी। तब जगल की सब चिडिया दशारानी का व्रत करने लगी।

दसवे दिन गडे की पूजा के बाद पहले दिन ही की कथा कही जाती है।

६४. आर्य समाज का जन्म और उत्सव

स्थापना दिवस—चत्र सुदी पचमी दिन शनिवार (१० अप्रैल, १८७५ इ०) को स्वामी दयानन्द ने सवप्रथम बम्बई में आय-समाज की स्थापना की थी, इसलिए उक्त दिवस की स्मृति के लिए स्थापना-दिवस मनाया जाता है। इस दिन भली भाति घर-बार साफ करके स्नानादि के बाद प्रत्येक आय स्वच्छ स्वदेशी वस्त्र धारण करे और वेद मन्त्रो से हवन करने के पश्चात सुभीते के अनुसार समाज मन्दिर मे सभा करे। फिर सरस्वती देवी की महिमा के सम्बन्ध मे वेद मन्त्रो का पाठ करे और तत्पश्चात आय-समाज की उपयोगिता और उसका पव इतिहास बताकर उसका प्रचार करना चाहिए।

ऋषि निर्वाणोत्सव—दीपावली के दिन विक्रमी सम्वत् १९४० मे स्वामी दयानन्द का देहान्त हुआ था। अत उस दिन उनके विचारो के प्रचार के लिए घरो की सफाइ आदि करके प्रत्येक आय नर नारी को हवन करना चाहिए और सायकाल के समय समाज-मन्दिर मे एक होकर श्रीमद्दयानन्द निर्वाण के विषय पर भाषण करके उनके जीवन की महत्ता लोगो को बतानी चाहिए।